मध्यभारत के अजीम मसीहा

हज़रत मोहसिने मिल्लत

मुरत्तिबः—जानशीने मोहसिने मिल्लत पीरे तरीकत हज़रत

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी सा.

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व चेयरमेन
अल जामेअतुल इस्लाह मोहसिने मिल्लत युनिवर्सिटी
रायपुर (छ.ग.)

पहला एडीशन 1983 तादाद 2000, दूसरा एडीशन 1985 तादाद 3000, तीसरा एडीशन 2016 तादाद 5000

शाय करर्दा : मोहसिने मिल्लत एकेडमी
मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छ.ग.)

www.mohsinemillat.com
Email- m_a_farooqui 786@ yahoo. com
M.No- 09425231208-07712535283

नाम .....सफा

(1) मदीने से छत्तीसगढ़ तक 3
(2) छत्तीसगढ़ में इस्लाम.....12
(3) मंकबत 25
(4) मंकबत 26
(5) इब्तेदाइय्या 27
(6) हज़रत मोहसिने मिल्लत मध्य भारत का अज़ीम मसीहा 36
(7) साढ़े चार लाख मुसलमानों का इर्तेदाद 40
(8) वलिए कामिल आरिफ बिल्लाह 66
(9) मोहसिने मिल्लत की मिल्ली कयादत और सिदासी बसीरत 71
(10) मोहसिने मिल्लत की खिदमात 78
(11) शाने विलायत 80
(12) औलिया ए केराम के दर्जात 86
(13) औलिया ए केराम के मिशन 96
(14) करामात का फलसफा 101
(15) उर्स एक चैलेंच एक इन्कलाब..... 105
(16) उर्स बातिल परस्तों के लिए एक चैलेंज....106.
(17) आग और खून की तारीख..... 107
(18) बर्बादी की दास्तांन..... 108
(19) उर्से पाक हदीस में..... 112.
(20) फूल चढ़ाना..... 120
(21) खत्म ख्वाजगान..... 125

मदीना से छत्तीसगढ़

खज़ाना कौन सा , किसने , हेरा से बांटा था ।
ज़मीन के चप्पा–चप्पा ने ले लिये दस्ते गदा बनकर।।

पैगम्बरे ईस्लाम हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम) के द्वारा लाए गए कांतिकारी इतिहास को देखकर प्रोफेसर फिल्म हिट्टी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ,हिस्टरी आफ अरब, में लिखते हैं

After the death of prophet slerik arabic seems to have been converted as if magic in to a nursery of herose the like of whome both in numbur and qality is hard to find any where

(p,k,hette-history of arabs 1979 p,no,42)

पैगम्बरे ईस्लाम की वफात के बाद ऐसा मालूम होता था जैसे अरब की बंजर ज़मीन जादू के ज़रीये हिरो की नर्सरी में बदल गई हो। ऐसे गर्वशाली व्यक्ति जिन का विकल्प असंख्य व्यक्ति में कहीं भी पाना असंभव है।

इतिहास का साधारण विद्यार्थी भी इससे पूरी तरह सहमत है कि खुदा के आख्री पैगम्बर रसूले पाक (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) का मधुर और कांतिकारी संदेश अचानक एक नये इतिहास का जन्मदाता बन गया। आप के मानने वाले प्रेम, मोहब्बत एकता और समानता का संदेश लेकर अरब से चले तो हृदय को सुगंधित करने सुबह की पवित्र पवन की तरह जिधर से गुज़रे धरती महकने लगी। आत्मा सुगंधित हो उठी। मानवता मुस्कुरा पड़ी मनुष्य का सिर गर्व सउपर उठने लगा और उसे लगने लगा कि वो संसार में सबसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। ईस्लाम द्वारा उसे मालूम

हुआ कि सारा संसार उसके लिए रचा गया है किंतु वो केवल संसार के रचयिता के लिए है। यह महान संदेश लेकर वो सारे संसार में फैल गये। देखते ही देखते एक तरफ शाम, इराक़,ईरान, अफगानिस्तान, सिंध और चीन से गुज़र कर वो पूर्वी साइबेरिया तक पहुंच गए तो दूसरी तरफ मिश्र और अफ्रीका से भी आगे स्पेन और फ्रांस भी उनके कोमल चरणों से गर्वांचित हो उठा।

कहीं व्यापारी के रूप में तो कहीं मुजाहिदे ईस्लाम बनकर वो पहुंचे। लोग उनके रहन सहन,उनकी सच्चाई, उनकी ईमानदारी और उनके खुलूसो मोहब्बत को देखते और उन पर श्रध्दा के फूल अर्पित करने लगते। वो जहां गए वहीं हृदय सम्राट बनकर छा गए। जहां पहुंचे पूरा क्षेत्र उनके पवित्र चरित्र के प्रकाश में से प्रकाशित होने लगा। जिस जगह उतरे शहर का शहर उनकी ईमानदारी और उनकी सच्चाई से महकने लगा। उनकी महानता और श्रेष्टा से जहां संसार के विभिन्न भागों में ईस्लाम की आकाश गंगा मुस्कुराई वहीं भारत की धरती का सीना भी जगमगाने लगा।

भारत में इस्लाम:—कहा जाता है कि भारत में सबसे पहले 93 हि, (711 ई,) में मोहम्मद बिन कासिम के ज़रिये, ईस्लाम उस समय आया जब उन्होंने राजा दाहिर के अत्याचारों से लोगों को मुक्ति दिलाने और उन मुस्लिम औरतोंको लुटेरों से छुटकारा दिलाने जिन्हें सिंध के लुटेरों ने लूट लिया था। भारत में प्रवेश किया था। जबकि इतिहास का कहना है कि उन से भी पहले ही पूर्णिमा का चांद को लजवान्त करने वाले इस्लामी प्रकाश से यहां की धरती प्रकाशित हो चुकी थी। बल्कि इतिहास तो यहां तक बताता है कि संदान, थाना भड़ौच में तो हिजरत के पंद्रहवें साल मेंही ईस्लाम

पहुंच चुका था। सय्यदना फारूके़ आज़म के दौरे हुकूमत में बहरैन के गवर्नर उस्मान बिन अबिल आस सक़फी ने अपने भाई हकम बिन अबिल आस को थाना और भड़ौच भेजा। जिससे दौरे फारूक़ी ही में इस्लाम के मधुर प्रकाश से भारत का सौभाग्य जगमगा उठा।

एक रेवायत से तो यह भी पता चलता है कि भारत के राजाओं ने खुदा के आखरी पैगंबर रसूले पाक सल्ललाहो तआला अलैहि वसल्लम के पवित्र संदेश से प्रभावित हो कर उनकी बारगाह में उपहार भी भेजा था। मशहूर सहाबिए रसूल हज़रत अबू सईद खुदरी फरमाते हैं कि –हिंदुस्तान के राजा ने रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में जंजबील (एक खुश्बूदार चीज़) का एक घड़ा भेजा/ आपने सहाबए केराम को उस का एक –एक टुकड़ा दिया और मुझे भी उसका एक टुकड़ा खिलाया। (अलमुस्तदरक लिल हाकिम) अल्फाज़ यह हैं।

اھدیٰ ملک الھند الی رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم جرۃ فیھا زنجیل فاطمعہ اصحابہ قطعۃ قطعۃ و اطعمنی منھا قطعۃ (المستدرک۔امام ابوعبداللہ الحاکم عن ابی سعید خدری)

(तफसील के लिये देखे हिन्दुस्तान में अरबीहुकूमत सफा 25 फतहुल बुलदान सफा 42 तारिख़े इब्ने खुलदून जिल्द 2 सफा 124)

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की आमद के तअल्लुक से मशहूर मुसन्निफ हज़रत मौलाना यासीन अख्तर मिस्बाही अपनी मशहूर किताब' सादे आज़म' में लिखते हैं कि हज़रत राफे और हजरत रेफाआ रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा जो अस्हाबे बदर (इस्लाम की पहली जंग में शामिल होने वाले) में से हैं वो सब से पहले हिन्दुस्तान तशरीफ लाए। मौलाना यासीन अख्तर मिस्बाही ने हज़रत अबू मोहम्मद वैलसौरी के हवाले से लिखा है कि वो कहते हैं कि मुझे बाज़ सेकाह (कुछ महान व्यक्तियों)ने खबर दी कि काली कट में कदीम मस्जिद की तरह

ईमारत के सामने मस्जिद पर एक तख्ती आवेजां (लटकी हुई) थी जिस पर लिखा था।

ان بناء ذالک للعبد سنۃ ثنتین وعشرین من الھجرۃِ

इस मस्जिद की तामीर 22 हिजरी में हुई। रावी (बताने वाले) ने कहा है कि मैंने उसको पढ़ा है जिस में तारीख ; बवैद ; (22) नविश्ता (लिखी) थी। रावी ने मजीद कहा कि यह भी बयान किया जाता है कि हज़रत राफे और रेफाआ रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा अस्हाबे बदर की कब्रें भी इस मस्जिद में है। (अल अदिल्लतिल कवाते)

इस वाकेआ से पता चलता है कि भारत से मुसलमानों का कितना क़रीबी रिश्ता है और वो इस देश से कैसा अटूट संबंध रखतें हैं। मशहूर सहाबी हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो तो हमेशा अपने दिल में यहां आने की तमन्ना रखते थे जैसा कि हदीस की मशहूर किताब मुस्नदे अहमद और नसई ने बाबा गज़वतुल हिन्द में आप की यह रिवायत दर्ज

عن ابی ھریرہ قال وعدنا رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم غزوۃ الھند فان ادرکتھا انفق فیھا نفسی ومالی فان اقتل کنت افضل الشھداء وان ارجع فانا ابوھریرۃ المحرر

(بحوالہ مسند احمد وسنن نسائی۔باب غزوۃ الھند)

हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो ने गज़व ए हिन्द का वादा फरमाया अगर मैं उसमें शरीक हो सका तो अपनी जान वो माल कुर्बान करूंगा अगर मैं उसमें काम आ गया तो बेहतरीन शहीद हो जाऊं। और अगर वापिस लौटा तो नारे जहन्नम से आजाद होजाऊं।

इसी लीए भारत में सहाब ए केराम के बाद एक बड़ी तादाद में ताबेईने केराम (जिन्होंने सहाब ए केराम का फैज़ हासिल किया) तशरीफ लाए जिन्होंने इस सरज़मीन को इस्लाम का पूर्णिमा के चांद को लजवांत करने वाला पवित्र

संदेश पूरे क्षेत्र में फैल गया। हृदय को नया जीवन देने वाला अमृत संदेश से हज़ारों व्यक्तियों ने नया जीवन पाया और उसके क्रांतिकारी शिक्षा ने एक नया संसार रचा।

इस सिलसिले में चार मर्कज़ काबिले ज़िक्र हैं जिन्होंने एक नया इतिहास बनाया।

पहला मर्कज़ :—श्रीलंका जिसे इतिहास में सरंदीप के नाम से भी जाना जाता है उन लोगों को जब रसूले पाक के बारे में खबर मिली तो उन्होंने मालूमात के लिए लोगों को भेजा, वो जब वहां पहुंचे तो सय्यदना फारूक़े आज़म का दौरे खिलाफत था। उनका दबदबा पूरे ईराक़, ईरान, शाम, अफ्रीक़ा और चीन तक छाया हुआ था जब यह लोग वहां पहुंचे तो यह देख कर हैरत में पड़ गये कि ऐसा अमीरूल मोमेनीन जिस के नाम से चीन, रूस और ईरान के बादशाह कांप रहे हों वो ऐसा सादा जिन्दगी गुज़ार रहा है कि एक गरीब प्रजा और राजा में फर्क करना मुश्किल हो गया जिस से वो बड़े प्रभावित हुए।आते वक्त रास्ते में ब्लूचिस्तान के पास जब वो मरे तो उस का हिन्दू नौकर जो उनके साथ था वो जब अपने देश श्रीलंका पहुंचा और लोगों को उसने वहां के हालात बताए तो लोग चकित रह गए। मुसलमानों की सादगी, उनकी मोहब्बत , उनका तफसीलात आज भी देखी जा सकती है।

दूसरा मर्कज़ :— जज़ीर ए मालदीप जिसे लक्षद्वीप भी कहते है। अरब वाले उसे जज़ीरतुल महल के नाम से भी पुकारते हैं। सुलेमान मोहम्मद तुगलक (1325 ई .ता, 1351 ई.) के ज़माने में यह जज़ीरा पूरा मुसलमान था। जहां एक बंगाली खातून सुल्तान खदीजा हुकमरान थी।

कहा जाता है कि लक्षदीप में एक बहुत बड़ी बला समुंद्र से देव की शकल में आती थी जो भेंट के रूप में एक

खूबसूरत कुंवारी लड़की ले जाती थी लेकिन मुराको के एक अरब शेख अबूल बरकात बरबरी मगरबी जो इत्तिफाक़ से वहां आ गए थे उनकी दुआओं की बरकत से मुल्क वालों को छुटकारा मिला। जिससे राजा समेत सारे लोग मुसलमान हो गए। इब्ने बतूला के मुताबिक़ राजा ने इस्लाम कुबूल करने के बाद वहां मस्जिद बनवाया जिसके मेहराब पर लिखा था। सुल्तान अहमद शनू राजा अबुल बरकात मगरबी के हाथ मुसलमान हुआ।

तीसरा मर्कज़:—कारो मंडल का इलाका है जो मद्रास के पास है। जिसे अरब वाले मोअब्बर कहते हैं। जहां अरब ताजिरों और बुजुर्गों के ज़रिए इस्लाम पुंहचा। ऊंच नीच, छुआ छूत और दूसरों की दास्ता में जकड़ी क़ौम ने जब उसका एकता ,समानता पर आधारित प्यार भरा संदेश सुना तो उनका सीना भी पूरे ईमान से जगमगा उठा।

चौथा मर्कज़:—माला बार जिसे केरल कहा जाता है अरबी ज्योग्राफिया लिखने वालों ने गुजरात से आगे और कोलम तक ही इलाका बताया है वहां भी इस्लाम अपनी सच्चाई और ईमानदारी की बुनियाद पर पहुंचा।

मालाबार में इस्लाम का अमृत भरा संदेश शेख शरफ बिन मालिक, उनके भाई मालिक बिन दीनार और भतीजे मालिक बिन हबीब के ज़रिये उस वक्त पहुंचा जब वो एक जमात के साथ हज़रते आदम अलैहिस्सलाम के क़दम की ज़ियारत के लिए श्रीलंका जा रहे थे। कुछ लोगों का कहना है कि यह हस्तियां सहाबि ए रसूल थीं। जब वो करंगा नूर पहुंचे तो वहां के राजा ने उन्हें बुलावा भेजा। उनके जरिए इस्लाम का प्रेम भरा संदेश सुनकर उसके हृदय में श्रद्धा के कमल मुस्कुराने लगे। इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर न

केवल उसने इस्लाम स्वीकार किया बल्कि जब यह बुजुर्ग वापस लौटे तो वो भी उनके साथ अरब चला गया और वहां उसका इन्तेक़ाल हो गया। शायद यह भारत का पहला भाग्यशाली राजा था जो अरब की पवित्र धरती पर दफन हुआ। आखिरी समय उसने अपने उत्तराधिकारियों के नाम एक पत्र भी लिखा। जिसे लेकर शेख शरफ बिन मालिक दोबारा वहां पहुंचे तो उसके उत्तराधिकारियों ने हर्ष उल्लास से उनका स्वागत किया। मालिक बिन हबीब की कोशिशों से क्वालम, मराई ,मंगलोर कंजर कोट वगैरा में इस्लाम बड़ी तेज़ी से फैला। मोपला कौम भी उन्हीं की कोशिशों से मुसलमान हुई।

इस सिलसिले में तोहफतुल मुजाहेदीन सफा 12 ता 26 .मुसलमान हिन्दुस्तान सफा 148. 149...हिन्दुस्तान में सात इस्लाम में इसकी तफसील देखी जा सकती है।

उधर ही के एक राजा चेरा मन पीरू मल भी इस्लाम स्वीकार कर राज पाट छोड़ हज को चला गया। कहते हैं कि वो भी वहीं जाकर इन्तक़ाल कर गया।

केरला के लोगो ने भी इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर उसे स्वीकार किया और कलाड़ी के महाराजा भी उसकी सुगंध से महेक उठे।

उत्तरी भारत में राजा जयपाल ने जब गज़नी पर विजय प्राप्त करने के लिए दुर्रे खैबर से लड़ाई की तो गज़नी के बादशाह सुबुगतगीन (366 ता 387 ही.) ने न केवल मुक़ाबला किया बल्कि जयपाल को मजबूरन उससे सुलह भी करनी पड़ी। मगर लाहौर पहुंचकर वो सुलह से मुकर गया। हालांकि उसके दरबारियों ने उसे काफी समझाया मगर उसके बावजूद न सिर्फ उसने सुलह की खिलाफ वर्जी की बल्कि बादशाह के आदमियों को गिरफ्तार कर के क़ैदखाना भेजवा दिया। अपने आदमियो को छुड़ाने के लिए सुबुकतगीन

को दूसरी बार उस पर हमला करना पड़ा जिस में सुबुकतगीन ने विजय प्राप्त कर के न सिर्फ अपने आदमियों को छुड़ाया बल्कि एक वादा खिलाफ राजा को हटाकर उसके ही संबंधी को गद्दी पर बैठा कर गजनी वापिस चला गया। यह पहला मौका था। जब मुसलमानों ने भारत पर हमला किया। वरना इससे पहले वो सिंध तक ही सीमित थे।

सनाम में पीर नबा नबवी का मज़ार है। हज़रत शरीफ जन्दनी जो सुबुकतगीन से पहले के बुजुर्ग हैं। पीर नबा नबवी को उनका खलीफा बताया जाता है। उससे पता चलता है कि बादशाह गज़नी के आने से पहले वहां इस्लाम पहुंच चुका था।

कुछ लोग अंग्रेज़ो द्वारा लिखा या लिखवाया गया झूठा इतिहास पढ़कर यह समझते हैं कि इस्लाम तलवार से फैला और भारतीयों ने दौलत के लोभी बनकर और अपनी आत्मा का खून करके इस्लाम स्वीकार किया। मगर इन राजाओं और महाराजाओं का इस्लाम स्वीकार करना बता रहा है कि वो इस्लाम ही है जिसकी पवित्रता, समानता पर आधारित प्यार भरा संदेश ही था जिसने तड़पती हुई मानवता, सिसकती हुई आदमियत, मरती हुई इंसानियत को नया जीवन देकर संसार में उसे सबसे ऊंची पदवी दी। यही कारण है कि लोगों ने कभी भी डर कर नहीं बल्कि उसे समझकर स्वीकार किया। यहां के बुद्धिंजीवियों ने इसकी समानता भरी शिक्षा देखी। इसके महान सिद्धांतों पर विचार किया। इसके पवित्र संदेश को पढ़ा। साथ ही साथ औलियाए केराम के जीवन चरित्र संदेश को देखा। जिनकी बोलचाल, रहन–सहन में इस्लाम को चलता फिरता जीवित रूप से देखा, समझा और परखा। जिससे उनकी आत्मा झूमने लगी। उनके हृदय में उसकी महानता का चिराग जलने लगा। उनके

दिमाग उसकी सुगंध से महकने लगे और वो स्वयं इस्लाम पर अर्पित होने के लिए व्याकुल हो उठे। जिस इस्लाम ने अपनी मधुरवाणी से तुर्किस्तान में, तातार में और मंगोलिया के मार्ग से चीन में प्रवेश किया। अपने कल्याणकारी कार्यो से कश्मीर से गुजर कर तिब्बत में आसन जमाया, अपने प्रेम भरे संदेश से बंगाल और असम तक बर्बाद होते हुए समाज को नया जीवन प्रदान किया। ऐसा गौरव शाली और शक्तिशाली धर्म को क्या जोर, ज़बरदस्ती, भय, लालच और डर से लोग स्वीकार करेगें। ? राजपूत कौम जो अपनी मान मर्यादा के लिए अपनी पत्नियों को आग के हवाले कर दें। क्षत्रीय कौम जो अपनी गर्व के लिए हर तरह का बलिदान देने को तैयार रहे। ब्राहमण जाति जो सदा से राज करती रही। क्या वो दौलत के लोभी बनकर और तलवार से भयभीत होकर इस्लाम की छत्रछाया स्वीकार करेंगे? वास्तविकता यह है कि इस्लामी संदेश में ही इतना प्रेम है और उसके सिद्धांतों में ही मुर्दा आत्माओं को जीवित करने की ऐसी शक्ति है कि लोगों के हृदय खुद उसकी चौखट पर श्रद्धांजलि अर्पित करने लगते हैं। (1)

जहां पूरा देश इस्लाम के संदेश से प्रभावित हुआ। वहीं छत्तीसगढ़ की धरती भी उससे सुगंधित हो उठी।

.(1)प्रोफेसर हिमायू कबीर की प्रसिद्व पुस्तक दी इण्डिया हेरी टीच सफा 84 और बदरूल कादरी सा. हालैण्ड की महात्व पूर्ण पुस्तक मुसलमान और हिन्दुस्तान सफा 132 में इस संबन्ध में तफसीली रौशनी डाली गई है जो हर न्याय प्रिय के पढ़ने योग्य किताब है। मोहम्मद अली

छत्तीसगढ़ और इस्लामः—

छत्तीसगढ़ जिसे गोंडवना भी कहा जाता है बल्कि इतिहास तो यह कहता है कि यह नाम मुसलमानों का ही दिया हुआ है। प्रसिद्ध इतिहास कार प्यारेलाल गुप्ता प्राचीन छत्तीसगढ़ में लिखते हैं। द्राविड़ों का एक वर्ग गोड़ छत्तीसगढ़ में रहता आया है। अभी भी इस क्षेत्र में गोड़ों की जनसंख्या अधिक हैं आर्यों के प्रवेश के पहले जिस भाग में इनका राज्य था वह गोंडवाना कहलाता था। यद्यपि पूरे छ,ग, को गोंडवाना नाम मुसलमानों ने दिया था। नागपुर में तो गोंडवाना क्लब तक खोल रखा गया है यद्यपि इसके सदस्य गोड़ोतर सज्जन हैं और जो अत्यन्त सम्माननीय दृष्टि से देखे जाते हैं। गोड़ों को अपनी स्वतंत्रता, सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा के लिए आर्यो से निरंतर टक्कर लेना पड़ता। (सफा 14)

डा. बलदेव प्रसाद मिश्रा ने अपनी पुस्तक छत्तीसगढ़ परिचय के पृष्ठ 2 पर भी यही दर्शाया है। मगर यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ के नाम से कैसे प्रसिद्ध हुआ इस संबंध में विद्वानों के कई मत हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि 1493 के लगभग यह नाम प्रचार में आया। वरन इससे पहले इस क्षेत्र को दक्षिण कोंसल, सर्वत्रकोसल या महाकौसल कहा जाता था। यह भी कहा जाता है कि चेदी वंशी राजाओं के राज्य के कारण इसे चेदीश गढ़ कहा जाता था जो बिगड़ कर छत्तीसगढ़ हो गया। एक मत यह भी है कि रतनपुर के राजाओं ने 36 किलों पर राज्य किया। इसलिए यह राज्य छत्तीसगढ़ के नामे से प्रसिद्ध हुआ।

(छत्तीसगढ़ का इतिहास स. 10)

साहित्य में खौरागढ़ राज्य के चारण कवि दल राम

की रचना में यह शब्द पहली बार 1487 में प्रयोग किया गया।

लक्ष्मी निधिराम सुनो चित्तदै,गढ़ छत्तीस मे न गढ़ैया रही।
मरदुमी रही नहि मरदुन के, केर हिम्मत से न लड़ैया रही।
भय भाव भरे जन गांव र ह भय है नहिं जाय डरैया रही।
दलराम कहै सरकार सुना, नप काई न ढाल अढ़ैया रही।

इसके अतिरिक्त खूब तमाशा में गोपाल मिश्र जो रतनपुर के कवि थे उन्होंने भी 1689में इसका प्रयोग किया है।

छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की आमदः— छत्तीसगढ़ में मुसलमान कब आए। सही तौर पर बताना बड़ा मुश्किल है। मगर इतना ज़रूर है कि यहां का मुसलमानों से बड़ा पुराना संबंध रहा है। भारत की धरती पर लगभग 800 वर्ष तक शासन करने के बावजूद यह क्षेत्र सदा ही मुस्लिम राज्य से दूर ही रहा। जिसका कारण शायद रहा हो कि देहली के बादशाहों का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं गया और न ही यहां वालों ने उनके राज्य को कभी चुनौती दी। मगर बुजुर्गाने दीन के काफिले यहां आते रहे और उनके पवित्र चरणों से यहां इस्लाम की फुलवारी महेकती रही।

सय्यद मूसा शहीदः— एतहासिक दृष्टिकोण से जो बात अभी तक सामने आई है वो यह कि बारहवीं शताब्दी में हज़रत सय्यद मूसा शहीद अपने फौजियों के साथ इधर तशरीफ लाए और रतनपुर के पास जूना शहर जो अब रतनपूर का एक मोहल्ला है वहां जंग करते हुए शहीद हुए। प्राचीन छत्तीसगढ़ के लेखक लिखते हैं।

रतनपुर के पूना शहर में मूसे खां की दरगाह है जहां अब कुछ वर्षों से मुसलमान उर्स मनाते हैं। इस संबंध में कप्तान जे,टी, ब्लंट ने जिसने अपनी यात्रा के बीच सन् 1795 में रतनपुर में पांच दिनों का मुकाम किया था। अपनी रिपोर्ट

में लिखा है — दुलहारा तालाब के करीब पश्चिम की ओर एक मुस्लमान पीर की समाधि है जिसका नाम मूसे खां था और जिसकी हत्या गोंड़ों ने कर दी थी। (सफा 115)

किंतु लेखक का कहना है कि यह अप्रमाणित है। मगर बुजुर्गों के कथन अनुसार आपका पूरा शरीर जूना शहर रतनपुर जिला बिलासपुर में है मगर सर का मज़ार वहां से लगभग 10 मीटर दूर आरंग में है जो रायपुर से लगभग छत्तीस कि,मी, बंबई कलकत्ता रोड पर है।

हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी जिनकी सरपरस्ती में यह उर्स उनकी पूरी जिंदगी भर मनाया जाता रहा वो फरमाया करते थे कि सय्यद मसऊद गाजी सालार रहमतुल्लाह अलैह की फौज के एक हिस्से के आप सेनापति थे जो किसी तरह रास्ता भटक कर इध ार आ पहुंचे और लड़ते हुए शहीद कर दिये गये। ह ज़ रत मसऊद गाजी सालार (रहमतुल्लाह तआला अलैह) सुल्तान महमूद गज़नवी के भांजे थे जो बहराईच में लड़ते हुए भरी जवानी में 14 रजब 424 ही (10जुलाई 1033 ई.) को उन्नीस साल की उम्र में शहीद हुए। पूरे भारत में हर जगह आपका नाम लोग बड़ी श्रद्धा से लेते हैं। मशहूर मोहद्दिस हज़रत शेख अब्दुल हक मोहद्दिस देहलवी फरमाया हैं।

आपका मुबारक नाम सालार मसऊद है और देहली के अतराफ (आसपास) में पीरे पहलम,खुरासन (जो ईरान में एक शहर का नाम है) के इलाके में रजब सालार और बाज़ जगहों पर किया गाज़ी, बाले कियां, बाला पीर, हटीला पीर भी कहते हैं। (खज़ीनतुल औलिया भाग—2सफा217 बहवाला मुसलमान और हिन्दुस्तान स, 204)

इधर कुछ सालों से हज़रत सय्यद मूसा शहीद की दरगाह रतनपुर में किसी ने एक बोर्ड लगा दिया जिसमें आप

की शहादत 584 हि. (4 अप्रैल 1186 ई.) बताई गई है। जबकि हज़रत मसऊद गाज़ी सालार की तारीखें शहादत 424 हि. (1033 ई.) कई साल पहले भोपाल से वक्फ बोर्ड का कोई सरवेयर आया था। जिसने आपका नाम सय्यद अब्दुल लतीफ उर्फ सय्यद मूसा शहीद बताया। उसी से यह भी पता चला कि आप अस्फहान (ईरान) के रहने वाले थे। आप के साथियों की सामुहिक कब्रें दो जगह बताई जाती हैं। एक कब्र में 351 शोहदा दफन हैं जिसे गंजे शहीदाने कहा जाता है। दूसरी कब्र जो मज़ार शरीफ के पास है वहां 70 शोहदा अराम फरमां हैं। यह आप के एक दिन पहले शहीद हुए थे। आपके कुछ साथियों के नाम भी सरवेयर साहब के ज़रिये मालूम हुआ। जैसे सय्यद अफज़ल हुसैन वल्द सय्यद अब्दुल रहमान, सय्यद जमालुद्दीन, सय्यद अनवारूल हसन, सय्यद जमाल असगर वगैरा। यह सब सय्यद अफज़ल हुसैन साहब के भाई के भाई थे। मगर कोई किताबी या तहरीरी तस्दीक अभी तक मुझे नहीं मिल पाई। मगर इतना ज़रूर पता चलता है कि यह पहले क़ाबिले ज़िक्र हस्तियां हैं जिन्होंने इस इलाके में सबसे पहले इस्लाम का चिराग रौशन किया।

उनके दो सौ साल बाद खलीफा नाम किसी मिलेट्री नरल का नाम इतिहास में मिलता है जिसमें 1346 ई. में सरगुजा पर विजय प्राप्त कर तांबे का सिक्का चलवाय। तीसरा ज़िक्र फिरोज़ शाह तुगलक का मिलता है जिसने चौदहवीं सदी ईसवी में उड़ीसा से वापसी पर रायपुर में पड़ाव डाला। उसकी फौज के कुछ मुसलमान फौजी यहां रूक गए। फिर शेरशाह सूरी के समय भी कुछ मुसलमान इस क्षेत्र में पहुंचे।

बादशाह जहांगीर और छ.ग. :—17वीं सदी में बादशाह जहांगीर के राज्यकाल में उसके लड़के परवेज़ का

रतनपुर में हमले का जहांगीर नामा के ज़रिए मिलता है। प्राचीन छत्तीसगढ़ के लेखक लिखते हैं जब जहांगीर के पुत्र परवेज़ ने रतनपुर पर हमला करने के लिए अपने एक सेनापति को भेजा तब तत्कालीन राजा कल्याणराय ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। फलतः परवेज़ ने राजा को एक लाख रूपया 80 हाथी तथा स्वर्ण मुहरे लेकर दिल्ली चलने के लिए विवश किया। इसकी सूचना जब राजा कल्याण राय की माता भवानामती को मिली, तब वो बहुत घबरा गई। उसने सोचा कि मेरा पुत्र दिल्ली में इस्लाम मज़हब स्वीकार करने के लिए अवश्य मजबूर किया जाएगा। देवार गीत में इसका उल्लेख इस प्रकार है।

रानी कहे भवानामती,सुन बेटा मोर बात,
मूड़ रूड़ाय पठान बना हे अउ पढ़ा हे नेवाज
कनचीर मुंदरी पहिर है कर मुगलानी भेख
तै पाइके राजा मन ढिल्ली न इ जावे जी (स.231)

मां के समझाने के बावजूद राजा कल्याण राय शहज़ादा परवेज़ के साथ दिल्ली चला गया। उस वक्त उसके साथ कई राज्यों के 22 आश्रित राजा और 18 राजकुमार भी थे। वहां पहुंच कर बादशाह जहांगीर ने उसे मज़हब बदलने पर मजबूर करने के बजाए उसे एक राजा का सम्मान दिया और वापसी पर अपने शहाना रसम वो रिवाज और प्रथा के अनुसार खिल्लात (शाही इमाम) आदि से भी नवाजा।

यहां यह हक़ीक़त भी समझते चलिये कि मुगल बादशाहों ने बल्कि किसी भी मुस्लिम बादशाह ने इस्लाम को फैलाने में कभी ज़ोर ज़बरदस्ती और लाठी डंडे का इस्तेमाल नहीं किया। इस्लाम जब भी फैला यह अपनी प्रेम भरा संदेश से फैला और आज भी दुनिया के विभिन्न स्थानों में इसी बुनियाद पर बढ़ रहा है।

मुगल बादशाह बाबर की वसीयत सारा संसार जानता है कि जिसमें उसने अपने बेटे हुमायूं को गाय की कुर्बानी से मना किया था ताकि देश पर ही नहीं बल्कि प्रजा के दिलों पर भी उसका राज्य चलता रहे। यही कारण है कि अंग्रेजों से पहले भारत में कभी हिन्दु मुस्लिम दंगा नहीं हुआ। दोनों मिलकर सदा बादशाहों से प्रेम करते रहे और बादशाह भी सभी के दुख–सुख में भागीदारी बने रहे। यही वो एकता और प्रेम था जिसका यह परिणाम था कि जब अंग्रेजों के खिलाफ सारा हिंदुस्तान उठ खड़ा हुआ उस वक्त मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फर को सभी ने दिल्ली के तख्त पर बैठाकर तोपों की सलामी दी और उनकी संरक्षता में1853 ई.की जंगेआज़ादी लड़ी। (1)

मराठा राज्यः—बादशाह जहांगीर के बाद 1737 ई. में बिंभाजी भोंसले के राजा बनते ही छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की आमद तेजी से बढ़ती चली गई। जिसका विशेष कारण यह था कि मुसलमान अपनी हुकूमत के सदा वफादार रहे। यही वजह थी कि भोंसले ने फौज मेंमुसलमान को तरक्की दी। उन्हें आगे बढ़ाया और उन पर ज़्यादा से ज़्यादा भरोसा किया। बिंभाजी की फौज में तफसील के लिये देख अली करावल खॉ, शाह मोहम्मद खॉ और सुब्हान जी विशेष महत्व रखते थे। (तारीखे नागपुर) फौज में मत्वपूर्ण स्थानों पर मुसलमानों की भर्ती का एक कारण उनकी

---

(1) डॉ. सबीहा यासमीन खां की थिसेस
Development of islamic institutions in chhatisgarh
(2) Memoirs of jahangir by rodgers and beverdge

बहादुरी और वीरता भी थी। बिंभाजी के बाद राजा रघु जीप्रथम (1698 से 1755 ई.) तक ने 1714 तक उड़ीसा के सुबेदार मीर हबीब के कहने पर बंगाल के नवाब अली वर्दी

खॉ पर हमला किया। ;छत्तीसगढ़ का इतिहास; के लेखक आचार्य रमेंद्रनाथ मिश्र लिखते हैं। मराठों ने ई. 1742 में बंगाल को लूटने के लिए कूच किया। रास्ते में रतनपुर का राज्य पड़ा। भास्कर पंत वहां के राजा रघुनाथ सिंह को हरा कर और उसकी जगह उसी के संबंधी मोहन सिंह को सौंपकर आगे बढ़ा। (सफा 21)

इस तरह सात शताब्दी से ज़्यादा कलचुरी राज्य समाप्ति पर पहुंच गया। रतनपुर जिसे रतन देव ने बसाया था और छ.ग. की राजधानी बनाया था अब धीरे–धीरे मराठों के अधिकार में चला गया यहां तक कि 1757 में प्लासी के दौरान में जहां भारत के भाग्य का फैसला हुआ वहीं छ.ग. के राजनैतिक भाग्य का फैसला हुआ मराठों के हक में हुआ। जिन्होंने रघुनाथ सिंह को हटाकर मोहन सिंह को पहले गद्दी में बैठाया और फिर 1757 में उसे निकाल भगाया। दूसरी तरफ उसके लड़के शिवराज सिंह से भी 1757 में जागीर छीन कर अपने राज्य का उसे एक भाग बनाकर बिंबाजी भोंसले शासन चलाने रतनपुर आया।

जिस समय भास्कर पंथ ने बंगाल की तरफ मार्च किया और रतनपुर पर विजय प्राप्त की उस मौके पर उसके साथ जो मुस्लिम फौज थी लगता है कि हज़रत बाबा इंसान अली के पूर्वज उसी मौके पर छ.ग. में तशरीफ लाए होंगें। जिस पर तफसीली गुफ्तगू में हज़रत के जीवनी ताजदारे

छत्तीसगढ़ में की है।

इलाके के मुसलमानों की तारीख का दूसरा दौर जंगे आजादी से शुरू होता है जिसमें पूरे भारत के साथ–साथ इस क्षेत्र के मुसलमानों की कुर्बानियों और बलिदानों ने एक नया इतिहास रचा और अपने खून से मादरे वतन की मांग में संदूर भरा। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए वो चिराग़ जलाया जिस के मधुर प्रकाश में आने वाले मुजाहेदिन ने इस क्षेत्र में इन्क़ेलाब जिंदाबाद आज़ादी हमारा पैदाईशी हक का नारा लगाकर अंग्रेजों को बोरिया बिस्तर बांधने पर मजबूर कर दिया।

1757 में कुछ लोगों की गद्दारी और अंग्रेजों की मक्कारी से बंगाल के नवाब सिराजुद्दीन दौलत की शहादत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के क़दम भारत पर जमने लगे। फिर धीरे–धीरे भारत को गुलाम बनाने का शैतनाी प्लान लेकर अंग्रेज़ पूरे भारत पर छाते चले गये यहां तक की शेरे दक्षिण टीपू सुल्तान की 1799 ई. में शहादत से पूरे भारत पर राज्य करने का उनका शैतानी सपना हक़ीक़त का रूप लेने लगा। जब तक टीपू सुल्तान ज़िन्दा रहे। भारत को गुलाम बनाने की अंग्रेज कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इध ार टीपू सुल्तान शहीद हुए उधर जनरल हीरस ने शैतानी (राक्षसी ठहाका) लगाते हुए कहा '' अब भारत हमारा है।

शहंशाह औरंगजेब (1707) की जिंदगी तक तो अंग्रेज भारत पर क़दम रखते हुए घबराते थे और टीपू सुल्तान की ज़िन्दगी में इसे गुलाम बनाते हुए वो डरते थे। मगर उन्हें क्या खबर थी कि टीपू सुल्तान आजादी का जो चिराग जला गए उसे जनरल हीरस का शैतानी कहकहा ही नहीं बल्कि इंग्लैंड की पूरी शक्ति भी मिलकर बुझा न सकेगी। इतिहास साक्षी है कि टीपु सुल्तान की शहादत से

उसकी रौशनी इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी कि 1857 में आखरी मुगलिया ताजदार बहादुर शाह ज़फर की सरपरस्ती में पूरा भारत आज़ादी के लिए उठ खड़ा हुआ। उस मौके पर सारे भारत के साथ–साथ हमारा छत्तीसगढ़ का यह इलाक़ा भी मैदाने जंग में कूद पड़ा।

अगरचे यहां मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी मगर फिर भी वो सर पर कफन बांध कर देश की आज़ादी के लिए सब कुछ कुर्बान करने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़े हुए। जिनमें सय्यद अकबर हुसैन खॉ(अस्पताल वाले बाबा) गाज़ी खां हवलदार, अब्दुल हयात खां गोला अन्दाज़ और नूर मोहम्मद गोला अन्दाज़ वगैरा का नाम क़ाबिले ज़िक्र है। जिन्हों ने अपनी जान की परवाह किये बगैर तीसरी टुकड़ी के सार्जेंट मेजर डिल विल को कत्ल करके और 22 जनवरी 1885 को फांसी के फंदों पर झूल कर आने वाले मुजाहेदीन को न टूटने वाला हौसला दे गए जिसने आजादी का नया इतिहास रचा। सय्यद अकबर हुसैन वल्द सय्यद हैदर हुसैन जो अस्पताल वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध है जिन्हें वक्फ बोर्ड सरवेयर मुंशी महरूद्दीन सा. ने बिला तसदीक़ बंदे अली शाह लिखवा दिया। आज भी हजारों मरीजों को आप के मज़ार से तंदुरूस्ती मिल रही है। आप के नाना मीर हशिम अली के बारे में कहा जाता है कि वो रेवाड़ी (हरियाणा पंजाब) से किसी फौज के साथ देहली होते हुए काला हांडी (भवानी पटना उड़ीसा) पहुंचे और वहीं एक जंग में शहीद हो गए। सय्यद अकबर हुसैन (अस्पताल वाले बाबा) को मेजर सिड विल के क़त्ल के जुर्म में जहां फांसी का हुक्म हुआ वहीं आप के रिश्तेदारों को भी खुसूसन सय्यद नजफ अली और सय्यद याकूब अली को सख्त परेशान किया गया। मगर आजादी के वोह मतवाले अंग्रेजों के हर जुल्म वो सितम और

अत्याचारों का मुजाहिद बनकर मुकाबला करते रहे। हज़रत सय्यद अकबर हुसैन को जब खानदान वालों पर ढाए गए जुल्मों वो सितक की खबर लगी तो आप ने न सिर्फ उन की हिम्मत बढ़ाई बल्कि मादरे वतन की हिफाज़त और अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ादी के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने की नसीहत भी की। आप के फांसी का जब वक्त आया तो आप ने तीन वसीयत की जिस में पहली वसीयत यह थी कि मेरी लाश को कोई काफिर हाथ न लगाए। दूसरी वसीयत में आप ने जहां आज मजार है उसी जगह दफन करने के बारे में फरमाया और तीसरी वसीयत में उन रिश्तेदारों को छोड़ने के बारे में कहा जिन्हें अंग्रेज़ अपने जुल्मों सितम का निशाना बना रहे थे।

आज आप का जिस जगह मज़ार है वो इलाक़ा उस वक्त वीरान खंडहर पड़ा उजाड़ था मगर वहां दफन के बारे में एक दफा लोगों ने हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी से पूछा तो आप ने फरमाया कि अल्लाह वालों पर खुदाई फैज़ान होना आम बात है। हज़रत बाबा को मालूम था कि एक दिन यह इलाक़ा आबाद होगा और हज़ारों लोग दिन रात फयूज़ वो बर्कात लेने यहां हाज़िर होंगे। इसलिए आप ने वो जगह पसंद फरमाई। ताकि हर आने वाले को ज़्यादा आसानी हो।

हज़रत बाबा और उनके साथियों ने आज़ादी का जो चिराग जलाया वो फांसी के फंदे में पहुंचकर इस तरह भड़का कि पूरा छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की तादाद इंतेहाई कम होने के हर जगह उन्होंने अंग्रेजों का न सिर्फ मुक़ाबला किया बल्कि आज़ादी के बुझते हुये चिराग को भी वो अपने खून से जलाते रहे। 1919 ई. में जब हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब किब्ला फारूक़ी अलैहिर्रमा इधर

तशरीफ लाए तो तालीमी और मज़हबी एतेबार से यहां के मुलमानों की हालत इन्तेहाई खराब थी। दूर–दूर तक कहीं इल्म का कोई दीप भी नहीं था जो लोगों में ईमानी बेदारी लाता और इस्लामी जज़्बा बेदार रखता यहां तक कि कहीं कहीं ज़ेहालत का अंधेरा इतना घना हो चुका था कि दूर–दूर तक नमाज़े जनाजा पढ़ाने वाला भी नज़र नहीं आ रहा था जिस की वजह से नमाज़ पढ़े बगैर मुर्दे को दफन कर दिया जाता। मगर इसके बावजूद अंग्रेजों से नफरत और आज़ादी की तड़प का जज्बा हर मुसलमान के दिल में लहरें मार रहा था।

अंग्रेजों ने जहां बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और शेरे दकिन टीपू सुल्तान को मरवा कर मुसलमानों पर अत्याचार का पहाड़ तोड़ना शुरू किया वहीं उन्हें इस्लाम से दूर करने के लिए दयाानन्द सरस्वती कि ज़रिये शुद्धि आंदोलन चला कर उन्हें हमेशा के लिए खत्म करने का भी भ्यानक और खतरनाक मंसूबा बनाया।

एक तरफ अंग्रेज़ो के जुल्म वो सितम और भयानक अत्याचार का उमड़ता हूआ तूफान। दूसरी तरफ दीन और ईमान को बर्बाद करने वाला शुद्धी आंदोलन की उठती हुई भयानक आंधी तीसरी तरफ पूरे इलाके में दीनी वो इल्मी मैदान में जेहालत का बढ़ता हुआ अंधेरा। उस पर यह तमाशा अलग कि गैर मुस्लिमों की संगत और दोस्ती की वजह से मुस्लिमीन रसम वो रिवाज। जिसमें यहां का बंधा हुआ मुसलमान दिन ब दिन इस्लाम से दूर होता जा रहा था। मगर खुदा की रहमत जोश में आई। उसके नेक बन्दों की दुआओं ने असर दिखाया और सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा गरीब नवाज़ रदिअल्लाहो तआला अन्हो के खामोश ईशारे पर आला हज़रत फाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा के फ्योज़ वो बर्कात की

दौलते ला ज़वाल लिये हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली फारूक़ी अलैहिर्रहमा यहां तशरीफ लाते हैं और गांव से लेकर शहर तक, जंगल से लेकर बस्ती तक पहाड़ो और गांव से लेकर आबादी तक हर जगह पहुंच कर न सिर्फ ईमानी बेदारी का नया दौर शुरू करते हैं बल्कि ईस्लाम दुश्मन ताक़तों के ज़रिये अंधेरग़र्दी मचाती शुद्धी आंदोलन का जबरदस्त मुकाबला करते हुए अंग्रेज़ो के खिलाफ ऐसा माहौल बनाते हैं कि घर–घर आज़ादी का दीप जलने लगता है। पूरा इलाक़ा अंग्रेज़ो के खिलाफ उठ खड़ा होता है। आपकी मुजाहिदाना ललकार और इस्लामी किरदार से जहां मुसलमानों में एक नई जिंदगी अंगड़ाई लेने लगी वहीं इस्लाम दुश्मन ताकतें भी घबरा उठीं। देखते ही देखते अंग्रेज़ों के क़दम उखड़ने लगे। शुद्धी आंदोलन का तूफान भटकने लगा। ईमानी जाह वो जलाल और इस्लामी किरदार वो अमल ने मुसलमानों को नया हौसला दिया। उन के मुर्दा दिलों में नई ज़िन्दगी मुस्कुराने लगी। अंग्रेज़ो की सारी साजिशें नाकाम होने लगीं। साथ ही साथ हर जगह बगावत का तूफान उमड़ने लगा। जिससे घबराकर 19 जुलाई 1922 ई. को बगावत के जुर्म में आपको जेल भेज दिया गया। मगर आपने वहां भी अपना मिशन इस अंदाज़ से क़ायम रखा कि जेल की अंधेरी कोठरियां भी ईमान के मधुर प्रकाश हो उठीं और वहां रहने वालों के दिलों में भी अज़मते इस्लाम की आकाश गंगा का मधुर प्रकाश बिखरने लगा। कैद में ज़िदगी गुज़ारने वाले न सिर्फ दीन के मुजाहिद और इस्लाम के गाज़ी बन गए बल्कि उनकी ज़िदगी इश्के रसूल के सांचे में ढल कर दूसरों के लिए रौशनी का मीनार बन गई। जिसकी रौशनी में समाज आगे बढ़ने लगा। यहां तक कि बहुत से गैर मुस्लिमों के हृदय भी इस्लाम की सुगंध से सुगंधित होने लगा और उनकी जुबानों से भी कल्म ए तौहीद का झरना फूट पड़ा।

जेल से छूटकर आपने पूरी क़ौम को जोशे हुसैनी और जज़्बए शब्बीरी से सरशार करने के लिए मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर म. प्र. की बुनियाद डाली जिसने पूरे इलाके को मदीने से और करीब कर दिया। फिर जैसे जैसे यहां के लोग मदीन ए मुनव्वर से करीब होते गए वैसे–वैसे मध्य भारत का यह पिछड़ा इलाका नया–नया इतिहास रचने लगा। इश्क वो इर्फान का इतिहास, तालीम वो तर्बियत का इतिहास, सरफरोशाना और मुजाहिदाना किरदार का इतिहास। मादरे वतन से मोहब्बत और इस्लाम से वफादारी इतिहास। ऐसा इतिहास जिसने छत्तीसगढ़ से मदीने का फासला ही मिटा दिया हर घर में मदीने की तजल्लियात मुस्कुराने लगीं और हर दिल में इश्के रसूल का चिराग जलने लगा।

क़ौमे ख्वाबीदा को जिस ने कर दिया बेदार ।
तासीर थी वो एक मर्द मुज़ाहिद की अज़ाब में।।
कांप उठे ऐवाने बातिल न अ र ए तकबीर से।
थी वो कुव्वत मोहसिने मिल्लत की ज़बां में।।

1. मोहसिने मिल्लत का देखो किस क़दर फैज़ान है!
   बच्चा बच्चा क़ौम का अब हाफिज़े कुर्आन है!
2. दीन की खिदमत करे और शरीअत पर चलो!
   जानशीने मोहसिने मिल्लत का ऐलान है!
3. मस्लके अहमद रज़ा पर चलते रहो ऐ सुन्नियो!
   मस्लके अहमद रज़ा ही सुन्नियो की जान है!
4. शुध्दी आंदोलन मिटा और फिरकए बातिल छटा!
   हज़रते हामिद अली से आप ही की शान है!
5. सीखने को इल्म दीं जो मदरसा आ गया!
   जान लो के वो रसुलूल्लाह का मेहमान है!

शान वाले

मौलाना अब्दुल गफूर दुर्ग

खलीफा सरकारें कला कछौछए मुकद्दसा

जानते हैं शान वाले शाने शाह हामिद अली
फज़्ले हक था बिल यकीं निगराने शाह हामिद अली
देखि हां देखिए इरफाने शाह हामिद अली
ज़िन्दए जावेद हैं आरमाने शाह हामिद अली
उसकी अज़मत उसकी रिफअत को मुसल्लम जानिए
पा गया जो गोशए दामने शाह हामिद अली
अहले दुनिया से आये और आकर करें उसका तवाफ
खुश नसीबी से है जो दरबाने शाह हामिद अली
गौसो ख्वाजा व अशरफो अहमद रज़ा के फैज़ से
रश्के जन्नत है दरे एवाने शाह हामिद अली
तिनगाने इल्मो फन होते रहेंगे फैजयाब
अहले छत्तीसगढ़ पे है एहसाने शाह हामिद अली
अज़्मे मोहकम की बुलंदी क्या करे कोई बयां
सरफराज़िए जहां ईक़ाने शाह हामिद अली
आंधियां जुल्मों सितम की सर नगू होकर रहीं
पैकरे सब्रो रज़ा थी शाने हामिद अली

गुलशने फारूक का हर गुल शगुफ्ता है यहां
अशरफी कहिए इसे फैज़ाने शाह हामिद अली

सूफियों के बज़्म में भी सदरे महफिल आप थे

कारी साबिर देहलवी

बात हत की है कि थे हक आशना हामिद अली
रहबरे राहे तरीकत रहनुमा हामिद अली
सुन्ने सरकार की उनसे बका है आज तक
थे जहांने सुन्नीयत के पेशवा हामिद अली
सूफियों के बज़्म में भी सदरे महफिल आप थे
साफगोई में रहे अहले सफा हामिद अली
होश के आलम में फैज़ाने नज़र हर सू रहा
बे खूदी में थे हमेशा वा खुदा हामिद अली
मुद्दई की हर नज़र खुद से बढ़ती आगे कहां
अहले बातिल की नज़र का मुद्दआ हामिद अली
दूर होकर भी नहीं हैं जानो दिल से दूर–दूर
देखिए हमको मिलेंगे जा बजा हामिद अली
ज़िके सरकार मदीना जब भी आया खो गये
सबने देखा महबीयत में एकता हामिद अली
हम्द से मुश्तक रहा है नामे नामी आपका
अव्वलीयत में इब्तेदा ता इन्तहा हामिद अली

देख साबिर देख अब तूफाने हस्ती है ही क्या
कश्तीए दिल के जहां नाखुदा हामिद अली

इबतेदाईय्या

मुजाहिदे बंगाल सिराजुद्दौला और शेरे दक्षिण टीपू सुल्तान की शहादत के बाद अंग्रेज़ों ने पूरे हिन्दुस्तान को अपना गुलाम समझ लिया और देखते ही देखते वह पूरे हिन्दुस्तान के हुक्मरां बनकर जुल्मो सितम की कहर मानी ताकतों के सरदार नज़र आने लगे। जगह–जगह हिन्दुस्तानियों का जालिमाना और सफ्फाकाना कत्ले आम और ईसाईयत की तरवीज व इशाअत उनका असल मकसद बन गया। इस सिलसिले में पादरी एडमण्ड के इस गश्ती मुरासेला से उनके नापाक इरादों और खतरनाक अज़ाइम का अन्दाजा लगाया जा सकता है जिसे उसने सन् 1800 ई. में कई लागों के पास खुसूसन सरकारी मुलाजेमीन को भेजा था।

अब तमाम हिन्दुस्तान में एक अमलदारी (हुकूमत) हो गई है। तार बरकी टेलीग्राफ से सब जगह की खबरें एक हो गई। रेलवे से सब जगह आमदो रफ्त एक हो गई – मज़हब भी एक चाहिये। इसलिए मुनासिब है कि तुम लोग भी ईसाई एक मज़हब हो जाओ।

(असबाब सरकशीए हिन्दुस्तान बहवाला बागिए हिन्दुस्तान सफा 213) एक तरफ उन्होंने सारे हिन्दुस्तान को जबरन व कहरन जोर जबरदस्ती से इसाई बनाने का शैतानी

मन्सूबा तैयार किया तो दूसरी तरफ अपने जर खरीद गुलामों के जरिये अपनी हुकूमत की हिफाजत व सियानत को फर्ज़ करार दिलवा कर अपने खिलाफ नफरतों के भड़कते शोलों को ठंडा करने का फिरऔनी मन्सूबा तैयार किया। जैसा कि मौलवी इस्माईल देहलवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही के सवानए निगारों ने इस हक़ीक़त का बरमला इज़हार किया कि जब भी हुकूमते बर्तानिया पर आंच आई ये लोग उसके हो गए। रेलवे से सब जगह आमदो रफ्त एक हो गए – मज़हब भी एक चाहिये। इसलिए मुनासिब है कि तुम लोग भी ईसाई एक मज़हब हो जाओ।

(असबाब सरकशीए हिन्दुस्तान बहवाला बागिए हिन्दुस्तान सफा 213) एक तरफ उन्होंने सारे हिन्दुस्तान को जबरन व कहरन जोर जबरदस्ती से इसाई बनाने का शैतानी मन्सूबा तैयार किया तो दूसरी तरफ अपने जर खरीद गुलामों के जरिये अपनी हुकूमत की हिफाजत व सियानत को फर्ज़ करार दिलवा कर अपने खिलाफ नफरतों के भड़कते शोलों को ठंडा करने का फिरऔनी मन्सूबा तैयार किया। जैसा कि मौलवी इस्माईल देहलवी, मौलवी रशीद अहमद गंगोही के सवानए निगारों ने इस हक़ीक़त का बरमला इज़हार किया कि जब भी हुकूमते बर्तानिया पर आंच आई ये लोग उसके तहफ्फुज़ के लिए मैदान में उतर पड़े। तीसरी तरफ अंग्रेज़ों ने निहायत चालाकी और दूर अंदेशी से ऐसी हिकमत अपनाई कि जो मुजाहिदीने इस्लाम अंग्रेज़ों के तख्तोताज को खुले आम ललकार रहे थे उन्हें सैय्यद अहमद बरेलवी की कायदत में सिक्खों से लड़वाकर मुसलमानों की फौजी कूवत को एक लम्बे समय के लिए तोड़ दिया जिसके नतीजे में तारीख का वो शर्मनाक हादसा मारकए बला कोट पेश आया जिसने गुलामी के साया को और लम्बा कर दिया।

पै दर पै शिकस्त और लगातार नाकामियों ने मुसलमानों के हौसले पस्त कर दिये और कुफ्रो शिर्क के अलम बरदारों को निहायत जर्री और बे बाक बना दिया। जिसके नतीजे में पूरे भारत में खूने मुस्लिम की होली गैरतों हमीयत के पैकरों की तबाही और कौमों मिल्लत के होने हारों की बर्बादी ने वह रंग दिखाया कि हिन्दुस्तान की धरती खूने मुस्लिम से रंगीन नज़र आने लगी। हर तरफ तबाही व बर्बादी की कहरमानी ताकतें नंगा नाच नचाने लगीं। मसाएब व मुश्किलात की तारीकियां भयानक अन्धेरी रात के अंधकारों को शरमाने लगी और मुसलमानों को अपना दीन व ईमान बचाना मुश्किल हो गया। उनकी इज़्ज़त व आबरू के लाले पड़ गये। जो मुसलमान किसी तरह ईसाईयत के दलदल में फंसने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें और उनकी पूरी नसल को बरबाद करने के लिए शुध्दी की भट्ठी सुलगाई गई ताकि उस आनदोलन के सहारे इस्लाम और मुसलमानों को हमेशा के लिये फना के घाट उतार दिया जाए। शुध्दी आन्दोलन आंधी और तूफान की तरह उठा और सारे भारत पर छा गया। देखते ही देखते सैकड़ों हज़रों नहीं बल्कि लाखों मुसलमान दीनों ईमान की दौलते ला जवाल से महरूम लगे उनका ईमानी वजूद खतरे में पड़ गया। इस सिलसिले में ताजदारें अहले सुन्नत शहजादए आला हज़रत सरकारे मुफ्ति ए आज़मे हिन्द मौलाना मुस्तफा रज़ा खां साहब अलैहिर्रहमतो रिज़वान के उस बयान से नज़ाकते वक्त और बर्बादी ए मुस्लिम का अंदाजा लगाया जा सकता है जिसे दबदबए सिकन्दरी ने 29 जनवरी 1923 ई. को शाए किया था जिसमें साढ़े चार लाख मुसलमानों के ईमानी खतरे की वहशतनाक रिपोर्ट थी।

एक तरफ मुसलसल नाकामी दूसरी तरफ फितनए इस्तेदाद की आंधी और तीसरी तरफ तकसीमे हिन्द का

कयामत बदोश हादसा। जिसने पूरी मुस्लिम कौम को अजीब मायूसी और कसम पुरसी की हालात में पहुंचा दिया। उस वक्त न सिर्फ मायूसियों के अंधेरों में ये भटकने लगे बल्कि तकसीमे हिन्द और तशकीले पाकिस्तान की सजा को आज तक भुगतते चले आ रहे हैं। जबकि तारीख का अपना फैसला कुछ और है और तारीख की निगाह उस हादसा में किसी और के दामन पर खूनी धब्बे देख रही है। जैसा कि एच.एम. सैरवाई जो खुद एक अजीम मुहक्किक और कानून दां है उन्होंने अपनी किताब पार्टिशन ऑफ इंडिया लिजन्ड एन्ड रियाल्टी में इस तअल्लुक से रौशनी डालते हुए तारीख की इस हकीकत का बरमला इजहार किया है कि तकसीम के असल जिम्मेदार गांधी, नेहरू और पटेल थे जिन्होनें कैबनेट मिशन प्लान को सिर्फ इसलिए नाकाम किया कि अगर वह प्लान मंजूर हो जाता तो हिन्दुस्तान तकसीम के दर्दनाम हादसे से बच जाता। उनकी ये किताब सबसे पहले 1989 में शाए हुई और फिर 1990 में दूसरी बार और अब तीसरी बार 1994 ई. में शाए होकर हकीकत के तलाश करने वालों के लिए रौशनी का मिनारा बन चुकी है।

नेहरू जी, गांधी जी और पटेल के साथियों में काजी द्वाराकादास विश्व प्रसिद्ध व्यक्ति है उन्होनेंभी अपनी किताब में इस हकीकत को स्वीकार किया है कि हिन्दुस्तान को तकसीम करने के असल जिम्मेदार जिन्ना नहीं बल्कि गांधी नेहरू और पटेल थे। उनकी इस किताब का उर्दू तुर्जमा मोहम्मद अली जिन्ना के नाम से शहाबुद्दीन दसनवी ने किया जिसे इल्मी मजलिस देहली ने शाए किया।

मगर इस मायूस कुन और हिम्मत शिकन माहौल में चन्द नुफूसे कुदसिया उठी जिन्होनें एकतरफ अपने लहूसे इश्को इरफान का चिराग जलाया और अपने किरदारों अमल से एक तरफ कौम की पस्तहिम्मती, पजमुरदगी और काहिली

व सुस्ती को उलुल अज्मी, बलन्द हिम्मती और गैरतो हिम्मयत की नई चिंगारी से रौशन किया तो दूसरी तरफ बातिल प्रस्तों का रूख फेर कर मुस्लिम कौम को नई घनगरज और ईमानी जजबात से सरशार करके फिर मैदाने अमल में ला खड़ा किया।

इस सिलसिले में बरेली के ताजदार मोजद्दिदे आजम सरकार आला हजरत का फौलादी किरदार और ईमानी ललकार नीज उन के खुलफा और शागिर्दों के तारीख साज कारनामों ने हालात का जिस तरह रूख बदला और बातिल परस्तों के नापाक मन्सूबों को खाक में मिलाकर उन्हें अपनी नाकाम हसरतों की तअफ्फुन जदा बदबूदार लाश अपने कांध ाों पर उठा कर राहे फरार एख्तियार करने पर मजबूर किया। यह मुजाहिदाना किरदारों अमल की वह तारीख है जिसके मधुर प्रकाश में सदियों काफिले चलते रहेंगे और हर दौर में बातिल परस्तों को ललकारने वाला गिरोह उभरता रहेगा बातिल परस्तों के साजिशी जाल को तोड़कर और फिक्रो नजर को इस्लामी किरदार व अमल के सांचे में ढालकर तारीख का धारा मोड़ने वाली उन अजीम शख्सियतों में हजरत मोहसिने मिल्लत खलीफ ए आला हजरत अल्लामा अल्हाज शाह मोहम्मद हामिद अली साहब पारूकी की जाते गिरामी इसार व कुर्बानी, उलुल अजमी व बुलन्द हिम्मती, मेहनत व जफाकशी, दूर अन्देशों व रौशन जमीरी का वह संगम है जिसने इलाक ए छत्तीसगढ़ को संवारने और निखारने में अजीम किरदार अदा किया।

जिस वक्त शुद्धी आंदोलन की तहरीक गुलशने इस्लाम को बरबाद करने और उसकी रौशनी को मिटाने के लिए उठी तो आपकी जात सद्दे सिकन्दरी बनकरआगे बढ़ी और उनके नापाक मंसूबों को खाक में मिलाकर कामे

मुस्लिम की हिफाजत व बका का जो इंतेजाम फरमाया उसने मध्य भारत की तारीख ही बदल दी। जिसकी पवित्र किरणों से आज बी मुजाहिदाना किरदार व अमल और सरफरोशाना ललकार की रौशनी फूट रही है।

जब सात समुन्दर पार से आये हुए तन के गोरे, मगर मन के काले अंग्रेजों ने हमारी मुकद्स धरती को गुलामी की जंजीरों में जकड़ने का नापाक मंसूबा बनाया जिसे नाकाम बनाने के लिए बंगाल से रिजुद्दौला, दक्षिण से शेरे मैसूर टीपू सुल्तान और देहली से मुगलिया ताजदार के आखिरी चिराग बहादुर शाह जफर ने हुकुमत व जिन्दगी दांव पर लगा दी। वक्तिया तौर पर गद्दारों की वजह से अंग्रेज कामयाब तो जरूर हो गये मगर जल्द ही उन मुजाहिदीने आजादी का खून रंग लाया और पूरा हिन्दुस्तान अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ। उस मौके पर हजरत मोहसिने मिल्लत ने जो किरदार अदा किया और जेल की तारीक कोठरियों में बैठकर इश्क व ईमान की तवानाई के साथ आजादी का बेहतरीन किरदार है। जिस पर आने वाला मोअर्रिख हमेशा अकीदत व मोहब्बत के मोती निछावर करता रहेगा।

जब कुछ हिन्दुस्तानियों की गलतियों से हिन्दुस्तान तकसीम हो गया जिसके नतीजे में पाकिस्तान, बंगलादेश और हैदराबाद जाने वालों का तांता बंध गया उस मौके पर उन मुहाजेरीन को रोकने और उन्हें दिलासा देने, ढारस बंध ाने और उनकी पजमुरदा रूहों को ईमानी तवानाई और इस्लामी ललकार की धनगरज से रोशनास कराने के लिए आपने जिस अज्म व इस्तिकलाल व इस्तेकामत और पामरदी का जलवा दिखाया उसकी इत्र बेज निकहतों और उसकी मन मोहक सुगंध से आज भी ये इलाका महक रहा है।

23 दिसबंर सन् 1949 ई. को जब बाबरी मस्जिद में ताला पड़ा और अजान व नमाज की मधुर आवाज और नगम ए ईमानी से उसे महरूम करके पूरी मिल्लते इस्लामिया को मुस्तकिल तौर पर बरबाद करने का बातिल परस्तों ने ठोस और तवीलुल मियाद मन्सूबा तैयार किया। उस मौके पर भी आपका जो किरदार सामने आया वह पूरी कौम के लिए लम्ह ए फिकिया है और आज भी वह पैगाम हमें मुस्तकबिल के उठने वाले फितनों से होशियार कर रहा है।

(6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद बड़ी बेदर्दी से तोड़ दी गई और फिर मुल्क के मुस्लमानों के कत्ले आम का सिलसिला चल पड़ा। जिसने पूरी दुनियां में हमारे भारत का सर शर्म से झुका दिया। उसके बाद वही कुछ होने लगा जिसके बारे में हजरत मोहसिने मिल्लत न पचास साल पहले बता दिया था यकीनन खुदा का वली नूरे ईमान से देखता है।) ऐसी अजीम व जलील और तारीख साज हस्ती पर आज तक कोई किताब नहीं लिखी जा सकी जिस पर मोबल्लिगे अरब व अजम, रईसुल कलम, अल्लामा अरशदुल कादिरी साहब निहायत कलक (अफसोस) व इजतेराब के साथ तहरीर फरमाते हैं।

हमें निहायत कलक (अफसोस) है कि मौलाना जैसी हमागीर और अजीम शख्सियत पर जिसने निस्फ सदी तक हिन्दुस्तान के कल्ब सूब ए मोतवस्सेता (मध्य भारत) में बैठकर इस्लाम व सुन्नियत की जो जोत जगाई उस पर हमारे किसी साहेब कलम ने अभी तक कुछ नहीं लिखा।

फिर हजरत अल्लामा की फरमाईश पर मैनें बुजुर्गाने अहले सुन्नत से राब्ता कायम किया और उनकी नेगारे शात को जमा करना शुरू किया। आज वह नेगारे शात आपके

पेशे नजर है। होना तो ये चाहिए था कि इसे कई साल पहले मन्जरे आम पर आ जाना चाहिए था मगर मस्रूफियतों के हुजूम में और कुछ वे तवज्जेही की वजह से देर पर देर होती रही। आज बफज्लेही तआला मध्यभारत की उस अजीम हस्ती का पहला तआर्रूफ आपके सामने है।

ये नक्श अव्वल है। जल्द ही मुस्तकिल सवान ए हयात का प्रोग्राम है। जिसमें आपके साथ खानदाने फारूकी के अजीम व जलील शख्सियतों का तआर्रूफ, खुसूसन सुल्तानुल आरेफीन हजरत बाबा फरीदुद्दीन फारूकी गंजशकर, माजद्दिदे अल्फे सानी शेख अहमद फारूकी सरहिन्द शरीफ, सरखैले मुजाहिदीने आजादी अल्लामा फजले हक फारूकी खैराबादी और इस तरह मायनाज हिस्तयों की तारीखें, उनके कारनामें और उनके मुकद्दस असरात पर मुश्तमिल वह सवाने हयात एक तारीखी दस्तावेज होगी। साथ ही साथ आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी अलैहिरहमतों रिजवान के फ्यूज व बरकात और अल्ताफ खुसरवाना की तफसिलात, हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा की तालीम व तबीयत की तजल्लियात, हुज्जतुल मशाएख इमामुल आरेफीन सैय्यादना शाह अली हुसैन अशरफी अलैहिर्रहमा, ताजदारे अहले सुन्नत शहजादए आला हजरत और हुजूर मुहद्दिसे आजमे हिन्द अलहिर्रहमा की नवाजिशात, बुरहानुल मिल्लात मुफ्ती बुरहानुल हक साहब अलैहिर्रहमा और अमीने शरीयत हजरत मुफ्ती रेफाकत हुसैन साहब अलैहिर्रहमा की रेफाकत व मईयत की तफसीलात होगी। इसके अलावा मदरसा की मुकम्मल तारीख आपके रूफका एकार, छत्तीसगढ़ की मुतअद्दिद तन्जीमों की तारीख और आपका उनसे तालुल्क, इलाकए छत्तीसगढ़ खुसूसन अहले रायपुर के वह जिन्दादिल और आली हिम्मत बुजुर्गों का तजकिरा जिन्होनें आपके शाना बशाना यहां कि

जेहालत व तारीकी दूर करने में अजीम किरदार अदा किया। जिनके जलाए हुए चिरागों से आज भी चिराग पर चिराग जल रहे हैं और जिनके फैलाए हुए उजालों से आज भी तारीकियां और अंधेरे घबरा रहे हैं।

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व
दारूल यतामा रायपुर

14 सफरूल मुजफ्फर 1416 हि.
मुताबिक 13 जुलाई 1995

मुतर्जिम मोहम्मद शकिर
एम.ए. शिक्षा विशारद

बानिए दारूल यतामा नाएबे शाहे होदा
तुझ पे साया फिगन है अश्रफो अहमद रजा
ताअबद जारी रहेगा फैज का दरिया तेरा
तिश्नगी अपनी बुझाऐगें यहां शाहोगदा

हज़रत मोहसिने मिल्लत
मध्यभारत के अजीम मसीहा

सर जमीने हिन्द के वह मायनाज उल्माए किराम जिन्होनें आंधियों की जद पर इस्लाम का चराग जलाया और आलाम व मसाएब के तुफानों में अजमते रसूल का परचम लहरा कर तारीख दावत व अजीमत का वह लाजवाल नक्श छोड़ा जिसकी रौशनी सदियों मुजाहेदीन व मुबल्लेगीने इस्लाम की राहों को मुनव्वर व मोअत्तर करती रहेगी उन अजीम व जलील शख्सियतों में गुलशने फारूकियत के गुले सर सब्ज मोहसिने मिल्लत हजरत मौलाना शाह मो. हामिद अली साहब फारूकी अलैहिर रहमतो रिजवान का नामे नामी इस्मे गिरामी हमेशा रौशन व ताबिन्दा रहेगा। जिनकी पूरी जिन्दगी कौम व मिल्लत के लिए वक्फ थी। जिनके मुजाहिदाना जाह व जलाल और सरफरोशाना किरदार व अमल की चांदनी से एक जहां फैजयाब व मुस्तफीज होता रहेगा।

आपकी विलादत मुल्क के तारीखी शहर इलाहाबाद के छोटे से गांव चन्दहा में 1889 ईस्वी में हुई जहां किसी वक्त आपके आबा व अजदाद हरमैन शरीफैन से जिहाद और तबलीगे इस्लाम का परचम लिए हुए अफगानिस्तान, मुल्तान, देहली, लक्षागीर वगैरह होते हुए तशरीफ लाये और फिर वहीं बुर्द वो बाश एख्तयार करे गये।

खानदानी तौर पर आप सुल्तानुल आरेफिन, शेखुल इस्लाम हजरत बाबा फरीदउद्दीन गंज शंकर से सत्रहवें पुश्त

में थे। हजरत बाबा फरीद गंशजशकर दुनिया या इश्क व इरफा की वह अजीम व जलील शख्सियत है जिन के बारे में शहनशांहे हिन्दुस्तां सुल्तानुल हिन्द हुजुर सय्यदना ख्वाजा गरीब नवाज रजिअल्लाहों तआला अन्हों ने अपने नायब व खलीफा कुतुबुल अत्काब हजरत सैय्यदना कुतुबुद्दीन बख्तियार काफी रदिअल्लाहो तआला अन्हो से फरमाया था कुतुब बड़े शहबाज को दाम में लाये, इसका आशियाना सिदरतुल मुन्तहा होगा।

(दिल्ली के, बाईस ख्वाजा 34 पश्ष्ठ)

बाबा साहब पर सुल्तानुल हिन्द सरकार गरीब नवाज के अल्ताफे खुसरवाना का अन्दाजा इस वाकेआ से बखूबी लगाया जा सकता है कि जब आप और हजरत कुतुब साहब उस मकाम पर तशरीफ ले गये जहां बाबा फरीद चिल्ला में तशरीफ फरमा थे। उस वक्त बाबा फरदी इतने कमजोर हो चुके थे कि आप उन के एहतराम के लिए उठ भी नहीं सके। इसलिए वहीं बा चश्मे पुरनम आपने सरेनियाज जमीन पर रख दिया। बाबा साहब का ये हाल देखकर ख्वाजा साहब ने कुतुब साहब से फरमाया ऐ कुतुब कब तक इस बेचारह को मुजाहिदा में घुलाओगे आओ इसे कुछ अता करें ये कहकर एक तरफ ख्वाजा पाक ने और दूसरी तरफ से हजरत कुतुब साहब ने आपको पकड़कर खड़ा किया, फिर हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रजिल्लाहो, तआला अन्हो ने आसमान की तरफ मुंह करके बारगाहे खुदावन्दी में दुआ फरमाया।

खुदाया हमारे फरीद को कबूल फरमा और अकमल दरवेश बना गैब से निदा आई हमने फरीद का कबूल किया, वे वहीदे असर (जमाने में सबसे निराला) होगा।

सुल्तानुल हिन्द की इसी दुआ का असर था कि आप के जरिए सिलसिलए चिश्तिया ने जबरदस्त फरोग हासिल किया खूसूसन आपके मुरीद व खलीफा और सज्जादा नशीन निजामुल औलिया महबूबे पाक हजरत निजामुद्दीन औलिया रजिअल्लाहो तआला अन्हो के जरिए उसने जो उरूज पाया वह तारीखे चिश्त का सुनहरा बाब है। हजारों गैर मुस्लिमों ने आपके दस्ते हक परस्त पर इस्लाम कबूल करके नसीमें हिजाज के फिर दौसे बहारा से अपने कुलुब को मोअत्तर व मुनव्वर किया। सुन्तानुल आरेफीन की सिलसिला ए नसब अमीरूल मोमेनीन इमामुल आदेलीन, गैजुल मुनाफेकीन सैय्यदना फारूके आजम से जा मिलता है। इस तरह आप दुनिया ए फारूकियत के खुरशीदे दरखशां और गुलशने चिश्त के हसीन बहार थे।

अमीरूल मोमेनीनी सैय्यदना फारूके आजम का जाह व जलाल और उनकी रिफअत व अजमत सारी दुनियां में मशहूर व मअरूफ है, आपकी ए साहबजादी हजरत हफ्सा रदिअल्लाहों अन्हा न सिर्फ रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मनसूब होकर उम्मुलमोमेनीन के लकब से मुर्शरफ हुई बल्कि आगे चलकर आपका शिजरए नसब भी नौवी पुश्त में कअब बिन लवी के वास्ते से रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जा मिलता है।

विलादत के वक्त आपके वालिद हाजी मोहम्मद शाकिर अली फारूकी इलाहाबाद के करीब जिला प्रतापगढ़ के मौजअ बिहार के माने हुए जमींदार की हैसियत से जिन्दगी गुजार रहे थे। शुरू में आपने वालिद साहब से तअलिम पाई। बाद में हाफिज अब्दुल रज्जाक साहब जो दिवान गंज फुलपुर के रहने वाले थे उनसे इल्म हासिल किया और फिर अपने चचा आबिद अली फारूकी के पास पहुंचे जो उसक वक्त लखनऊ में हेड कांनिस्टेबिल थे, ताकि तअलिमी सिलसिला और आगे

बढ़ाया जा सके। वहीं एक दिन आप की मुलाकात कुबुबे देवा हजरत सैय्यद वारिस अली शाह अलैहिर्रहमा से हुई। उस वक्त आपके चचा जो हजरत के खुसुसी चाहने वालों में से थे वह भी मौजूद थे उन्होनें आपको हजरत के सामने पेश करते हुए दुआ की दरख्वास्त की, हजरत शाह साहब ने खुसुसी तवज्जह डाली और सर पर हाथ फेरकर दुआएं दी और फिर मुस्कुराते हुए फरमाया ये फकीरी में शहंशाही करेगा और अंधेरे में इस्लाम का उजाला फैलाएगा।

जनाब आबिद अली साहब फारूकी बजाते खुद निहायत दीनदार पाबन्दे शरीअत असूल के पक्के आदमी थे, हजरत सैय्यद शाह वारिश अली अलैहिर्रहमा से आपको बेहद उन्सीयत थी, कुतुबे देवा की खुसूसी निगाहे करम भी आप पर हमेशा रहा करती थी, हजरत हासिने मिल्लत अलैहिर्रहमा को जनाब आबिद अली साहब ने फिरंगी महल लखनऊ में भरती कर दिया जहां आपने निहायत तन्देही और इनहेमाक के साथ अपना तअलीमी सफर जारी रखा, जनाब आबिद अली साहब से जब आप मिलने शहर तशरीफ लाते तो वह आपको साथ लेकर हजरत कुतुबे देवा की खिदमत में जरूरत ले जाते।

एकदफा हजरत कुछ तनावुल फरमा रहे थे। जब आप अपने चचा के हमराह वहां पहुंचे तो हजरत ने रोटी का एक टुकड़ा चबा कर आपको इनायत किया। आपने बिस्मिल्ला पढ़कर रब्बे जिदनी इल्मा (ऐ अल्लाह मेरे इल्म में ज्यादती अता फरमा) पढ़ते हुए उसे तनावुल फरमा लिया, हालांकि दुआ अपने दिल ही दिल में पढ़ी जिसे इन्तेहाई करीब में बैठने वाला भी नहीं सुन सकता था, मगर हाजी साहब कुतुबे देवा थे, हमेशा अनवार व तजल्लियात में शराबोर रहा करते थे, उनसे कलबी कैफियत और दिल की खामोश जबान का इस्तेगासा कैसे छुप सकता था उन्होंने एक खुसूसी तवज्जा डाली और मुस्तकबिल के पर्दो को उठाते हुए फरमाया इस बच्चे की

पेशानी बता रही है कि इसकी ललकार से हुकुमत घबराएगी और दुश्शमनाने इस्लाम लरजेंगे इसकी तालीम की सही तकमील मुजद्दिदे वक्त की निगाहे फैज असर के साया में होगी।

जनाब आबिद अली साहब फरमाते है कि मैनें उन्हें फिरंगीमहल में दाखिल तो करवा दिया था मगर वहां कलबी सुकुन न था। जब कुतुबे देवा ने मुजद्दिद वक्त के तआल्लुक से पैशिंगोई की और मैनें इस सिलिसिले में मालूमात फराहम की तो मुझे पता चला कि बरेली की धरती पर अपने वक्त के इल्म व इरफान के ताजदार तशरीफ फरमा ळै। जिनके इल्मी व इरफानी फैजान का चरचा तो मैंने कुछ सुर रखा था, मगर अब जो मालूम किया तो पता चला कि वह शख्सियत तो पूरी दुनियाएं इस्लाम में मुनफरिद है। उनकी रिफअत व अजमत और तबहहुरे इल्मी का डंका हिन्दुस्तान की सरहदों को पार करके हिजाजे मुकद्दस की धरती हरमैन शरीफैन में भी बज रहा है दुनियाए इस्लाम के बड़े–बड़े जलीलुलकद्र और रफी उलमरतबत उल्माएं इस्लिाम मुफ्तियाने उज्जाम और सुफियाए किराम जिनकी इल्मी रिफअत व अजमत और फिकरी जाह व जलाल के कइल और उनके इश्के रसूल के गुन गा रहे हैं फरमाते है कि जब मेरे सामने ये हकीकत वाजे हुई तो मैनें तय कर लिया कि कुछ वक्त यहां गुजार कर आखिरी तकमील के लिए वहीं भेजूंगा और जब उन्होनें अपने इस इरादे का इजहार हजरत मोहसिने मिल्लत से किया तो पता चला कि आप खुद भी यहीं मंसूबा लिये बैठे हैं। लिहाजा कुछ साल वहां इल्म हासिल करने के बाद आप आला हजरत मोजद्दिदे दीनों मिल्लत सैय्यदना इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी की खिदमत में हाजिर हुए जहां आपने आला हजरत की निगाहे करम का वह पैज हासिल किया कि उसकी तजिल्लयात से आपकी पूरी जिन्दगी जगमगाती रही एकतरफ हुज्जतुल इस्लाम शहजादए आला हजरत मौलाना हामिद रजा खान साहब के फैजाने

सोहबत दूसरी तरफ ताजदारे अहले सुन्नत सैय्यदी हुजुमुफ्तिए आजमे हिंद की निकहत बार मईय्यत और बुरहानुल मिल्लत हजरत मौलाना बुरहानुल हक साहब की रिफाकत और फिर उस पर मुजद्दिदे आजम सैय्यादना आजा हजरत फाजिले बरेलवी के अल्ताफे खुसरवाना की बारिश ने वह जौहर दिखाया कि अपने और पराए सब ही आपकी इल्मी रिफअत फिकरी अजमत सियासी बालिग नजरी और दूर अन्देशी व कौम शनासी के काइल नजर आने लगे।

हजरत बुरहाने मिल्लत फरमाते हैं कि सरकारे आला हजरत आपको कुर्ब व जवार के जलसा व मुनाजिरे में अक्सर भेजा करते थे और जाने से पहले हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा आपको वह खुसुसी नुकाता बताया करते थे जिसकी वजह से आप जहां गये हमेशा कामयाब रहे।

एक दफा लोगों ने हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा से दरयाप्त किया कि क्या वजह है कि आला हजरत अक्सर इन्हीं को जलासा व मुनाजिरा के लिए भेजा करते हैं तो आपने मुस्कुराकर फरमाया आला हजरत की निगाहे फैज असर मुस्तकबिल के परदों में झांक कर देख रही थी कि आने वाले वक्तों में इन्हें दुश्मनाने इस्लाम से किस तरह टक्कर लेना है इसलिए आपने उसके मुताबिक उनकी तरबियत फरमाई।

तअलीम की तकमील के बाद आप अजमेरे मुकद्दस हाजिर हुए वहां आपने तवील कयाम फरमाया कई चिल्ले किये और मुराकबा व मुशाहेदा की मुतअदिद मनाजिल तय किये, वहीं आपको मध्य भारत के लिए इशारए गैबी मिला जब वहां से आप बरेली तशरीफ लाए तो सरकार आला हजरत के खुसुसी इरशाद पर हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा ने आपको मध्य भारत में तबलीगे इस्लाम का मशवेरा दिया। गोया इस तरह से जो बात अजमेरे मुकद्दस में इशारों की जबान में की गई वह यहां शरह व तफसील के साथ आपके सामने आ चुकी

थी लिहाजा आप सबसे पहले अकलतरा जिला बिलासपुर तशरीफ लाए।

जिस वक्त आपने इस इलाके का दौरा फरमाया तो चन्द ही दौरों में ये बात दोपहर की धूप की तरह आप पर वाजेह हो गई है कि ये इलाका तअलीमी व तरबीयती एतेबार से निहायत पसमानदह और पिछड़ा हुआ है। इलाके की जहालत और कौमे मुस्लिम की जबूं हाली पर आपका कलेजा कांप उठा, पूरे इलाके में कहीं भी कोई पुरानी निशानी नजर नहीं आई जो इस्लामी आसार का पता दे। कुफरिस्तान में डूबा ये इलाका जहां न कोई मुस्लिम हेकुमत आई जो हुकुमती तदबीर व हिकमत से यहां की तारीकी दूर करती, न सुफियाए किराम और उल्माए उज्जाम काबिले जिक्र काफिला का गुजर हुआ जो अपनी नूरानी व इरफानी तजल्लियात से शबेदी जोर की जुलमतों को शरमाने वाली तारीकी का पर्दा चाक करते। अगर कभी कोई गुजरा भी तो उनकी रौशनी इतनी मध्धिम थी कि गिर्द व पेश को भी रौशन न कर सकी। आप हालात का जाएजा लेने और अपनी काम को आगे बढ़ाने की फिक्र में नये नये प्रोग्राम बनाते। एक दफा आप रतनपुर के पास एक गांव से गुजर रहे थे वहां आपने एक कब्र पर बांस देखा जो किसी ने गाड़ दिया था मालूम करने पर पता चला कि इस इलाके में कोई ऐसा आदमी नहीं है जो नमाजे जनाजा पढ़ा सकें लिहाजा ऐसे मौके पर लोग बतौर निशानी बांस गाड़ देते हैं। ताकि दिन दो दिन में कोई पढ़ा लिखा आदमी का गुजर हो तो कब्र ही पर नमाज जनाजा की अदायगी हो सके। इस तरह की रूहफरसा वाकेआत ने आपके दिल पर गहरा असर डाला। आपने एक तफसीली खत हुज्जतुल इस्लाम, शहजादए आला हजरत की खिदमत में इरसाल फरमा कर मशवेरा तलब फरमाया। उन्होनें हौसला बख्शते हुए आपको इलाका संभालने और मुसलमानों की जहालत दूर करने का मशवरा दिया।

इसी दौरान रायपुर में मुस्लिम लीग का एक अजीमुश्शान जलसा हुआ जिसमें यक गुना एख्तेलाफ के बावजूद एलाकाई हालात के पेशे नजर आपने शिरकत की। मोतअद्दि मुकर्रिरों के बाद जब आपका मौका आया तो आपने अंग्रेजों की मुखालिफत में एसी जोशीली तकरीर फरमाई कि पूरा इलाका आतिशे बगावत से सुलगने लगा। जिसके नतीजे में आपको 19 जुलाई 1922 ई. को दफा 144 ए के तेहत जेल की तारीक कोठरी में डाल दिया गया मगर आप वहां भी शमएं ईमान बनकर, जुफिशानी करते रहे यहां तक कि सैकड़ों गैर मुस्लिमों ने आपके दस्ते हक परस्त पर इस्लाम कबूल किया जिनमें मोतअदिद अंग्रेज भी शामिल थे।

जिस वक्त अदालत में आपसे माफी मांगकर छुटकारा हासिल करने के लिए कहा गया तो आपने निहायत जाह व जलाल के साथ जज को खिताब करते हुए इरशाद फरमाया।

मुझ पर इल्जाम है मजहब की तरफदारी का
देखिए कौन सो कानून सजा देता है मुझे

कुरआने अजीम का बंबागे दोहुल ऐलान है अती उल्लाह व अतीउररसूल व ऊलुल अम्रे मिनकुम अल्लाह की इताअत करो और अल्लाह के रसूल की इताअत करो और ऊलुल अम्र यानी हुकुमत वालों की अताअत करे। जो तुम में से यानी मुसलमानों में से हो फिर कोर्ट की तरफ इशारा करते हुए फरमाया न कि इस काफिर हुकुमत की, इस काफिर हुकुमत की। आप शेर की तरह दहाड़ रहे थे और जलाले फारूकी से एवाने हुकुमत लरज रहा था तख्त सल्तनत दहल रहा था। कोर्ट के अमले का कलेजा कांप रहा था इस दौरान कुछ मुखलेसीन ने हुकुमत से राह व रसम पैदा करके मामला की सुलह सफाई की कोशिश की आखिर कार

मामला माजरेत (माफी)पर आ अटका। मगर जब आपको पता चला तो आपने बुलन्द आहंगी से गरज कर फरमाया मुझ पर जो इल्जाम है व बिल्कुल सही व दुरूस्त है। मैं अब भी यही कहता हूं कि ये हुकुमत गासिब है। इस्लाम की मुल्क व मिल्लत की और पूरे देश की दुश्मन है। गोया जंगे आजादी के मुजाहिदे आजम फजले हक फारूकी खैराबादी ने अंग्रेजों को ललकारते हुए उस वक्त फरमाया था जबकि 1859 ई. में फतवा जिहाद की पादाश या जुर्म बगावत में गिरफ्तार करके उन्हें सीतापुर से लखनऊ लाया गया था और दौराने मुकदमा जज बार–बार कोशिश कर रहा था कि मौलाना अपने फतवा से रूजू कर लें ताकि मैं इन्हें बा इज्जत बरी कर दूं मगर खुदा का शेर अंजाम से बेफिक्र कैदो बन्द की सुउबतों से निडर हथकड़ी और जंजीरों से बेखौफ गरज कर यही कहता रहा कि वह फत्वा सही है और मेरा ही लिखा हुआ है और आज इस वक्त भी मेरी यही राय है (अनवोर रजा 462 पेज)

शेरे दक्षिण टीपु सुल्तान ने मैदाने जिहाद से गरजते हुए कौम को कभी पैगाम दिया था कि शेर के एक दिन की जिन्दगी गीदड़ की सौ साल की जिन्दगी से बेहतर है आज मोहसिने मिल्लत की शक्ल में अल्लामा फजले हक खैराबादी का जलाल और शेरे दक्षिण टीपु सुल्तान की ललकार पूरे घन गरज के साथ ऐवान अदालत में गूंज रही थी बिल आखिर आपको कैदे बा मुशक्कत की सजा सुनाई गई। कैदो बन्द की सऊबतों ने आप का इस्तकबाल किया जेल की तारीक कोठरी में आपको कैद कर दिया गया जहां कोड़े बरसाए गये, लाठिया चलाई गई, कत्ल की साजिशें की गई। मगर आप मसाएब व आलाम का मरदाना वार मुकाबला करते रहे और मुस्कुरा मुस्कुरा कर मुजाहिदीने आजादी को दावते फिक्र देते रहे।

बेड़ियां मुझको पहने में जरा भी जिल्लत नहीं

बाप दादा का तरीका सुन्नते सजाद है,

तौक व जंजीर और बेड़ियों की झंकार में कैद खाना की चहार दिवारी में आप कैद कर दिये गये मगर आपका पैगामे इस्लाम वहां भी गूंजता रहा और उसकी सौते सरमदी से कुफ्रो शिर्क के अलम बर दारों का कलेजा दहलता रहा।

हर रोज नमाजे तहज्जुद के बाद अजान व जमाअत के साथ नमाज की अदायगी और तिलावते कुर्रान और औराद व वजाइफ की जमजमा सन्जी और फिर उसके बाद वाज व नसीहत की महफिल ऐसी नहीं थी जो अपना असर नहीं दिखाती। धीरे–धीरे वहां के दरों दिवार भी उसकी तजल्लियात से जगमगाने लगे और दिलों की सियाही भी घुलने लगी। जो नाम के मुसलमान थे उन्होनें ईमान की नई तवानाई महसूस की और जो कुफ्र व शिक्र की तारीकियों में भअक रहे थे उन्होनें रौशनी की नई किरने महसूस की, देखते ही देखते ईमानी रौशनी से उनके तारीक दिल जगमगा उठे। यहां तक कि कुछ अंग्रेज भी आपकी दिल आवेज शख्सियत और इमान अफरोज सोहबत से फैजयाब होते हुए दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गये।

एक बागी मुजरिम का जेल की तारीक वादियों में शम्ए ईमां बनकर रौशनी बिखेरना और वह भी हुकूमते बरतानिया का मुजरिम। यह मामूली जुर्म नहीं था। नीचे से लेकर उपर तक हर किसी की नजरों में आप खारे मोगीलां (कांटे) की तरह खटकने लगे। जुल्मों सितम की आंधियां कुछ और बढ़ गई। मगर आप मुस्कुरा मुस्कुरा कर मसाइबो आलाम का मर्दानावार मुकाबला करते रहे।

मैं वो मजनू हूं कि जिन्दां के निगह बानों को

मेरी जंजीर की झंकार ने सोने न दिया।

आपके इमानी तवानाई का अन्दाजा इस वाकेआ से भीलगाया जा सकता हैं कि एक दफा कोई अंग्रेज अफसर जो अकलतरा में रेंजर होकर आया था।

अंग्रेजी हुकूमत थी बड़े–बड़े ताज व तख्त वाले जिनके जुल्मो सितम से लरज रहे थे। पूरा हिन्दुस्तान उनके साजिशी जाल में फंसा कराह रहा था। दिन का उजाला हो या रात की तारीकी हर जगह कौमे मुस्लिम की इज्जत व आबरू के लिए ईसाइयत की स्लेब लटकी हुई थी। हुक्काम वक्त मजलूमों की बेगोरो कफन लाशों पर अपनी बालादस्ती का झंडा गाड़ कर जश्ने फतह मना रहे थे। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हर जगह जुल्म व सितम का राक्षस कहकहा बुलंद कर रहा था। साहबे बहादुर के खिलाफ सोचना भी मौत को आवाज देना था। एक दिन आपको मालूम हुआ कि वही अंग्रेज रेंजर आयाते कुरआनी लिखे कागज में अपने कुत्ते को खाना खिला रहा है, जिसे देखकर मुसलमानों का दिल दहल गया, आंखों में खून उतर आया, मगर उसके सामने बोलने और टोकने की जुर्रत किसमें थी ? आपको जैसे ही पता चला आप फौरन उसके कमरे में घुस गये और बुलन्द आवाज से उसे डाटा मगर उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ बल्कि वह हुकुमत के नशे में सर शार आतिश बार निगाहों से आपको देखता रहा आखिर आपसे बरदाश्त न हो सका आपने उसका गरेबान थाम लिया अचानक सूरते हाल ये हो गई कि पूरा गांव उमड़ पड़ा। दूसरी तरफ पुलिस अफसरान भी जमा हो गये। उस वक्त अकलतरा में ठाकुर

राम विशाल सिंह का माना हुआ मशहूर व मारूफ खानदान था, इसी खानदान के एक होनेहार और मुल्क परस्त फर्द थे ठाकुर छेदीलाल बैरिस्टर जिनकी पूरे इलाके में जबरदस्त धाक जमी हुई थी। उन्होनें हुकुमत के अफसरान और पुलिस वालों को मामला की नजाकत और हजरत मोहसिने मिल्लत की अहमियत समझाई। बिल आखिर अंग्रेज बहादुर को झुकना पड़ा उन्होनें खुले आम आइन्दा मुसलमानों के जजबात से न खेलने का वादा किया।

12 दिसंबर सन 1923 को जेल से छूटते ही आपने अपने गिर्दो पेश का जायजा लिया, हमदर्दों और मुख्लिसों की भीड़ में सेंट्रल जेल रायपुर से आप का जुलूस रवाना हुआ फूलों की बरसात और नारा ए तकवीर की गूंजी में आपका जुलूस आगे बढ़ रहा था मगर आपके ख्यालात का काफिला माजी (भूतकाल) के अंधेरों को चीर रहा था। आपने महसूस फरमाया कि कौम की जहालत और इल्मी पसमान्दगी, दीन व मजहब से दूरी और आपसी रशाकशी ने उन्हें इस मकाम पर ला खड़ा किया कि आज उनमें अक्सर को इसका भी शऊर नहीं कि कल्मए तौहीद पढ़ने के बाद इस्लाम हमसे किन–किन चीजों का मुतालबा करता है ? इसका तकाजा क्या है ? और अपने मानने वालों में कैसा जजबा पैदा करना चाहता है। आपने वाजेह तौर पर महसूस फरमाया कि उनके वाले हाना जजबात और सरफरोशाना तमन्नाओं का सही इस्तेमाल नहीं किया गया तो फिर ये कौम हमेशा के लिए जहालत के बहरे जुलमत में डूब जाएगी।

एक तरफ कौम की ये नाजुक हालत और दीन से दूरी, दूसरी तरफ शुद्धी आंदोलन अपने राक्षसों को लेकर पूरे जोश व खरोश क साथ उम्मते मुसलमा को शिर्क व कुफ्र की

तारकीयों में दफन करने के लिए शब वो रोज नित नये साजिशी जाल फैलाता जा रहा है। पूरे भारत में इसकी हर्श सामानियों ने तूफाने बदतमीज बरपाकर रखा है। जिसने मिल्लते इस्लामिया के हर साहिबे बसीरत और दीन परवर शख्स को फिक्र मंद बना दिया। इस सिलसिले में ताजदारे अहले सुन्नत हुजुर मुफ्तिए आजमे हिन्द मौलाना मुस्तफा रजा खां साहब अलैहिर्रहमतो रिजवान के इस बयान से उस वक्त की सूरते हाल की नजाकत का अन्दाजा लगाया जा सकता है जिसे अखबार दबदबए सिकन्दरी ने शाए किया था अखबारे मजकूर लिख है –

साढ़े चार लाख मुसलमानों का इरतेदाद

जनाब मौलाना मौलवी मुस्तफा रजा खां साहब कादरी फरजन्दे दोम आला हजरत मुजद्दिदे दिनों मिल्लत मौलाना शाह अहमद रजा खां साहब किबला रहमतुल्लाह तआला अलैहे सातवीं जमा दिल आखिर को दफ्तर हाजा में तशरीफ लाए और ये वहशतनाक खबर सुनाई कि साढ़े चार लाख राजपूत मुसलमान जो आगरा मेरठ और देहली के इलाका में रहते हैं इस बात पर तैयार है कि हिन्दू मजहब फिर इख्तयार कर लें। (दबदबए सिकन्दरी 29 जनवरी 1923 पृष्ठ 3)

उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और पंजाब जहां मुसलमानों की तवील तारीख है, उल्माएं किराम व सुफिया ए एज्जाम का नाकाबिले शुमार सिलसिला है। औलियाए मिल्लते इस्लामिलया के तल अते जमाल से जहां के दरो दिवार रौशन व ताबिन्दा है इल्म व इरफान के बेशुमार चश्में जहां से उबल उबल कर एक दुनिया को फैजयाब कर रहे हैं वहां जब इस की हश्न सामानिया और फितना अंग्रेजियां इस

कदर खतरनाक सुरते हाल एख्तियार कर चुकी थी कि सैकड़ों हजारों नहीं बल्कि लाखों मुसलमान उनके साजिशी जाल में फंस कर दीन व ईमान से दस्त बरदार होने के लिए तैयार बैठे थे। चन्द शहर व देहात नहीं बल्कि पूरा सूबा का सूबा उनके साजिशी जाल में फंसता जा रहा था। तो मध्यभारत का क्या आलम होगा। खुसूसन इलाकए छत्तीसगढ़ और उड़ीसा में उनकी शर अंग्रेजियां किस शबाब पर होगी। जहां न इल्म का कोई चश्मा ए सय्याल था जहां से कौसरों तसनीम का धारा उबलता, न सुफियाए किराम और उल्माए उज्जाम का काबिले जिक्र कारवां था जो बेचैन व बेकरार रूहो को ईमानी जाह वजलाल और इरफानी शानो शौकत से मोअत्तर व मुनव्वर करता। न मुजाहिदी ने इस्लाम और मुबल्लेगीने केराम के काबिल असर दस्ता था जो तूफानों की जद में इस्लाम का चिराग जलाता। न ही इस्लामी हुकूमत का कोई काबिले जिक्र दस्ता था जो पस मुरदा रूहों और मायूस दिमागों में जोशे हैदरी और वलवला हुसैनी की तजल्लियां बिखेर कर उनके मुजाहिदाना किरदार व अमल और सरफरोशाना ललकार को तकवियत फराहम करता।

ऐसी हालत में मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ने गांव गांवों का दौरा किया। दिहात दिहात पड़ाव डाला। करिया करीया ईमानी आवाज पहुंचाई और शुद्धि आंदोलन के लरजा खेज ईमान शिकन तुफानों का निहायत कामयाब मुकाबला करके हजारों मुसलमानों को कुफ्र और इरतेदाद के फन्दे में न सिर्फ फंसने से बचाया बल्कि गैर मुस्लिमों को भी मुसलमान बनाकर दावतों तबलगी का मुकद्दस फरीजा अंजाम दिया। आपकी इस मुजाहिदाना किरदार, सरफरोशाना ललकार और बेमिशाल तदब्बुर व दूर अन्देशी की देखते हुए हुज्जतुल इस्लाम, शहजाद ए आला हजरत मौलाना हामिद रजा खां

साहब अलैहिर्रहमतों रिजवान फरमाया करते थे कि हामिद अली तुम मिल्लत के अनमोल नगीना हो। तुमने कुफ्रिस्तान में इस्लाम का चिराग जलाया।

नबीरए आला हजरत अल्लामा रेहान रजा खान साहब सज्जादा नशी खानकाहे रजविया बरेली शरीफ तहरीर फरमाते हैं कि आज लोग अपने को कलमा पढ़ाते है मगर ये वह शख्सियत थी जिसने गैरों को कलमा पढ़ाया।

इन हालात ने आपको कौम के मुस्तकबेल की तरफ खुसुसी तौर पर मुतवज्जा किया आपने महसूस किया कि आज मुलसलमानों की अकसरियत इल्म से दूर और तारीकी के दबीज परदों में लिपटी हुई गलत रवी का जबरदस्त शिकार है। अगर उन्हें संवारा नहीं गया तो हर उठने वाली तहरीक उन्हें अपना लुकमए तर समझने लगेगी।

आपने वक्त की नजाकत का एहसास करते हुए दीन के लिए एक मजबूत किला की जरूरत पर लोगों को मुतवज्जा फरमाया। आपकी हमां वक्त की अथक कोशिशों, शबो रोज की लगातार कुर्बानियां और बेमिशाल जद्दो जेहद के नतीजे में मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा आलमे वजूद में आया और जल्द ही इल्म व इरफान का उबलता हुआ वह चश्माए सय्याल बन गया जिसके फैजान का दरिया पूरे हिन्दुस्तान में नजर आने लगा। जिसकी इल्मी व इरफानी तजल्लियात से पसमुरदा रूहें नई जिन्दगियां पाने लगीं। तारीक दिल इल्मी रौशनी से जगमगाने लगे। मायूस दिमाग किरदार व अमल की तवानाई महसूस करने लगे और बुझे हुए कल्बो जिगर इश्के रसूल, अकीदते औलिया की हरारत व तपिश और गर्मी से सुलगने लगे।

ये इदारा अपने बानी के जेरे साया फूलों, की महक, कांटों की चुभन, दरियाओं की तेज तूफानों की हंगामा खेजी, चिरागे मुस्तफवी की रौशनी लिये शरारए बू लहबी से उल्झता, कुफ्र व शिर्क की तारीकियों में इश्के रसूल की तजल्लियात बिखेरता, बिदअत और गुमराही के तूफानों में कुर्आन व सुन्नत का चिराग जलाता, नजदीयत व वहाबियत की मजमूम फिजाओं में अकीदते औलिया की खुशबू बिखेरता ओर मुखालिफते इस्लाम की उमड़ती हुई आंधियों में इस्लाम का परचम लहराता, मंजिले मकसूद की तरफ बढ़ता रहा। आज उसके साये में न सिर्फ यतीम व गरीब बच्चों का मुस्तकबिल संवरता है बल्कि इंग्लो उर्दू हाई स्कूल के नाम पर दुनियावी तअलीम का चिराग भ मजहबी तकद्दुस के साया में लाता है। इसके अलावा टेक्नीकल इन्स्टीट्यूट, तिब्बिया कॉलेज, मरकजे किताबत वगैरह की मुतअदिद शाखें कही फूल फल रही है तो कहीं रौशनीबिखरने के लिए वक्त का इंतजार कर रही है।

15 अगस्त 1947 को हिन्दुस्तान आजाद हुआमगर आजादी की कीमत पर अंग्रेज हमें हमेशा के लिए दो हिस्सों में तकसीम करके नफरत व तअस्सुब की न बुझने वाली आग लगा गये। जिसमें नस्लें जलती रहेंगी।

एक तरफ पाकिस्तान आलमे वजूद में आया तो दूसरी तरफ पूरे हिन्दुस्तान में मुसलमानों के खिलाफ आतिश फेशां फूट पड़ा। उ.प्र., बिहार, बंगाल और राजस्थान वगैरह में खून की नदिया बहने लगी। सिसकती हुई आहें, घुटी हुई फरियादें और जलती हुई लाशें भारत का मुकद्दर बन गई। जिसके नतीजे में पाकिस्तान भागने का एक तांता बंध गया। जिस तरफ देखों बिस्तर बंद लोगों का एक काफिला नजर आता

जो घरों को उल्टे सीधे दामों में बेचकर लुटा लुटाया असासा कान्धों पर धरे स्टेशन की तरफ जाते नजर आते। ऐसे पुरआशोब और रिस्ताखेज दर्दनाक माहौल में कौम को संभालना, उन्हें दिलासा देना, उनकी ढारस बंधाना आसान काम नहीं था मगर आपने निहायत मुदब्बेराना और ठोस मंसूबों के साथ हालात का रूख मोड़ने का प्रोग्राम बनाया। जो लोग पाकिस्तान जा रहे थे उन्हें मुखातिब करते हुए आपने फरमाया –

सय्यदना आला हजरत फाजिले बरेलवी अलैहिर्रहमा व रिजवान ने बहुत पहले फरमा दिया था कि दुश्मन हमारे लिए तीन बातें चाहता है सबसे पहले हमारी मौत ताकि मआमला ही हमेशा के लिए खत्म हो जायें। अगर यह न हो उसके तो जेलावतनी चाहेगा ताकि पास ही न रहे। अगर यह भी न हो सके तो आखिर दरजे में आजिज व मजबूर बनाना चाहेगा। एकदफा तुम लोगों ने हिजरत करके देख लिया। (1)मगर उसमें सिवाये बरबादी के तुम्हें कुछ हाथ नहीं लगा। आज फिर तुम यहां से जाना चाहते हो। मगर जाने से पहले सोचो समझो कुछ फैसला करो। भारत की धरती पर हमने सदियों हुकुमत की है। देहली के लाल किला की बुलंद

.(1) गांधी जी के कहने पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने सारे मुसलमानों को हिन्दुस्तान छोड़कर हिजरत करने का फतवा दिया था। जिसके नतीजे में हज़ारों मुसलमान घर बेचकर अफगानिस्तान की तरफ हिजरत कर गये जिसमें सिवाए बरबादी व तबाही के उनके हाथ कुछ भी नहीं लगा। तफसील के लिए देखिए तहरीके खिलाफत पेज 139

(मोहम्मद अली)

पेशानी हमारी अजमतों की जीती जागती तसवीर है। ऐसी हालत में यहां से पाकिस्तान हिजरत करना सिवाये बर्बादी के कुछ नहीं।

एक जगह निहायत मुदब्बिराना और मुफक्किराना अंदाज में बिखरी हुई कौम को आवाज देते हुए इरर्शाद फरमाते हैं –तुम कहां जा रहे हो ? ख्वाजा की धरती तुम्हें पुकार रही है, मखदूम सिमना का रौजा तुम्हें आवाज दे रहा है। महबूबे पाक का आस्ताना तुम्हें याद कर रहा हे। तुम्हारे आबा वो अजदाद की हड्डियां तुम्हें ललकार रही है। ख्वाजा का आस्ताना छोड़

कर कहां जाओगे ? मखदूमें पाक का रौजा छोड़कर तुम सुकुन कैसे पाओगे ? मखदूम का साया छोड़कर तुम्हें कहां चैन मिलेगा ? सरकारे आला हजरत के फैजान से भाग कर तुम कैसे जी सकोगे

(हफ्ता रोजा हमार कदम देहल 17 जनवरी 1991 ई.) आपके पुर जलाल सदा ने बुझते दिलो में उम्मीदों की शमा रौशन कर दी, पज मुर्दा रूहों को नई जिन्दगी मिल गई। मफलूज दिल व दिमाग नई उमंगों से सरशार होकर आपके इशारे अबरू पर कुर्बान होने के लिए तैयार हो गये। वक्त की ललकार ने सैकड़ों उजड़ते घरों को बसा दिया। हजारों बहकते कदम थम गये। सदहा औरतें बेवा होने से और हजारों बच्चे यतीम होने से बच गये।

आपने न सिर्फ उन्हें ललकारा, उनके हौसलों को बुलंद किया, नई उमंगे और नया जज्बा अता फरमाया बल्कि भागने वालों को रोकने के लिए मोतअदिद्द टोलियां बनाई। जिनमें से एक गिरोह रेलवे स्टेशन पर मोतअय्यन था तो दूसरा बस स्टैण्ड पर निगरानी कर रहा था और आप खुद एक

गिरोह के साथ लोगों के घर पहुंचते। हालात मालूम करते। हिम्मत बंधाते। हौसला देते और भागने वालों का समझाकर यही जीने मरने का अहद लेते। आपकी इस मेहनत व जांफिशानी का नतीजा है कि इलाकए छत्तीसगढ़ उजड़ने और बर्बाद होने से न सिर्फ बचा है बल्कि सर जमीने रायपुर पर मुसलमानों की एक अजीम तादाद गांवों, देहातों में बिखरे मुसलमानों को आज भी हिम्मत व हौसला दे रही है।

सन् 1960 ई. का भयानक आलम हिन्दुस्तान की तारीख का निहायत दर्दनाक बाब है, जिसमें पूरा मुल्क फिरका वाराना फसाद की आग में जल रहा था। मालूम होता था कि जुल्म व सितम और कत्ल व गारत गिरी की सारी कहर मानी ताकतें एक साथ उमड़ पड़ी हो। मासूम व बेगुनाह बच्चों का कत्ले आम, दोशिजाओ की असमत दरी। माओं की गोद को सूनी करना बहुओं और बहनों का सुहाग उजाड़ना आम बात हो चुकी थी। पूरे मुल्क में इंतेहाई मायूसी और कसमपुरसी की हालत तारी थी। कौमो मिल्लत की मसिहाई तो दर किनार, रिस्त हुए जख्मों पर मरहम रखने वाला भी मुश्किल से दिखाई पड़ता था। ऐसे पुर आशोव और होश रूबा हालात में उस वक्त के अरबाबे फिकरो दानिश और असहाबे राये ने मुसमानों को एक प्लेटफार्म पर जमा करके उनके बुझते हुए हौसलों, दम तोड़ती तवानाई और मायूसी के समन्दर में डूबते हुए कुलूब को नई हिम्मत व तवानाई देने का मजबूत और मुस्तहकम मंसूबा तैयार किया। जिसके जरीए उनकी शिराजाबन्दी भी हो सके और उन्हें नया हौसला नया जोश और वलवला के साथ हालात का मरदाना वार मुकाबला करने का ठोस और मजबूततरीका भी दिया जा सकें इसके अलावा गांव और शहरों की सतेह से लेकर दिल्ली दरबार तक हर जगह उनका वजन भी महसूस किया जा सके।

इस सिलसिले में आपके साथ सैय्यदुल उलमा, हजरत मौलाना सैय्यद शाह आले मुस्तफा अलैहिर्रहमा मारहरा शरीफ, हजरत मोहद्दिसे आजमे हिन्द किछौछा शरीफ कायदे मिल्लत हजरत मौलाना शाह असरारूलहक साहब, पासबाने मिल्लत अल्लामा मुश्ताक अहमद निजामी साहब, गाजिये मिल्लत हजरत मौलाना सैय्यद मजहर रब्बानी साहब, रईसुल कलम हजरत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किबला का नामें नामी इसमें गिरामी काबिले जिक्र हैं जिन्होंने इन्ते हाई गौरो फिक्र और मुसलसल कई रोज की मेहनत व मशक्कत के बाद आल इंडिया मुस्लिम मुत्तहेदा महाज की शक्ल में एक ऐसी मजबूत तन्जीम की बुनियाद डाली जिसने बहुत जल्द मुल्क के तूल वो अर्ज में अपना अहम मकाम हासिल कर लिया और जल्दी ही दिल्ली दरबार भी उसकी धमक महसूस करने लगा इस तन्जीम ने जुल्म व सितम की तारीक रातों में अदल व इंसाफ का उजाला बिखेरा और नफरत व तअस्सुब की सियाह आंधियों में मुल्क के हर इलाका में खुलूस व मुहब्बत और अमन व शांति का चिराग जलाया।

इस तन्जीम के जनरल सेकरेटरी के लिए एक ऐसी मुदब्बिर, दूर अन्देश, बालिग नजर और बुलन्द हिम्मत सिकरेटरी की जरूरत थी जो अपने हुस्ने तदबुर और रौशन जमीरी से फिरका वारियत के उमड़ते हुए तुफानों का न सिर्फ रूख मोड़ दे बल्कि एवाने हुकुमत की आंखों में आंखे डालकर मुस्लिम मसाईल पर उन्हें सोचने पर मजबूर कर दे।

ऐसे मौके पर सारे उल्माए मिल्लते इस्लामिया की नजर बे साख्ता आपकी तरफ उठी और आपको मुत्तफिका तौर पर उसका जनरल सिकरेटरी मुन्तखिब किया गया और फिर जल्द ही लोगों को एहसास हो गया कि आपकी शक्ल में हमे एक ऐसी बुलंद कामत शख्सियत मिल गई जिसकी जात सियासी

बसीरत कायेदाना सलाहियत और दूरअन्देशी के साथ रौशन जमीरी फिकरी बालीदगी और इल्मी गहराई का हसीन संगम है।

रायगढ़, जबलपुर और जमशेदपुर से फसादात के मौके पर आपने जिस बुलंद हिम्मती, उलुलअजमी और रौशन जमीरी का मुजाहिरा फरमाया, कलेक्ट एस.पी. वगैरह से लेकर देहली तक जिस तरह आपकी धन गरज पहुंची वह तारीख दावत व अजीमत का रौशन व ताबनाक बाब है।

देश के पहले वजीरे आजम पं. जवाहर लाल नेहरू जी निहायत अदब व एहतराम के साथ आप पर हमेशा ऐतमाद किया करते थे – चुनाचें 1952 ई. में जब उन्होनें फूलपुर जिला इलाहाबाद का पहला इलेक्शन लड़ा तो आपको अपना इलेक्शन इंचार्ज बनाया। वो अपने हर जलसे में आपकी मौजूदगी को खास अहमियत देते थे।

अखबार लीडर की इशाअत 31 जनवरी 1952 की इस रिपोर्ट से उसका कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है।(1)

नोट – हज़रत मोहसिने मिल्लत की सियासी तफसीलात के लिये दूसरा हिस्सा मुलाहेजा फरमायें। जिस में आप की मुकममल सियासी तारीख, आला हज़रत फाजिले बरेलवी की सियासी बसीरत, तहरीके तर्के मवालात, तहरीके खिलाफत, तहरीके गाउ कशी की तारख, इमाम अहमद रज़ा का तदब्बुर, सदरूल अफाजिल का मुजाहिदाना किरदार, शेर बिशए अहले सुन्नत की इमानी ललकार, शैखुल मशाएख हज़रत अशरफी मीयां अलैहिर्रहमा, ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफ्ती ए आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमा, मखदुमुल मिल्लत हुजूर मोहद्दिसे आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा का इमानी जलाल, आल इण्डिया सुन्नी कान्फेंस मुरादाबाद मुअकिदा 1925 ई. और ऑल इण्डिया सुन्नी कान्फेंस बनारस मुअकिदा 1946 ई. की तफसीलात, जंगे आज़ादी, तकसीमे हिन्द उसके असबाब और अमल व रद्दे अमल वगैरह पर मुश्तमिल होगा। (मोहम्मद अली फारूकी)

ANOTHER ELECTION MEETING OF THE CONGRESS WAS HELD AT MINHAJPUR UNDER THE PRESEDENT CHIEF OF SHRI NIZAMUDDIN AMONG THOSE WHO SPOKS AT THE MITTING WERE SHRI LAL BHADUR SHASHTRI. sHRIMATI INDIRIA GANDHI AND MAULANA HAMID ALI RAIPUR (31.01.1952)

इंतेखाब की दूसरी मिटिंग जनाब निजामुद्दीन साहब की सदारत में मिनहाजपुर में हुई। इस मिटिंग को जनाब लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी मौलाना हामिद अली रायपुरी ने खिताब फरमाया दैनिक भारत इलाहाबाद 30 जनवरी 1952 ई. की रिपोर्ट भी इस सिलसिले में काबिले जिक्र है।

कौमे मुस्लिम के तआल्लुक से किसी भी फैसले से पहले वह आप से अक्सर राबता कायम करते। तकसीम हिन्द के बाद मुसलमानों पर जो इनहेतात व तनज्जुली तारी हुई। बातिल परस्तों ने जिस तरह मिल्लते इस्लामिलया को जिन्दा दरगोर करने का नापाक मन्सूबा बनाया। उसका जवां मर्दी से मुकाबला करना। उसे नाकाम बनाना और उजड़े हुए बेखानुमा व बरबाद मुसलमानों को नई जिन्दगी शुरू करवाने में आपने कई बार सीधा नेहरू से गुफ्तगु की।

रईसुल कमल हजरत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब फरमाते हैं कि सन् 1960 इ. में जब आल इंडिया मुस्लिम मुत्तेहिदा मोहाज के जेरे साया कुल हिन्द सुन्नी औकाफ कान्फ्रेंस परेड ग्राउन्ड देहली में मुनअकिद हुई और हम लोगों ने एक वफद (ग्रुप) के साथ प्राइम मिनिस्टर पंडित

जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात करके उन्हें बताया कि पूरे मुल्क में अहले सुन्नत की तादाद नब्बे फीसद से ज्यादा है। इसके बावजूद आपने जमीअतुल उल्मा को सुन्नी औफाक का मालिक बना दिया है जिसे वह अपनी मरजी के मुताबिक खुर्द बुर्द करते रहते है दौराने गुफ्तगु नेहरू जी ने कहा कि तकसीमें हिन्द के वक्त सारे लोग मुस्लिम लीग के साथ हो गये थे मगर जमीअतुल उल्मा हमारे साथ थे। आज अपनी हुकुमत में हम उसे कैसे नजर अंदाज कर सकते हैं। हजरत अल्लामा साहब फरमाते है कि नेहरू जी का इतना कहना था कि हजरत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का जलाल देखने के लायक था। वक्त के वजीरे आजम को ललकारते हुए आपने फरमाया कि नेहरू जी अगर आपको उनका इतना ही ख्याल है तो आप क्यों नहीं अपने मकान के किसी कोने में उनके लिए कोई ऑफिस खोलकर उन्हें रख लेते। मगर मुसलमानों की वक्फिया जायदाद को इस तरह बर्बाद न कीजिए वर्ना इसका अंजाम सही नहीं होगा।

इस तरह जब जमशेदपुर में 1962 में कश्मीर कांफ्रेंस हजरत अल्लामा अरशदुल कादरी सहाब किबला की सरबराही में हुई थी उस मौके पर आपने कश्मीर के ताअल्लुक से हिन्दुस्तानी मौकफ की जिस तरह तरजुमानी की उसने अरबाबे दानिश के हैरतजदा कर दिया।

रायगढ़ फसाद के मौका पर भी आपने महसूस फरमाया कि फिरका परस्त इस आगे को पूरे छत्तीसगढ़ में फैलाना चाहते है। उस वक्त आपने इन्तेहाई मुदब्बेराना अन्दाज में प्रेस कांफ्रेंस ली और उसके जरिए तमाम मुसलमानों को निहायत सब्र व तहम्मुल से रहने की तलकीन करते हुए उसे हिन्दुस्तान का अटूट अंग बताया। जिसे पढ़कर कई लोग बर

अफरोख्ता हो गये और आपसे सवालात करने पहुंच गये इस सिलसिले में फसीहुल लेसान हजरत मौलाना एजाज साहब कामटवी इर्शाद फरमाते हैं कि जब लोगों ने आपसे अखबार को दिये गये बयान के बारे में पूछा तो आपने मुस्कराते हुए फरमाया अगर मेरे इस बयान से रायगढ़ की भड़कती हुई आग बुझ सकती है, हजारो मासूम व बेगुनाहों का खून बहने से बच सकता है तो इसमे ं बुरा क्या है ?

बाबरी मस्जिद पर जब ताला पड़ा और कश्मीर का मसला पूरे मुल्क के लिए नासूर बन गया उस वक्त भी नेहरू जी से आपकी मुलाकात और उन मसाइल पर इजहारे ख्याल और फिर नेहरू जी से आपकी मुलाकात और फिर नेहरू जी का आपकी हर गुफ्तगु पर खुसूसी तवज्जा देना आपकी सियासी बसीरत, दीनी गैरत, कौमी हमीयत और कायदाना सलाहियतों की मुंह बोलती तस्वीर है।

जब बाबरी मस्जिद पर ताला पड़ा तो आप बेचैन हो उठे। इस साजिश की आड़ में कौमे मुस्लिम की तबाही व बर्बादी और उन्हें मजहब वो मिल्लत से दूर करने का शैतानी मन्सूबा आपकी निगाहों में घूम गया आपको ये समझते देर न लगी कि ये तो पहला वार है अभी बेशुमार वार उन्हें बर्दाश्त करने पड़ेंगे। हिन्दुओं के साजिशी प्लान ने आपको लरजा दिया उके खौफनाक इरादों ने आपको बेचैन कर दिया। आपने न सिर्फ नेहरू जी को एक दुख भरा तार दिलवाया बल्कि खुद उनसे मुलाकात करके उन्हें मुसलमानों की बेचैनी और गम व गुस्सा से आगाह फरमाया (बाबरी मस्जिद तारीख के आइन में सफा 24) आपने एक तरफ अरबाबे हुकुमत को ललकारा तो दूसरी तरफ कौमे मुस्लिम को झिझोंड़ते हुए फरमाया ।ये सिर्फ एक मस्जिद का मसला

नहीं है। बल्कि पूरी मिल्लत की बका का सवालहै फितना पर्दा जो ने सिर्फ मस्जिद में ताला नहीं डाला। बल्कि कौमे मुस्लिम की किस्मतों पर ताले डालने का प्लान बनाया है हमारे रौशन किरदार को दागदार बनाने का शैतानी मंसूबा है। जिसकी ये इबतदाई कड़िया है। ऐसे पुर आाशेब मौका पर भी कौमी शउर बेदार नहीं हुआ, आपसी इख्तिलाफात नहीं मिटे तो वह दिन दूर नहीं जबकि गरनाता और इस्पेन की तारीख यहां भी दुहराई जायेगी, जहां 1492 ई. तक इस्लामी अजमतों का परचम लहराता रहा। तकवा वो तहारत की तजिल्लियात रक्स करती रही और इल्मी व फिकरी कयादत से अहले यूरोप का तारीक मुकद्दर जगमगाता रहा मगर फिर मुसलमानों की आपसी रंजिश और खाना जंगीयों ने वह दिन भी दिखा दिया कि वहां की मुस्लिम आबादी मकतल में तब्दील कर दी गई और कोई उन बेगोरो कफन लाशों पर आंसू बहान वाला भी नहीं थी। क्या वही तारीख यहां भी दोहराई जायेगी ? क्या इसलिए हमने कैदोबन्द की सऊबतें बर्दाश्त करके इसे आजाद कराया था ? क्या इसीलिए हमारी मांओं की गोदें व बहनों का सुहाग उजाड़ा गया था कि सुल्तान टीपू, सिराजुद्दौला और बहादुर शाह जफर ने नारए हुर्रियत व आजादी की अमीन व निगेहबान कौम अजानव नमाज तक से महरूम हो जाएं ?

(हफ्ता रोजा हमारा कदम देहली 17 जनवरी 1991)

आज बाबरी मस्जिद शहीद हो चुकी है, बंबई की धरती में सड़कों पर नमाज की पाबंदी लगाने की कोशिश हो रही है और फिरका परस्त ताकत निहायत दिलेरी और बेबाकी से हर मोहाज पर मिल्लत इस्लामिया को ललकार रही है। गोया हजरत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ने चालीसा और पैंतालीस

साल पहले जिन खतरात की तरफ कौम को मोतवज्जा किया था आज वह पैकरे महसूस में नजर आ रहे हैं।

आपकी मामला फहमी और मौका की नजाकत का एहसास, कौमों मिल्लत की सही नब्बाजी का अंदाजा इस वाकेआ से भ बा आसानी से लगाया जा सकता है कि एक दफा ईद मिलादुन्नबी के जुलूस के मौके पर चंद नौजवान लड़कों ने जैन समाज के रहनुमा आचार्य नाना लाल साहब के नाम पर बैनर ट्रक पर बैठकर फाड़ दिया। जिससे अचानक पूरे जुलूस में खलबली मच गई। उनके अकीदत मंद लाठी और तलवार लेकर ट्रक के नीचे लेट गये। सूरते हाल इतनी बिगड़ गई कि पूरे इलाके में फसाद भड़क उठने का खतरा उमड़ने लगा। आपने निहायत तेजी से पलटकर आचार्या जी से मुलाकात की और जुलूस की अहमियत, इस्लाम की भाईारगी, रसूल पाक का पैगामे अमनो मसावात पर निहायत उम्दा और मुख्तसर अंदाज में रौशनी डालते हुए चंद ना समझ नौजवानों की उस कारस्तानी का जिक किया। कहते हैं कि जिस वक्त आपने इस्लाम के मसावात और भाई चारगी पर रौशनी डाली आचार्य जी की आंखों में आंसू आ गये। उन्होनें अपने अकीदतमंदों को जो रास्ता रोके ट्रकों व बसों के सामने खड़े और लेटे थे निहायत सख्ती से रोका जिसके नतीजे में एक उठाता हुआ तूफाने बदतमीजी अचानक थम गया और जब वहां से आप रूखसत हुए तो उन्होनें अखबारी नुमाइन्दों के सामने बयान देते हुए कहा जिस संप्रदाय (फिरका) के रहनुमा इतने उत्साही तथा दूरदर्शी हों (उमंगो से भरपूर और दूर अंदेश) वह धन्य (काबिले मुबारकबाद) है।

(रोजानामा नई दुनिया हिन्द रायपुर म.प्र.

28 फरवरी 1967)

जिस वक्त ताजदारे छत्तीसगढ़ मंसूबे मजजूबे कामिल हजरत बाबा सैय्यद इंसान अली अहैहिर्रहमा यानी (लुतरा वाले बाबा)ने मजजतूबाना रविश से हटकर मुजाहिदाना तेवर दिखाया और एक मूर्ति को पीट दिया जिससे पूरे इलाके में हेजानी कैफियत तारी हो गईं। एक तरफ हजरत बाबा के अकीदत मंदों का जत्था दूसरी तरफ बातिल परस्तों का जम्मेगफीर। दोनों लड़ने मारने पर आमादा। ऐसे मौके पर आपने जिस तदब्बुर और दूर अंदेशी का जलावा दिखाया उसने पूरे इलाके को जलने से बचा लिया। अकीदतों ऐहतराम के ऐतेबार से हजरत बाबा से सभी लगाव रखते थे, लिहाजा आप निहायत तेजी के साथ अपने चंद हमराहियों के साथ जाये वारदात पर पहुंचे। देखा कि नफरतों इंतेकाम की आग में सभी सुलग रहे हैं। हर कोई तैश में भरा गमों गुस्सा में एक दूसरे पर गालियों की बौछार कर रहा है। मगर जब आप वहां पहुंचे अचानक सारे मजमा पर सन्नाटा छा गया। मौका की नजाकत देखकर आपने एक गैर मुस्लिम से पूछ लिया कि बाबा कौन है जानते हो ? उसने जल्दी में कह दिया कि वो भगवान समान (की तरह) है ये सुनते ही आपने मूर्ति की तरफ इशारा करते हुए बर जस्ता फरमाया ये भी तुम्हारे नजदीक भगवान है और वह भी तुम्हारे नजदीक भगवान। फिर तो ये भगवानों की लड़ाई लगती है ये मामला उन्हीं क सुपुर्द करो वो खुद ही समझ लेगें। सामने वाला लाजवाब हो चुका था बात दिलों में उतर चुकी थी मगर सीने का गम अभी भी हल्का नहीं हुआ था एक गैर मुस्लिम अकीदतमंद ने बहते हुए पेशाब की तरफ जो बुत के पास ही था इशारा करते हुए आपको उसकी तरफ मुतवज्जा किया कि बाबा ने न सिर्फ इसे पीटा बल्कि वहां पेशाब भी कर दिया। सूरते हाल फिर अचानक तशवीसनाक होने लगी मगर फौरन ही आपकी नजर पास में बकरी की मेंगनी पर पड़ी। बकौल शेखुल इस्लाम हजरत मौलाना मदनी

मियां साहब किबला (कछौछा मुकद्दसा) आपने फरमाया कि पहले ये तो डॉक्टरी करवाओ के ये पेशाब किस का है ? ये मेंगनी तो कुछ और ही बता रही है ? आपकी इस बर महल दूर अंदेशी ने सभों के जेहन को असल मसला से हटाकर दूसरी तरफ मोतवज्जा कर दिया। हर साहिबे फिक आपके इन्हीं दो नुकतों पर पूरे मजमा को काबू करने में लग गया और देखते–देखते नफरतों का तूफान थम गया। फसाद का बनता हुआ माहौल बिगड़ गया। सभी ने महसूस किया कि आपक हुस्न तदब्बुर, हाजिर दिमागी और मौका शनासी को उजड़ने बचा लिया।

शहजादए गौसुल वरा, सरताजे माहरारह, सैय्यदुसादात हजरत मौलाना सैय्यद शाह हसन मियां साब किबला, सज्जादानशीं माहरारह मुकद्दसा फरमाते हैं। उनकी बुलंद हिम्मती व जफाकशी और बेबाकी मिल्लत के लिए सरमाए इफ्तेखार हैं। कुतुबे रब्बानी, ताजुल, आरेफीन, शहजादए महबूबे सुब्हानी हजरत मौलाना सैय्यद शाह मोहम्मद अली हुसैन साहब अशरफी मियां अलैहिर्रहमा किछौछा मुकद्दसा ने जोश हुसैनी, वलवलए हैदरी, इमानी तवानाई और खिदमते दीन का बेमिसाल जज्बा देखकर फरमाया था कि आपकी जबान में खुदा ने वह तासीर दी है जो पल भर में लोगों को अपनी तरफ खींच लेती है आप जिस इलाके में पहुंच जायेंगे इस्लाम का बोलबाला होगा और आपके रहते दुश्मनों की कोई साजिश कामयाब नहीं हो सकती।

(खजाना नूरे इस्लाम सफा 3)

जलालतुल इल्म, उस्ताजुल उल्मा, सैय्यदी हुजुर हाफिजे मिल्लत (बानी अल जामिया अशरफिया मुबारकपुर) आपकी बुलंद हौसलगी और आली हिम्मत को दाद देते हुए फरमाते थे –

कौम की सही नब्बाजी और सियासी दूर अंदेशी का आप पैकर और हुजूर आला हजरत के फैजान की चलती फिरती तस्वीर थे–इस वीरान और उजाड़ इलाका में आपने जिस मेहनत व कुर्बानी के साथ इस्लामी पैगाम पहुंचाया वह खुद अपनी मिसाल आप है।

गर्ज कि मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा की पूरी जिंदगी कौमी अजमतो वेकार की जीती जागती तस्वीर थी। रौशन व कुशादा पेशानी में इश्के रसूल की तनवीर, लबों पर अजमते औलिया की तफसीर, कल्ब व जिगर में रूहे बेलाली और वलवलए हुसैनी की ताबीर, कौमी बुलंद व अरजमंदी के लिए बेकरारी– आखेरत की बाज पुर्स पर गिरया व जारी और मुल्क व मिल्लत की तअमीर व तरक्की के लिए मंसूबाबंदी का हसीन संगम थी आपकी जाते गिरामी। जहां से मुजाहिदाना किरदार व अमल की परिवरिश होती है – सरफरोशाना ललकार की घन गरज सुनाई देती है और दुनियाएं किरदारों अमल में कहकशां का जमाल मुस्कुराता है।

सियासी बसीरत, मुजाहिदाना ललकार, सरफरोशाना किरदार के साथ साथ कलन्दराना रिफअत और सुफियाना किरदार व मिजाज के भी आप परतव थे। औलियाए किराम के फ्यूजों बरकात के साथ जहां आपको सरकारे आला हजरत, अजीमुल बरकत, फाजिले बरेलवी रदिल्लाह तआला अन्हो से खिलाफत व इजाजत हासिल थी वहीं कुतुबे देवा हाजी वारिस अली शाह, गुल गुलजारे, अशरिफयत अशरफ मियां सज्जादानशीन अजमेरे मुकद्दस, सरकार माहेरहरा सय्यद शाह हैदर हुसैन मियां, कुतुबे दक्ष्झिण हजरत शाह अब्दुल अजीज इर्फाना हैदराबाद, ताजुल औलिया नागपुर जैसी अजीम व जलील हस्तियों से भी आप मुस्तफीज हुए। जिन्होंने अपने करमे खुसरवाना से आपके निहा खानाए कल्ब

वजिगर को इस तरह जगमगाया कि वह औलिया ऐ किराम के फ्यूज व बरकात का जलवाए जेबा और अनवारो तजल्लियात का मिनारए नूर बनकर इश्क व इरफान और तकवा व तहारत की किरणें बिखेरने लगा।

सन् 1967 ई. जलालतुलइल्म, उस्ताजुल, उल्मा हुजूर सैय्यदी हाफिजे मिल्लत अलैहिर्रहमा के साथ आपने हज्जे बैतुल्लाह का मुकद्दस फरीजा अंजाम दिया। ऐन जहाज छूटने से चंद घंटे कबल जब हुजुर हाफिजे मिल्लत अलैहिर्रहमा के बगैर फोटो के हज पर जाने के सिलसिले में कुछ रूकावटें आई तो उस वक्त आप के मुल्क के वजीरे खारजा राजा दिनेश सिंघ से सीधा राब्ता कायत फरमाकर जो कोशिशें की वह आपके सियासी दबदबा और हुक्कामे आला से रब्त व जब्त की रौशन मिसाल है।**एहसासे अमल की चिंगारी जिस दिल मे फिरोजां होती है।उस लब का तबस्सुम हीरा है उस आंख का आंसू मोती है।**

25 अप्रैल 1968 ई. मुताबिक 26 मोहर्रम 1388 हिजरी को मुजाहीदाना किरदार व अमल, मुदब्बिराना फिकरोनजर और एख्लास व मोहब्बत की ये अजीम व जलील हस्ती हमेशा के लिए हमेशा रूखसत हो गई। रायपुर की मशहूर व मारूफ (प्रसिध) दरगाह सैय्यदाना हजरत फातेह शाह साहब रहमतुल्लाह अलैह के मजारात के दरमियान आपका मजार मरजए खलाईक बना फयुजो बरकात की तजल्लियात बिखेर रहा है।

एहसासे अमल की चिंगारी जिस दिल में फिरोजां होती है उस लब का तबस्सुम हीरा है उसआंख का आंसू मोती है।

वलीए कामिल आरिफे बिल्लाह

हजरत मोहसिने मिल्लत और उनकी करामतें

अजः— कारी मोहयुद्दीन अशरफी अदीब

हजरत मोहसिने मिल्लत मौलाना हामिद अली साहब फारूकी अलैहिर्रहमा ने जहां फैजाने आला हजरत के साए में इल्मी व फिकरी पाकीजगी हासिल की थी। वहीं आपका मुबारक दिल औलिया अल्लाह की बरकतों से मालामाल भी था। बड़े—बड़े बुजुर्गाने दीन से आपने फैज हासिल किया था। खुसुसन आला हजरत इमाम अहमद रजा खां फाजिले बरेलवी अलैहिर्रहमा ने न सिर्फ करम से नवाजा बल्कि अपनी खिलाफत व इजाजत से भी फैजियाब किया जैसा कि प्रोफेसर मजीदुल्लाह कादरी (पाकिस्तान) खुलफाए आला हजरत में फरमाते हैं, इसके अलावा तजकिरह उल्माए अहले सुन्नत में भी जिसकी तफसील देखी जा सकती है। जिस तरह हजर मोहसिने मिल्लत को आपने संवारा और निखारा। उसका ही फैज था कि आप अजीम मुफ्ती, बा सलाहिय्यत मुदर्रिस बा वेकार खतीब और अजीम सियासी सूझबूझ के हामिल थे। इनके अलावा हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रजा खान साहब, शहजादए सिमनां आला हजरत अशरफी मियां साहब, उनके बिरादरे बुजुर्गवार, कुतुबे वक्त हजरत शाह अशरफ हुसैन साहब, कुतुबे देवा हजरत वारिस पिया, नाजिशे माहरहरा हजर सैय्यद शाह आले मुस्तफा साहब, कुतुबे दाक्किन शाह अब्दुल अजीज साहब, इरफानी, सज्जादानशीन अजमेरे मुकद्दस और गद्दी नशीन हजरत साबिर पिया जैसे अजीम व जलील हस्तियों ने भी आपको अपने खुसुसी फ्यूज व बरकात से नवाजा। इसका ही ये नतीजा था कि आप न सिर्फ मुबल्लिगे इस्लाम और

मुजाहिदे इस्लाम बनकर चमके बल्कि वक्त के वलीए कामिल और आरिफे बिल्लाह भी बनकर महकने लगे।

इलाकए छत्तीसगढ़ को संवारने, शुद्धि आंदोलन और हिंदुस्तान की तकसीम के वक्त पाकिस्तान और हैदराबाद भागने से लोगों को बचाने में आपका जहां मुजाहिदाना किरदार दिखता है वहीं लोगों के कुलूब का इश्के रसूल की महक से महकाने के लिए कश्फ वो कराता की रौशनी भी नजर आती है।मदरसाइस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा तो आपकी जिंदगी और रूह थी, लिहाजा दुनिया से जाने के बाद भी कई लोगों ने आपको यहां आते ओर इसकी हिफाजत करते देखा।

23 सितंबर 1981 की तारीख थी, बुध का दिन गुजार कर शबे जुमरात मदरसा के एक ताबिले इल्म अ. रहमान पेट के दर्द से बेचैन था, इत्तेफाक से रात काफी गुजर जाने की वजह से सभी सो चुके थे वोह तन्हा पेट के दर्द से कराह रहा था और बड़ी बेचैनी से सुबह का इंतजार कर रहा था। अचानक रात 2 बजे उसने महसूस किया कि पूरा कमरा खुश्बू से महक रहा है, इतने में किसी ने उसकी चादर हटाई, उसने देखा कि कोई इन्तेहाई नूरानी चेहरे वाला सर में वारसी साफा बांधे उसके पास खड़ा उसकी नब्ज देख रहा है। नब्ज देकने के बाद उन्होने पेट पर कुछ पढ़कर दम किया और मोहब्बत भरे लहजे में मुस्कुराते हुए फरमाया कि अब कैसे हो, लड़के ने महसूस किया कि न सिर्फ दर्द गायब हो चुका है बल्कि एक रूहानी सुकुन से उसकी सारी बेचेनी भी दूर हो चुकी है। सुबह जब उसने मरहूम रियाजुद्दीन साहब और अपने असातेजा से उसका जिक किया और उन्होंने जब आने वाले की शक्ल व सूरत और हुलिया मालूम किया तो पता चला कि वह हजरत मोहसिने मिल्लत की ही जात थी।

इस तरह का एक वाकया इस वक्त पेश आया जब सैय्यद रौशन अली साहब इंचार्ज मोहतमिम थे, गालिबन 1971 ई. की बात है, हासिदों की रेशा दवानियों और मुखालेफीन की तोहमत तराशियों से मदरसा के खिलाफ हर रोज एक नया माहौल बन रहा था, जिसकी वजह से मदरसा की आमदनी भी मोत अस्सिर हुई, एक तरफ खर्च की ज्यादती, दूसरी तरफ आमदनी की कमी ने सारे अराकीन को फिकमंद बना दिया था। रात ग्यारह बजे का वक्त रहा होगा, अचानक मोईनुद्दनी साहब एम.ए. जो जनाब कसीमुद्दीन साहब के साहेबजादे हैं उन्होंने मदरसा के आफिस मं जो हजरत मोहसिने मिल्लत की कयाम गाह भी थी मशरिकी आलमारी के दरवाजे पर देखा कि हजरत मोहसिने मिल्लत रौनक अफरोज हैं और उनसे फरमा रहे हैं कि मेरे बच्चे कई दिन से कुछ अच्छा खाया नहीं है। जनाब मोईनुद्दीन साहब फरमाते हैं कि इतना कहने के बाद आपकी शबीह मुबारक नजरों से गायब हो गई, उन पर सकता तारी होगया, हजरत के अल्फाज बार–बार कानों में गूंजते रहे। उन्होंने जनाब सैय्यद रौशन अली साहब से हालात मालूम किये और उसी वक्त दुकान खुलवाकर बेहतरीन मिठाई मंगवाई, फातेहा दिवाई और बच्चों में तकसीम किया। इसी एक वाक्या ने उनमें इन्केलाब बरपा कर दिया, न सिर्फ मदरसा में मुस्तकिल उनकी आमद व रफ्त कायम हो गई बल्कि धीरे–धीरे वह खुद भी शरीअत ले गए मगर उसकी तैयारी दो साल से चल रही थी, 1966 ई. में तो आपने फारम भी भर दिया मगर कुरआ अन्दाजी में आपका नाम न आने की वजह से आपको इतना शदीद एहसास हुआ कि दिल का दौरा पड़ने लगा, इश्के रसूल की सुलगती हुई आग की तपिश इतनी बढ़ गई कि आपके पास बैठने वाला भी उसकी गर्मी महसूस करने लगता। सारा वक्त मक्का की याद और मदीने की बात में गुजरने लगा।

आप उस साल तो न जा सके मगर जो लोग वहां गये उन्होनें आपको मुतअद्दि मकामात पर देखा। कभी मिजाबे रहमत के नीचे आप दुआ कर रहे हैं तो कभी मुकामें इब्राहिम के पास नमाज पढ़ रहे हैं। देखने वालों ने सोचा कि शायद आप हवाई जहाज से आ गय होगें। वापसी पर जब वो लोग आपसे मिलने मदरसा आए तो पता चला कि आप तो गये ही नहीं, जिसे सुनकर लोग हैरत में पड़ गये और सुनने वाले ताज्जुब करने लगे, मगर बोलने वाले कसम खा खा कर अपने बयान का यकीन दिला रहे थे। जनाब कामिल साबह कहते हैं कि एक दफा रमजानुल मुबारक का मुबारक महीना था उस रात उन्होंने हजरत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा के नाम खुसुसी फातेहा का एहतेमाम किया था। रात देर से सोने की वजह से ऐन सेहरी क वक्त गहरी नींद लग गयी अचानक उन्होंने दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनी। जब उन्होंने दरवाजा खोता तो देखा कि हजरत सामने तशरीफ फरमा है और फरमा रहे हैं कि कामिल मियां सेहरी का वक्त गुजर रहा है। जल्दी सेहरी कर लो। ये फरमा कर आप आगे कदम बढ़ाने लगे, कामिल साहब ने आवाज दी कि आप भी सेहरी कर लें आपने फरमाया मुझे जल्दी जाना है ये कहकर आप आगे बढ़ गये। आपके जाते ही अचानक कामिल साहब को ख्याल आया कि हजरत तो दुनिया से रूखसत हो चुके हैं, यह ध्यान आते ही वह तेजी से आगे बढ़े मगर बाहर अब कोई भी नहीं था, सिर्फ एक खुशबू थी। जिससे दरवाजा महक रहा था।

गोहपारू के कलीमी बाबा रहमतुल्लाह तआला अलैह के खलीफा व मुरीद अब्दुल सलाम सा. कलीमी सदर जामा मस्जिद शहडोल कहते हैं कि जब शहडोल में वहाबियत का गलबा बढ़ता जा रहा था, मोलवी विलायत हुसैन वहाबियों का

सरगना बना जामा मस्जिद को हड़पना चाहता था, उस वक्त लोगों ने आपको बुलाया, आपने मुतअद्दि जलसे किये और वहाबियत से मकरूह चेहरे से लोगों को बा खबर किया, आपकी शानदार तकरीर सुनकर कई लोग सुन्नी बन गये, एक दिन आपने भरे जलसे में एलान फरमाया कि रलूले पाक सल्लाल्लाहो अलैहे वसललम की शाने अकदस में गुस्ताखी की वजह से सारे उल्माए अरब व अजम ने उन पर कुफ्र का फत्वा लगाया है, और इसी गुस्ताखी की वजह से उनकी कब्रों में आग और सांप भरे रहते हैं जिसे यकीन न आए कल मेरे साथ कब्रस्तान चल और चलकर अपनी आंखो से देख ले। दूसरे दिन बहाबी तो डर के मारे घर ही से नहीं निकल लेकिन मैं और शहर के मोतअदिद लोग हजरत के साथ कब्रस्तान पहुंचे। हजरत ने एक वहाबी की कब्र के पास खड़े होकर कुछ पढ़ा और मुझसे फरमाया कि देखो क्या दिखाई देता है, मैने अर्ज किया कि अभी तो कुछ नहीं दिख रहा है। तब हजरत ने फिर कुछ पढ़कर मुझ पर दम किया, तब मैनें देखा कि उसकी कब्र आग से भरी है जिसे देखकर मैं लरज गया। उस भयानक मंजर से मेरे अवसान खता होने लगे दूसरी कब्र में भयानक किस्म के सांप नजर आयेजिन्हे देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मैं चीख पड़ा हजरत ने फिर कुछ पढ़कर दम किया तब मैं होश में आया, मगर आज भी जब वह भयानक मंजर निगाहों क सामने आता है तो मैं कांप जाता हूं, इस वाक्या ने पूरे इलाके में सुन्नियत की लहर दौड़ा दी।

हजरत मोहसिने मिल्लत की करामात पर रोशनी डाली जाए तो हजारहा करामते नजर आएंगी जिन्हें सुनकर इमानी रूह झूमने लगती है और कमजोर ईमान मजबूत होने लगता है।

हजरत मोहसिने मिल्लत का मिल्ली क्यादत और सियासी बसीरत

मौलाना सैय्यद सिब्तैन रजा हाश्मी एडिटर माहनामा मोहसिने मिल्लत,रायपुर (छ.ग.)

हजरत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक हक वो बातिल की जंग जारी है। जहां जहां फित्ना जन्म लेता है वहीं कोई मर्दे हक उस फित्ना पर तअत्तुल का ताला लगाने के लिये इस धरती पर जन्म लेता है। दिन के मुकाबिल अगर अल्लाह रात न बनाता तो दिन के रौशनी की अहमियत का अन्दाजा बन्दा ए खुटा को नहीं होता। मखलुके खुदा अगर बिमारी से दोचार न होती तो तन्दुस्ती की नेमत से लोग ना आश्ना रहते। पता चला नेमते खुदा की आश्नाई के लिये सारी चीजें वुजूद में आईं।

इसी तरह पूरे हिन्दुस्तान में शरपसन्द शुद्धी आन्दोलन की तहरीक चलाकर मुसलमानों को ईस्लाम से बेजार करके उन्हें ईस्लाम से दूर करने लगे तो मशिय्यत के नकीब के जलाल आगया और छत्तीसगढ़ राज्य की मिल्ली क्यादत के लिये आबरूये सुन्नियत अजीमुल बरकत, रफीउद्द रजात मोहसिने का इंतेखाब फरमाया। हजरत मोहसिने मिल्लत ने उस पुर फेतन दौर में इस ऊलुल अजमी, जवां मर्दी और लिल्लाहियत से मुसलमानों की रहनुमाई फरमाई के अरबाबाने फिकरों नजर और दानिश्वराने कौमो मिल्लत को बयक जुबान

कहना पड़ा के आप को एहसाने अजीम छत्तीसगढ़ के हर मुस्लिम फर्द पर ता क्यामत रहेगा। क्यों कि अगर आप उन की रहबरी न फरमाते न रहता तो मस्जिद की फलक बोस इमारतें देखनें को न मिलतीं और सदाए वहदहू लाशरीफ और सलातों सलाम से जो आज पूरा छत्तीसगढ़ मोअत्तर नजर आ रहा है ये बहारें देखने को आखें तरस जातीं।

अगर तसवीर के दूसरे रूख का जायजा लें तो छत्तीसगढ़ का हर मुसलमान मोहसिन मिल्लत के एहसाने अजीम का मोअतफिक नजर आएगा क्यों कि बद अकीदा (देवंदी, वहाबी) ही छत्तीसगढ़ राज्य के हर शहर, हर कसबा और हरगली में अपना शैतानी जाल बिछाये हुये थे और जब मोहसिने मिल्लत छत्तीसगढ़ तशरीफ लाये तो आप ने मुशाहेदा फरमाया कि इस वक्त हमारे उलमा वो मशाइख का दूर दूर तक कोई नामों निशान नहीं है सिर्फ अकाइदे बातिला ही इल्मों फज्ल के नाम पर मुसलमानों को इश्के रसूल से दूर कर रहा है। आप ने वक्त की नजाकतों को महसूस किया और तने तनहा मैदान जेहाद में कूद पड़े। अल्लाह ने आप को कामियाबियों से इतना नवाजा के कुछ ही दिनों में अकाइदे बातिला का किला कमा हो गया और दाएमी तौर पर छत्तीसगढ़ में इश्के रसूल का चिराग जलने लगा और इतना जला के हिन्दुस्तान के अट्ठाइस राज्य में सिर्फ छत्तीसगढ़ ही को वो फोकियत हासिल है कि एततरफा मसलके आला हजरत अलैहिर्रहमा का परचम लहरा रहा है।

मोअजज्ज कारेईन। आप अगर छत्तीसगढ़ के अलावह दोसरे सुर्बों पर नजर उालें तो आपको एक तरफ अकाईदे बातिला की एक बड़ी जमाअत मीलेगी तो दूसरी तरफ अहले सुन्नत वो जमाअत। सिर्फ छत्तीसगढ़ को अल्लाह ने ये

फौकियत बख्शी के पूरे छत्तीसगढ़ में आप जहां चले जायें वही मसलके रजा का मिनार नजर आएगा, सुबहो मशा या नबी सलामों अलैका और मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम की सदा सुनाई देगी। ये सब काइदे सुन्नियत मोहसिने मिल्लत मौलाना हामिद अली साहब फारूकी अलैहिर्रहमा की दैन है। आज जो छत्तीसगढ़ के मजारों पर चादरें नजर आ ही हैं वो मोहसिने मिल्लत जांफेशानी का समरा है, जो घर घर फातिहा वो दुरूद और ग्यारहवीं का मिजाज है और फिके रजा का हर सू बोलबाला है वो मोहसिने मिल्लत की कद्दो काविश का नतीजा है। हजरत मोहसिने निल्लत इलाहाबाद के चंदहा गांव में 1889 ई. में पैदा हुये और अपनी मिल्ली क्यादत और सियासी बसीरत की बुनियाद पर पूरे हिन्दुस्तान में छा गये। खलीफा ए मुफति ए आजम ए हिन्द मौलाना जमाल रजा खां साहब बरेलवी फरमाते हैं मै। अलाका ए छत्तीसगढ़ में जहां भी गया वहां हजरत मोहसिने मिल्लत के फैज का दरिया देखा आप ही जात सब से पहले मसलके आला हजरत का अलमबरदार बनकर यहां आई और वहाबियत व नजदियत के साथ दुश्मनाने इस्लाम का निहायत बे बाकी से मोकाब्ला किया जिस ने आप को इतना बुलंद कर दिया जहां हुकुमत का जलाल भी आप की चौखट का बोसा दता देखाई पड़ता है (ब–हवाला मोहसिने मिल्लत पेज नं. 55)

हजरत मोहसिने मिल्लत को वजा कता के एतेबार से ताम झाम बिलकुल ना पसंद था आप शरई लेबास जेबे तन फरमाते हर महाज पर शरीयत को फोकियत देते अलहुब्बो लिल्लाह वल बुजो लिल्लाह आपके ईमान में शामिल था। आप ने अगर किसी की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया तो सिर्फ खुदा व रसूल की खातिर और किसी से दुश्मनी मोल ली है तो उन्हीं की खातिर। रायपुर के किसी मजार पर शरपसंदों ने औरतों

की कव्वाली का एहतेमाम किया तो उन्हें जलाल आगया और उन्होंने ये अज्मे मोसम्मम कर लिया के जब तक हामिद अली के जिस्म में जान है श्रीअते मोहम्मदी की बे हुरमती होने नहीं देगा। कुदरत ने आपको इस मिशन में कामियाबी अता फरताई। रईसुल कलम व तहरीर अल्लामा अरशदुल कादरी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इन सारे मराहिल में हजरत मोहसिने मिल्लत की जिन्दगी का मुताला करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वो गुना गूं मोहासिने कलामात की जामियत के एतेबार से हैरत अंग्रेज शख्सियत के मालिक थे। तदबीर और सियासी बसीरत में हमारे साथियों के अंदर उन का कोई जवाब नहीं था। मिटिंगों में किसी मसले पर जब बहस बहुत पेचिदा हो जाती तो उन की राय हरफे आखिर हुआ कर ती थी। (ब–हवाला मोहसिने मिल्लत पेज नं. 28)

मजहबी दुनिया में कुदरत ने हजरत मोहसिने मिल्लत बहुत बुलंद मुकाम अता फरमाया था। आप को दुश्वार कुन मराहिल से दो चार होना पड़ा, सालहा साल कुर्बानियां देनी पड़ी यहां तक के जेल के कैदा बंद की सुऊबतों को भी बर्दाश्त करना पड़ा। आप वहां भी तश्रीफ ले गये जहां दो घर के मुसलमान रहते थे। आप वहां क्याम फरमाते और ईस्लामी अख्लाको आदाब से वहां के मुसलमानों को रू शनास कराते। आपने अपने सियासी बसीरत से छत्तीसगढ़ में एक अजीम इंकेलाब बरपा किया। आप हमेशा सफेद कुरता, सफेद पाइजामा और सुरमई रंग की सदरी, सफेद टोपी और हैदराबादी रूमाल पाबंदी के साथ हफ्ता ें दो रोज जेबे तन फरमाते। अल्लामा अर्शदुल कादरी अलैहिर्रहमा दूसरी जगह इर्शाद फरमाते हैं सियासी बसीरत के अलावह जमाअत की नजाकतों पर भी मोहसिने मिल्लत गहरी नजर रखते थे उमूमन मुस्लिम मुत्तेहेदा

मोहाज की तजावीज का मसव्वदा मैं ही तैयार किया करता था जब मोहसिने मिल्लत तजवीज की इबारतों में तरमीम करते और उस की वुजूहात बयान करते तो हमें ऐसा महसूस होता कि अचानक हम अंधेर से उजाले में आ गये। (ब–हवाला मोहसिने मिल्लत पेज नं.–25)

कुछ लोग तनकीद बराये तौहीन करते हैं मगर मोहसिने मिल्लत हमेशा तनकीद बराये इस्लाह फरमाया करते थे उलमा–ए–किराम को सरकारे आला हजरत की तरह बेहतरीन अलकाबात से नवाजा करते थे। हमेशा छोटों पर शफकत और बड़ों का एहतेराम मलहूज रखते थे। आप उल्मा को हमेशा ये मश्वरा दिया करते थे कि अल्लाह ने आप को मोबल्लिग और दाई बनाकर भेजा है इसीलिये आप को चाहिये कि आप के कौलो फेल से कोई ऐसी तसाहुली ने हो जिस से अवाम पर गलत असर पड़े। आप कभी मसनुई अदब वो ऐहतेराम और मसनूई रोबो दब्दबा की परवाह नहीं किया करते थे। जानशीने मोहसिने मिल्लत मौलाना मोहम्मद सबरो तहम्मुल, के उनवान पर बहुत उमदा तकरीर फरमाते हुये तलबा की इबरत के लिये ये वाकिया बयान फरमाते है कि एक शख्स ने मदरसा के तलबा के साथ उनकी तरबियत आप वहां भी पहुंचे वो शख्स जब आप को देखा तो बे इज्जती का अच्छा मौका समझा और उसने अपने नौकर को बुलाकर कहा कि तुम मौलाना से कहना कि वो चले जाए आप फौरन वहां से तश्रीफ ले आये। ब ललबा भी आने लेग तो हजरत ने फरमाया कि आप लोग आराम से तआम फरमायें (खाना खायें)
उसके बाद मदरसा तश्रीफ लायें और आप के कौलो फेल से कोई ना जेबा हरकत सरजद न होने पाये जिस से साहिबे खाना की दिल शिक्नी हो। मोहसिने मिल्लत की इस अदा

को देखकर तलबा के अंदर हजरत मोहसिने मिल्लत की मिल्ली क्यादत और सियासी बसीरत का एहसास हो गया। (ब–हवाला तकरीर उर्स मोहसिने मिल्लत 2009 ई.) आपके अकवाले जर्री में ये कौल बहुत ही मशहूर है, हजरत मोहसिने मिल्लत के इस कौल से साफ जाहिर है कि आप उलमा के तअल्लुक से किस चीज के ख्वाहा थे। आप तलबा को हमेशा ये समझाते कि अमल की दुनिया हमेशा आबाद रखा करो इसी से एक आलिम बा–वेकार बनता है और लोगों में उस का एहतेराम बरकरार रहता है और रब के हुजूर भी सुरखुरू होता है।

आप का दिल उस वक्त हसरतों के अरमानों का मजार बनजाता जब आप कौमे मुस्लिम को इल्मो हुनर से आरी पाते। आप का ये भी कौल आबे जर से लिखने के लाइक है कि, मैं अपने कौम के हर बच्चे को इल्म से माला माल देखना चाहता हूं मेरी जद्दो जेहहद उस वक्त तक जारी रहेगी जब तक मेरी कौम का हर बच्चा इल्मो हुनर से आश्ना न हो जाये, आप का ये भी कौल ऐसा इंकेलाबी है कि इसे जितना भी आम किया जाये कम है, मेरी कौम उस वक्त तक कामियाबियों की मंजिल से हमकनार नहीं हो सकती जब तक इल्मे दीन के साथ साथ असरी ऊलूम पर भी महारते ताम्मा हासिल ना करे।

हजरत मोहसिने मिल्लत के इस मेशन को फरोग देने के लिये आप के शहजादे और अव्वल जानशीन फखरूल औलिया हजरत मौलाना फारूक अली साहब फारूकी अलैहिर्रहमा ने एंगलो उर्दू स्कूल की बुनियाद डाली। और मजीद तक्वीयत देने के लिये जानशीने मोहसिने मिल्लत मौलाना मोहम्मद अली साहब किब्ला फारूकी ने 1989 ई. में एक मख्सूस प्रोग्राम के तेहत असरी ऊलूम की तरफ कदम बढ़ाते हुए

मोहसिने मिल्लत तिब्बिया कॉलेज का ये प्रोग्राम बनाया और लगातार चौदह पंद्रह साल की मेहनत के बाद जब वो एक मुसतहकम मंजिल पर पहुंच गया तो आप ने अपने छोटे भाई मोफक्किरे ईस्लाम मौलाना अकबर अली साहब फारूकी को उस का चेयरमेन बना दिया और खुद अपने दूसरे मनसूबों की तकमील की तरफ मुत–वज्जेह हो गये। जिस में बी.एड. कॉलेज और फारमेसी कॉलेज वगैरह के साथ एक अजीम अर्बी यूनिवर्सिटी का अजीमुश्शान तारीख साज मनसूबा है जो यकीनन हजरत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा के मिशन की तकमील और उन के ख्वाबों की जिंदा ताबीर होगी। 25 अप्रैल 1968 ई. को मध्य भारत का अजीम मसीहा, मिल्लत का बेबाक काइद, वतन का अजीम सिपाही और जंगे आजादी का वो बे खौफ मुजाहिद जिसे दुनिया आज भी खलीफा–ए–आला हजरत मोहसिने मिल्लत के लकब से याद करती है अपने पीछे एक इंकेलाबी तारीख, एक ऊलूल अज्म किरदार और एक काबिले फख्र यादगार छोड़कर हमेशा के लिये इस दुनिया से रूखसत हो गया।

अब्रे रहमत तेरे मरकद पर गोहर बारी करे।

हश्र तक शाने करीमी नाज बरदारी करे।।

फना के बाद भी बाकी है शान रहबरी तेरी।

खुदा की रहमतें हो ऐ अमीरे कारवां तुझ पर।।

मोहसिने मिल्लत की खिदमात

मुफ्ती रईस रजा सा.

प्रिंस्पल : मदरसा, इस्लाहुल मुस्लेमीन रायपुर (छ.ग.)

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन रायपुर की मुलाजमत इख्तियार करने के बाद जब मैंने छत्तीसगढ़ का दौरा करना शुरू किया और लोगों से मुलाकातें की तो हजरत मोहसिने मिल्लत की खिदमात हर चहार जानिब नजर आई। इस से कब्ल में हजरत मन्दूह की जाते गेरामी से ना वाकिफ था मेरी हिरमां नसीबी कहिये के एसी अजीमशख्सियत से मेरी नावाकफियत रही।

हजरत मोहसिने मिल्लत मौलाना हामिद अली फारूकी अलैहिर्रहमा सरकारे आला हजरत के खोलफा में से है। आला हजरत के खोलफा की खुसूसियत एक अलग ही अंदाज की है। आला हजरत ने जिसे भी खिलाफत वो इजाजत से नवाजा उनको एक न एक खुसीसियत से मुमताज फरमा दिया। लेकिन सारे खोलफा में एक सिफत यकजा तौर पर पाई जाती है वोह है तसल्लुब फिद्दीन (दीन पर पुख्ता रहना) लेकिन तसल्लुब फिन्निसबत (निसबत में पुख्तगी) मुकम्मल हिस्सा जो मैं ने सरकार शेर बीश ए अहले सुन्नत और उनके साहबजादगान के अन्दर पाया वो और ही है लेकिन हजरत मोहसिने मिल्लत कई सिफतों के हामिल नजर आते हैं। उन के अंदर कौम का दर्द, मिल्लत की चाहत और सियासत पर जबरदस्त नजरे अमीक थी।

मिल्लते इस्लामिया, के पासदारी का अंदाजा इस से लगाएं कि एक दफा का वाकिया है जब भारत के अंदर अंग्रेजों का तसल्लुम कायल था, और हिन्दुस्तानी कौम का इस्तेहसाल

अंग्रेजी हुकुमत मुसलसल कर रही थी और पूरा हिन्दुस्तान उनकी हुकुमत में मजहबी वो समाज दोनों तरह की बेजारी महसूस कर रहा था। अंग्रेजी हुकुमत तरह–तरह से अजीयतै पहुंचा रही थी, हिन्दुस्तानी कौम उन से हेरासां और खौफ जदा थी।

अकलतरा जि. बिलासपुर में एक अंग्रेज ऑफीसर अपने कुत्तों को कुर्आने हकीम के वर्क में खाना खिला रहा था उस की खबर पब्लिक में होते हुये हजरत मोहसिने मिल्लत तक पहुंची आप तड़प उठे कि कुर्आने अजीम जो इनसानियत का दर्स सारी दुनिया को दे रहा है उस के साथ इस कद बे हुर्मती ? आपने उस के खिलाफ महाज आराइयां की और आप ने फारूकी तेवर के साथ पुर जलाल तकरीर फरमाई जिस की हैबत से वोह अंग्रेज मरऊब होकर आप से मांफी मांगता है और आइंदा ऐसी गलती न करने का वादा करता है।

जब अंग्रेज से बगावत के जुर्म में आप को जेल के सलाखों के पीछे डाल दिया गया तो आप ने वहां भी कुर्आन वो हदीस का एसा संदेश दिया जिस से दरजनों गैर मुस्लिम इस्लाम के दामने करम से बावस्ता हो गये। आज इलाका ए छत्तीसगढ़ में जो इमान का चिराग जल रहा है वो हजरत मोहसिने मिल्लत के कद्दो काविश को नतीजा है। आप आला हजरत के फैजान की जिंदा तस्वीर थे। आप की विलायत आप की करामत और आप की दीनी खिदमात को देखकर हर मोमिन आप से मोहब्बत करना ईमानी शान समझता है और आप के इस्लामी तबलीग, दीनी खिदमतों और ईमानी जज्बों को देखकर पुकार उठता है।

बजता है आज इल्म का जो साज दोस्तों।
ये भी उसी जर्स की है आवाज दोस्तों।।

शाने विलायत

इस्लाम एक जिन्दा मज़हब है जिसने ज़िन्दगी की तमाम राहों पर उजाला बिखेरा। बचपन से लेकर मौत तक और मरने से लेकर हश्र वो नशर और कयामत तक हर जगह उसकी आकाश गंगा की किरणें जगमगाती है। जिसकी रौशनी में कयामत तक इन्सानियत का काफिला चलता रहेगा और मंजिलें मकसूद पाता रहेगा। तड़पती हुई मानवता को सुकून, बेचैन इन्सानियत को चैन, बेकरार दिलों को करार सिर्फ वहीं मिलेगा।

इस्लाम ने जो पैग़ाम और सन्देश दिया उस पर चलने वालों को खुदाई ईनाम की खुशखबरी दी गई। जन्नत की बशारत और मरने के बाद दूसरी दुनियां में खुशी वो मसर्रत की बेहतरीन जमानत(Guarantee) से पूरा कुर्आन भरा हुआ है।

आज धर्म विरोध और नास्तिकता के अधंकार में भटकने वालों को इसमें अंध विश्वास दिखाई देता है। मगर वो एक मानी हुई हकीकत है कि आखिरत के इसी अकीदे ही ने गलत रास्ते पर बढ़ते हुए कदमों को रोका और उसी ने संसार को नर्क बनने से बचाया है और आज भी गुलशने हस्ती की बहार इसी अकीदे की बुनियाद पर बाकी है। न सिर्फ मज़हबी निगाह से ये एक सच्चाई है। बल्कि आज की साइन्स भी थक हार कर मज़हब की चौखट पर सिर टेके खड़ी है।

कुर्आन के जरिये 1400 साल पहले ये एलान किया गया था कि दुनियां की तमाम चीज़ों को हमने इस तरह बनाया कि हर एक का जोड़ा है ताकि तुम इस पर गौर करो और समझो कि जब हर एक का जोड़ा है तो दुनियां का भी कोई जोड़ा होना चाहिये और वो है आखिरत।(सुर ए अज्ज़ारीयात आयत 49) आज साइन्सी तरक्की ने कुर्आन के इस दावे को और मज़बूत कर दिया और दुनियां वो मानने पर मज़बूर हो चुकी

है कि हर चीज़ अपना एक जोड़ा रखती है। जब आप एक चुम्बक का टुकड़ा काटेंगे तो फौरन वह साउथ पोल (South POLE) और नार्थ पोल (NORTH POLE) पैदा कर लेगा। इसी तरह एक एटम (ATOM) अपना एन्टी एटम (ANTI ATEM) और पार्टिकल (PARTICAL) अपना खुद एन्टी पार्टिकल (Anti Partical) बना लेगा। यहां तक कि (World) का एन्टी वर्ल्ड (ANTI WORLD) की सच्चाईयत इस हक़ीकत को मानने पर आपको मज़बूर कर देगी। आज मनोविज्ञान से जो चीज़े सामने आई है वोह तजुर्बा और मुशाहेदा (EMPIRICAL PROOF) से ज़िन्दगी के बाद मौत (LIFE AFTER LIFE) को बता रही है। (PSYCHOLOGOICAL RESEARCH) के लिये 1882 में इंग्लैंड में एक सोसायटी बनी थी। जिसने 6 साल में लगभग 1300 लोगों से मुलाकात करकें अपनी तहकीकात (RESEARCH) शुरू की। वह अब भी (SOCIETY PSY-CHOLOGICAL RESEARCH) के नाम से काम कर रही है। उसने और इसी तरह के दूसरे स्कूलों ने यह साबित किया है कि इन्सान मरने के बाद खत्म नहीं होता बल्कि किसी न किसी रूप में वह मौजूद रहता है। आज लाखों रूपया खर्च करने के बाद और लगातार सदियों खाक उड़ाने के बाद साइन्स जहां पहुंची। वहीं इस्लाम दुनियां वालों को 1400 वर्ष पहले रहनुमाई कर चुका है। साथ ही साथ यह भी बता चुका है कि उस दुनिया में वहा आदमी सुख और चैन के साथ रहेगा जो कुर्आन के बताए हुए रास्ते पर चलकर खुदा की खुशी हासिल करेगा।

औलियाए केराम के सामने हक़ीकत में आखिरत ही की ज़िन्दगी हुआ करती है। उनका उठना–बैठना, चलना फिरना, खाना–पीना, सब खुदा और रसूलेपाक की खुशी के लिये हुआ करता है। हक़ीकत में जो आदमी कलमए तौहीद पढ़ कर खुदा

के खौफ और ईश्क रसूल में अपनी ज़िन्दगी गुजारता है वो कुर्आन की जुबान में वली अल्लाह कहलाता है

उनके लिये खुदा का फैसला है। होशियार हो जाओ बेशक अल्लाह वालों को न कोई खौफ है और न ही कोई गम। ये अल्लाह वाले वो होते है जो ईमान लाते है और खुदा के खौफ और रसूल की पैरवी में जिन्दगी गुजारते हैं। इनके लिये दोनों जहां में खुश खबरी है

(सूरए यूनुस आयत 62,63,64)

कुर्आन में कई जगह उनकी शान भी बताई गई और उनके फैज़ान की चर्चा भी की गई है। जब कोई आदमी खुदा का महबूब बन जाता है तो उसकी हर चीज़ काबिले एहतराम और मुकद्दस बन जाती है। न सिर्फ उसकी ज़ात में फैज़ के चश्मे उबलते हैं बल्कि लबों से ईल्म का दरिया बहता है। निगाहों के इशारों पर मुकद्दर संवरते हैं। तकदीरें बनती है। कदम पड़ते हैं तो गुलशने हस्ती मुस्कुराती हैं। उम्मीदों का कमल खिलने लगता है जुबान खुलती है तो किस्मतों के फैसले होते हैं, मिश्कात शरीफ की हदीस में 40 अबदाल के बारे में आया कि उनकी बरकत से बारिश होगी। दुश्मनों पर फतह हासिल होगी और उन्हीं के तूफैल अहले शाम से अज़ाब दूर रहेगा। (मिश्कात बाब जिकरूल यमन व श्शाम)

कुर्आन में हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम का मशहूर वाकिआ है। जिसकी महक से हर मोमिन की रूहे ईमान आज भी महक रही है और हर पढ़ने वाले को वह आज भी गौरो फिक की दावत दे रहा है। जब उनके वालिद हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम उनके गम में रोते रोते आंखे खो बैठे। बूढ़ा बाप और हज़रत यूसुफ जैसे हसीन और खूबसूरत बेटे की जुदाई का गम फिर उस पर आंखों का भी चला जाना। मगर जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपना कुर्ता भेजा तो कुर्आन गवाह है कि कमीज़ को उनकी आंखों से लगाना था

कि गई हुई रौशनी वापस आ गई। कुर्आन के इस वाकिआ ने हर इन्सान को सोचने पर मज़बूर कर दिया कि जब पहने हुए कपड़े में इतनी बरकत है तो उनकी ज़ात में कितनी अज़मत होगी।इसी तरह से हज़रत मरियम का वाकिआ आज भी भटके की रहनुमाई कर रहा है।

कुर्आन उनकी शान वो शौकत और फ्यूज़ वो बर्कात का जिस निराले और अनोखे अन्दाज़ में ज़िक्र करता है। उसे पढ़कर मोमिन की रूहे ईमान झूम उठती है और दिलों के अन्धेरों में खुदा के महबूब और नेक बन्दों की अकीदत वो मोहब्बत का चिराग जल उठता है। कुर्आन बताता है कि जब हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम जो हज़रत मरियम के खालू थे उनके कमरे में गए। वहां उन्होंने देखा कि बे मौसम के फल रखे हुए हैं। पूछने पर हज़रत मरियम ने अर्ज़ किया कि ये सब खुदा की तरफ से है। हज़रत ज़करिया फौरन समझ गई के बे मौसम के फलों का यहां मौजूद होना इस बात की निशानी है कि ये खुदा की महबूब बंदी है। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ इतनी ज़्यादा हो चुकी थी कि उस उम्र में आम तौर पर औलाद नहीं हुआ करती। हज़रते ज़करिया की उस वक्त तक कोई औलाद भी नहीं थी। इसलिए दिल में औलाद की एक ख्वाहिश थी। इस मौके से फायदा उठाते हुए उनके हाथ दुआ के लिये उठ गए। चूंकि एक महबूब बंदी के करीब दुआ मांगी गई थी। फौरन कुबूल हुई और खुदा के फरिश्तों ने उन्हें एक नेक बच्चे की खुश खबरी सुनाई जिसके कुछ महिने बाद हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की पैदाईश हुई।

कुर्आन के इस वाकिया को देखकर जहां हज़रते मरियम की बुजुर्गी का सिक्का दिलों में बैठता है। वहीं सच्चे मोमिन की निगाह खुल जाती है और इस अकीदे पर यकीन बढ़ जाता है कि खुदा के महबूब बंदों की बारगाह में न सिर्फ खुदा की रहमतें बरसती हैं बल्कि वहां दुआऐं भी कुबूल होती हैं। मुरादें

भी पूरी होती हैं। तमन्नाओं के कमल भी मुस्कुराते हैं। उम्मीदों के चिराग भी जलते है। आरज़ूओं के गुलशन भी महकते हैं। अन्धों को नूर और दिलों को सुरूर भी मिलता है और दिमाग भी कैफो मस्ती से झूमने लगता है।

कुर्आन की आयतों को देखने के बाद भी अगर कोई वलियों,नबियों और रसूलों की अज़मतों का मुंकिर हो। उनके फैज़ान को न माने तो उससे बढ़कर बदनसीब कौन होगा कि कुर्आन हाथ में है। कलमाए जबान पर है। मगर वह फैज़ से महरूम और रहमतों से दूर हैं। दरिया के किनारे रह कर भी वह प्यासा है। (1)

कौसर की उठती हुई मौज़ों की तरह रहमत वो नूर बिखेरने वाली यही तो आयतें थी जिन्होंने दुनियाए इस्लाम के बेमिसाल उल्माए केराम और दुनियाए सूफियत के अजीम तरीन बुजुर्गो को मज़बूर किया कि वह न सिर्फ खुद औलियाए केराम की शान वो शौकत का खुतबा पढ़ते रहेंबल्कि सारे मुसलमानों से उनकी अज़मतों की पहचान भी करवाते रहे।

दुनियाए फिकाह की मायए नाज़ हस्ती हज़रत इमाम शाफई रदिअल्लाहो तआला अन्हो की अज़मते शान से कौन मुसलमान ना वाकिफ है। मगर उनका यह अमल आज भी फतवा की मशहूर किताब शामी में देखा जा सकता है कि जब उन्हें

.

---

(1) बुजुर्गों के फैज़ान को समझने के लिये कुर्आन की इन आयतों पर गौर करें। सूरए नमल आयत 19 और 40.....सूरए यूसुफ आयत 94..... सूरए आले इमरान आयत 49....सूरए अलबकर आयत 59 और 249..... सूरए मरियम आयत 19.....सूरए अल हज्ज आयत 27.....सूरए ता. हा. आयत 96.....

किसी मसले में परेशानी होती तो इमामे आज़म रदिअल्लाहो तआला अन्हो के मज़ार पर हाज़री देते और वहां दो रिकअत नमाज़ पढ़कर दुआ मांगते फौरन उनकी दुआ कुबूल होती।

आपके मानने वाले शाफई कहलाते हैं। जिनकी तादाद करोडों तक है। ऐसी अज़ीम शख्सियत का परेशानी में इमामे आज़म के मज़ार पर हाज़री देना बता रहा है कि बड़े–बड़े अमल करके जिस परेशानी को वो दूर नहीं कर पाए। उसे एक अल्लाह वाले के मज़ार की हाज़री ने दूर करके चैन वो सुकून की दौलत बख्श दी।

तअज्जुब है कि जिन मज़ारात से वक्त के इमाम फैज़ पाऐं। उन्हीं मज़ारात से लोगों को मना किया जाए। यह कितना बड़ा धोखा है। इस्लाम के खिलाफ कैसी खौफनाक साजिश है। मुसलमानों के दीन व ईमान लूटने का कैसा यहूदी मंसूबा है। जिनके फैज़ान ने वक्त के बड़े–बड़े इल्म वालों को मुतवज्जह किया। उन ही के फैज़ान से मरीजों बीमारों परेशान हालों को रोका जा रहा है। शिर्क और बिदअत के फतवे लगाए जा रहे हैं। जहां से इमान को मज़बूती मिली। उसी को शिर्क का दलदल बताया जा रहा है। इन्केलाबात हैं ज़माने के।

जिक्र से उसके दिलों को शाद रखा जाएगा

इश्क की दुनिया को यूं आबाद रखा जाएगा

मोहसिनेमिल्लत की हर एक दीनी खिदमत के एवज

मोहसिने मिल्लत को सदियों याद रखा जाएगा

औलिया–ए केराम के दरजात

औलिया ए केराम के बेशुमार दर्जे हैं जिसका सही इल्म अल्लाह और उसके रसूले पाक ही को है। जिनमें कुछ ऐसे मुकामात भी हैं जो अब तो किसी को हासिल नहीं हो सकते जैसे सहाबी होना। सहाब ए किराम की फज़ीलतों के सिलसिले में मिश्कात शरीफ में एक हदीस इस तरह से आई है कि सहाबिए रसूल का एक मुद (अरबी पैमाना) खैरात करना दूसरों के पहाड़ भर सोना खैरात करने से अफज़ल है। यही वजह है कि कोई गौस या कुतुब भी सहाबी के दर्जे को नहीं पहुंच सकता।

विलायत की किस्मे

विलायत की तीन किस्मे हैं।

(1) फितरी। ये पैदाईशी वली होते हैं। जैसे ग़ौसे पाक रदिअल्लाहो तआला अन्हो।

(2) वह्बी। जो किसी के करम से मिले जैसे ग़ौसे पाक ने चोर को अबदाल बना दिया और हज़रत मौलाना हामिद अली फारूकी को मोहसिने मिल्लत बना दिया।

(3) कस्बी।जो अपनीमेहनत औरइबादत वगैरह से हासिल हो।

मिश्कात शरीफ में बाबे जिकरूल यमन वश्शाम में है कि हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि मुल्के शाम से हमेंशा 40 अबदाल रहेंगे जिनकी बरकत से ज़मीन वालों पर बारिश होगी। उसकी तफसील शरह मिर्कात में इस तरह है कि आपने फरमाया मेरी उम्मत में हमेशा 300 औलिया हज़रत आदम के नक्शे कदम पर रहेंगे, 40 हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम के और 7 हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के नक्शे कदम पर रहेंगे, पांच वह होंगे जिनका दिल हज़रत

जिबरईल अलैहिस्सलाम की तरह होगा, तीन हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम के और एक हज़रत इसराफील अलैहिस्सलाम के दिल पर होंगे। जब उन में से किसी एक का इन्तेकाल होगा तो उन तीनों में से कोई उनकी जगह कर दिया जायेगा और तीन की कमी उस पांच से, पांच की सात से और सात की कमी चालीस से और चालीस की कमी तीन सौ से पूरी की जावेगी और तीन सौ की कमी आम मुसलमानों से पूरी की जावेगी।

वलियों के मरतबे के सिलसिले में हज़रत अबू उस्मान मग़रिबी फरमाते हैं कि अबदाल चालीस है, अम्ना सात, खोलफा तीन, कुतुबे आलम एक होतें हैं। कुतुबे आलम को सिर्फ तीन खुलफा ही पहचानते हैं।

दुनियाए इस्लाम के जबरदस्त आलिम और बुजुर्ग हज़रत शेख मोहयूद्दीन इब्ने अर्बी रदिअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि कुतुब से अल्लाह ने दुनिया कायम रखी है उनके दो वजीर होते हैं दाहिना (Left) बांया (Right) दाहिना वज़ीर रूहों की दुनियां की और बांया वज़ीर जिस्मों की दुनियां की देख रेख करते हैं इनके नीचे चार औताद हैं जो मशरिक (पूरब) मगरिब (पश्चिम) शुमाल (उत्तर) और जुनूब (दक्षिण) पर हुकूमत करते हैं और सात अबदाल हैं जो सारी दुनियां की हिफाजत और देख रेख में लगे रहते हैं।

कुर्आन की मशहूर और अजीमुश्शान तफसीर रूहुलब्यान में साहेब रूहुल ब्यान सूरये माएदा की एक आयत (व ब असना मिन हुस्ने अशरा नक़ीबा) की तफसीर में लिखते हैं कि कुतुब के इन्तेकाल करने पर उनके बांया वज़ीर को उसकी जगह दे दी जाती है और दाहिना को बांये की जगह देकर नीचे से किसी को तरक्की देकर बांया की कमी पूरी कर दी जाती है। इस ग्रुप में बांया दाहिने से बढ़ा होता है जिसकी वजह हज़रत मोहसिने मिल्लत यह बताते है कि जिस तरह से पूरे जिस्म पर

दिल की हुकूमत है और वह सीने में बांयं तरफ होता है इसी तरह कुतुबे आलम की हुकूमत सारी दुनियां पर होती है और वह यह सारे काम तकवीनी उमूर (Natural Laws) के तहत करते हैं। इसलिये इनका बांया वज़ीर अफज़ल और बड़ा हुआ करता है।

यह उन औलियाए केराम की फेहरिस्त (List) है जो अहले खिदमत या तक्वीनी वली कहलाते हैं। खुदा की तरफ से दुनियावी काम की उन्हें जिम्मेदारी दी गई है। उनके अलावा दूसरे और औलिया ए केराम भी है जिनकी गिनती सही तौर पर अल्लाह रब्बुल इज्ज़त और उसके हबीबे पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ही को है। जो तशरीई वली कहलाते हैं। सैंकड़ों वली ऐसे भी हैं जो हक़ीक़त में वली हैं। मगर जब वह इस दुनियां से जाते हैं तब उनके नामए आमाल उनके सामने आते हैं और उस वक्त वह यह देखते हैं कि हर तरफ रहमतोनूर की बरसात हो रही है और फिर यह फरिश्तों के इस्तक़बाल का तरीका, ये जन्नतों की बहारों का नया अन्दाज यह कौसर की उमड़ती हुई मौज़ों का अन्दाज़। जिसे देखकर उन्हें एहसास होता है कि उन पर खुदा ने कैसा करम किया और उन्हें खुदा ने अपना कैसा महबूब बना लिया।

विलायत में कुछ मुकाम ऐसे हैं जहां पहुंचकर अकलो होश ख्तम हो जाते हैं। उस मंजिल पर पहुंचने वालों को मजजूब कहा जाता है इसलिये मजजूबों की किसी बात पर पकड़ नहीं की जाती, ना उनके किसी काम को दलील बना सकते हैं।

मगर जो लोग विलायत की उंची से उंचे मंजिल पर भी पहुंचकर अकल व होश को सम्भाल रखते हैं। शरीअत वो तरीक़त का संगम बने, तक्वा वो तहारत की तजल्लियात से उनके किरदार वो अमल जग मगाते रहते हैं। उन्हें सालिक कहा जाता है।

हज़रत मोहसिने मिल्लत वक्त के अज़ीम वलीये कामिल थे जिन्होंने मध्य भारत में हज़ारों गैर मुस्लिमों को इस्लाम से जोड़ कर हर तरफ मसलके आला हज़रत का झण्डा लहराया आप फरमाते है

अल्लाहरब्बुल इज़्ज़त के सेफात के मज़हर(Demonstration) अम्बिया ए केराम होते हैं। अम्बिया ए केराम की शान देखो, उनकी अज़्मतों को मालूम करो, उनकी ताक़त और इख्तियार पर नज़र दौड़ाओं। जिन्हें देखकर इन्सानी ज़हन चौक जाता है। आदमी हैरत में पड़ जाता है कि जब खुदा ने नबी को इतना इख्तियार और ऐसी ताकतों का मालिक बनाया कि इशारा कर दें तो चांद दो टुकड़े हो जाये। हुक्म दे दें तो डूबा सूरज पलट आए ,निगाह उठ जाये तो मुर्दा दिलों में ज़िन्दगी मुस्कुरा पड़े। करम पर आजाऐं तो नस्लों को महका दें। जलाल पर आयें तो बड़े से बड़ा पहलवान का पित्ता पानी कर दें। यहां पहुंचकर वो यह सोचने पर मज़बूर हो जाता है कि जब नबी इतना बा इख्तियार (शक्ति शाली) है। वो ऐसी ताकत वो कुव्वत वाले हैं तो उसका भेजने वाला कितना बा इख्तियार, कितनी ताक़त वो कुव्वत का मालिक, कैसी शान वो शौकत और जाह व जलाल वाला न होगा। नबी व रसूल की जब यह शान है तो जिसने उन्हें नबी व रसूल बनाया, उसकी अज़्मतों का, उसकी शौकतों का, उसकी बुलन्दियों का कौन अन्दाज़ा लगा सकता है। यहां पहुंच कर इन्सान का सर, उसका माथा, उसकी पेशानी खुद ब खुद अपने खालिक वो मालिक और परवर दिगार के सामने झुकने लगती है। जो उसी का नहीं, सिर्फ उन नबियों और रसूलों का ही नहीं, बल्कि धरती पर बसने वाले हर इन्सान का, आसमानों पर रहने वाले हर फरिश्तों का, चांद वो सूरज से लेकर धरती के पाताल में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हर जानदार का, खालिक वो मालिक है। उनका परवर दिगार है। उनका माबूद और उनका मसजूद

है। इन्सान की फितरत यहां पहुंच कर पुकार उठती है। उसके अन्दर छुपी हुई आत्मा चीख पड़ती है। उसकी रूह बोल उठती है कि उसी की पूजा की जाये। उसी की परस्तिश की जाए। उसी के सामने सिर झुकाया जाए। जिसकी तरफ उन मुकद्दस वो पाक नबियों और रसूलों का फरमान ही नहीं है बल्कि उसके सामने वह मुकद्दस हस्तियां खुद भी अपने सिरों को झुकाए उसकी रिफअत व अजमत का ऐलान कर रही है और उसकी शान वो शौकत, उसके जाह वो जलाल और उसकी बुलन्दी वो अज़्मत का प्रचार कर रही है। जो हक़ीक़त में उनकी ज़िन्दगी का अस्ल मकसद है। उनके पैग़ाम की बुनियाद है। उनकी दावत का मर्कज़ है कि इन्सान का टूटा हुआ रिश्ता खुदा से जुड़ जाए और वह अपनी जिन्दगी के मकसद को पाले।

इसीलिये कहा जाता है कि अम्बियाए केराम मज़हरे सेफाते इलाही हुआ करते हैं और औलियाए केराम मज़हरे अम्बिया। नबियों और रसूलों का काम है खुदा तक पहुंचाना और वलियों का काम है नबियों के पैग़ाम को फैलाना। उनके मेशन को आगे बढ़ाना। उनके बताए हुये रास्तों पर दुनियां को चला कर धरती पर अमन व शांती का चिराग जलाना।

इसलिये औलियाए केराम मज़हरे अम्बिया हुआ करते है। नबियों और रसूलों की शान वो शौकत का जल्वा हज़ारों औलियाए केराम की करामतों में बिखरा नज़र आयेगा। वली की हर करामत में किसी न किसी नबी के मोजज़े की झलक नज़र आयेगी। इसलिए उल्माऐ केराम का इस पर इत्तेफाक है कि वलियों के हाथों जो भी करामतें ज़ाहिर होती है वो नबियों का मौजेज़ा हुआ करती है। इसीलिये उनकी करामतें देख कर दुनियां इस हक़ीक़त को तस्लीम करने पर मज़बूर हो जाती है कि जब एक गुलामे रसूल की यह शान है तो रसूल की अज़्मतों का परचम जिस बुलन्दी पर लहरा रहा है। उसे

कौन जान सकता है। उसे कौन समझ सकता है और उसे कैसे देखा जा सकता है। सरकारे आला हज़रत मुज़द्दिदे आज़म सय्यदना इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी रदिअल्लाहो तआला अन्हो इर्शाद फरमाते हैं।

फर्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें।
खुसरवा ! अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा।।

हर वली की अलग–अलग और नई निराली शान होने की वजह भी यही है कि यह मज़हरे अम्बिया हुआ करते हैं। जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शान रखने वाले वली तारेकुद दुनियां(दुनियां छोड़ने वाले) हुआ करते हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूरी ज़िन्दगी न शादी की और न ही अपना कोई घर बसाया। वोह हमेशा अकेले रहे और जगह –जगह लोगों को खुदा का पैगाम सुनाते रहे। इसलिये जिस वली पर उनकी छवि नज़र आती है उनकी भी पूरी ज़िन्दगी दुनियां से अलग और दुनियां दारी से दूर रहती है।

इसी तरह हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम के मज़हर मज्जूब हुआ करते हैं। जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तजल्लियाते इलाही की एक झलक देखते ही होश खो बैठे। उसी तरह मज़्जूबीन भी विलायत के एक खास मुकाम पर पहुंच कर होश खो बैठते हैं। कुछ वली सुलैमानी शान रखने वाले होते हैं जो तख्त वो ताज के मालिक हुआ करते हैं। उनकी हुकूमतों का झण्डा लहराया करता है। उनके राजपाट का इतिहास भी बनता है मगर हुकूमत व सल्तनत के साथ ही साथ मुकामे विलायत पर भी वह फाएज़ रहते हैं सुल्तान अलतमिश (607 ही. ता.633 ही.) सुल्तान महमूदगज़नवी (421 ता. 537 ही.) शहंशाहे औरंगज़ेब आलमगीर (1658 ता. 1707 ई.) की पूरा ज़िन्दगी में शहाना शान वा शौकत के साथ ही साथ वलिए कामिल का जलाल व जमाल भी अपने शबाब पर नज़र आता है। कोई वली हज़रते नूह की शान लिये हुए जलाली और कोई हज़रत इब्राहीम की

शान में जमाली अन्दाज़ लिये खुदाई पैगाम का ऐलान करते करते अपनी पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देते हैं। जो औलियाए केराम मुस्तफवी शान के मालिक होते हैं वह तो जामेउस्सेफात (सर्वगुण सम्पन्न) हुआ करते हैं। उनकी शान वो शौकत सबसे निराली हुआ करती है। उनकी ज़िन्दगी में कहीं रहमतों का सावन होता है तो कहीं जाह वो जलाल का तूफान उमंडता है। कभी मुस्कुराहटों से उजड़ी बस्ती रहमतों नूर का गुलशन बन जाती है तो कभी निगाहों के बदलते ही रंग वो नूर की महफिलों पर वीरनी छा जाती है। कहीं शहाना जलाल नज़र आता है तो कहीं फकीराना जमाल बरसता है। झोपड़ी में बैठे जाते है तो तख्ते शाही तवाफ (परिक्रमा) करता है महलों में पहुंच जाते हैं तो फकीरों का मुकद्दर जगमगा उठता है।

मज़्जूब तो दुनियां से दूर अपने ही में मगन रहते है। मगर सालिक दुनियां में रहकर खुदा से अपना रिश्ता जोड़े रखते हैं। एक तरफ खुदा के खौफ से उनका कलेजा दहलता रहता है। दूसरी तरफ इश्के रसूल के चिराग से सीना भी जगमगाता रहता है। एक तरफ पेशानी पर तरीकत का नूरी किरणें झिलमिलाती हैं दूसरी तरफ किरदार वो अमल पर शरीअत की तनवीर भी मुस्कुराती है। दूसरे लफ्जों में उनकी जात शरीअत वो तरीकत का हसीन वो खूब सूरत संगम होती है। जहां से क़ौम को ज़िन्दगी मिलती। ईमान को मज़बूती और रूह को सुकून मिलता है। इसीलिये उनका मुकाम बहुत ही बुलन्द वो बाला होता।

बशर से नबी तक के दर्जात :– बशर से नबी तक 27 दर्जे हैं। जिनमे से कुछ दर्जे तो ऐसे भी है जिन्हें आज कोई भी नहीं पा सकता। जैसे दर्ज़ाए सहाबियत। कोई भी मुसलमान कितनी ही इबादत करे मगर सहाब ए केराम के दर्जे तक वह कभी भी पहुंच ही नहीं सकता।

कुछ दर्जो की त़फसील इस तरह है। बशर– मोमिना

सालेह–शहीद–मुत्तकी–मुजतहिद–फिर औताद उन पर अबदाल उन पर कुतुब उन पर कुत्बुल अकताब फिर ग़ौस– उन पर ग़ौसूल आज़म वगैरा। और आगे बढ़िये तो ताबेई फिर सहाबी फिर उन पर अन्सार फिर मुहाजिर फिर सिद्दीकी फिर नबी फिर रसूल। रसूलों में भी उलूल अज़्म रसूल। फिर उनमें खलील और उन पर खातमुन्नबिय्यीन।

ये तो कुछ दर्जे हैं जिनका जिकर किया गया है। मगर बहुत से ऐसे भी हैं जिनका इल्म अल्लाह और उसके रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम को ही है।

यहां औलियाए केराम की मुख्तसर पहचान कराई गई है। हज़रत मोहसिने मिल्लत खलीफए आला हज़रत जिन्होंने मध्य भारत में सबसे पहले मसलके आला हज़रत का झण्डा गाड़ा वह फरमाते हैं कि हक़ीक़त में यह ऐसा समुंद्र है जिसकी गहराई तक पहुंचना आम लोगों का ही नहीं बल्कि बड़े–बड़े उल्माए इस्लाम और बुजूर्गाने दीन के भी इख्तियार से बाहर है। इसकी गहराई तक सिर्फ वही पहुंच सकता है जिस पर खुदा का बेहिसाब फज़्लो करम हो और रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहिवसल्लम की खुसूसी निगाहे करम हो।

फज़्ले खुदा पे फैज़े नबुव्वत पे नाज़ है।
एक नाइबे नबी की नियाबत पे नाज़ है।।
खिदमाते दीन उल्फते मिल्लत को देख कर।
छत्तीसगढ़ को मोहसिने मिल्लत पे नाज़ है।।

औलियाए केराम का मिशन :–

औलियाए केराम का हक़ीक़ी मकसद वही हुआ करता है कि जिस मिशन को अल्लाह के प्यारे रसूले पाक अपनी पूरी ज़िन्दगी लेकर चलते रहे। उसी मिशन को आगे बढ़ाकर इस्लाम का वह बोल बाला करें और इन्सान को उसकी ज़िन्दगी का उद्देश्य बताकर अल्लाह और उसके रसूल के करीब करें। ताकि बरबादी की तरफ बढ़ती हुई दुनियां में सुकून की बांसुरी बजने लगे। हर इन्सान अपनी सही कीमत पहचान कर दूसरे के दुख दर्द में काम आने लगे।

उनकी मुकद्दस और पवित्र जीवन का केन्द्र बिन्दु यही हुआ करता है कि धरती का हर इन्सान आपस में भाई भाई हैं। जिस तरह सूरज से सबको रौशनी लेने का अधिकार है। उसी प्रकार हर एक को धरती पर जीने का हक है। सब एक ही खुदा के बन्दे है। उसने सारा संसार इन्सानों के लिये बनाया और खुद इन्सान को अपने लिये। खुदा की तरफ से जितने नबी वो रसूल आए सभी ने यही पैग़ाम दिया। हज़रते आदम, हज़रते इब्राहीम, हज़रते मूसा, हज़रते ईसा (अलैहेमुस्सलाम) का जीवन हमें यही संदेश देता है। खुदा के आखरी नबी हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम) अपनी पूरी ज़िन्दगी इसी पैग़ाम को फैलाते रहे और आज औलियाए केराम उन्हीं के मुकद्दस मिशन को लेकर चल रहे हैं। ताकि दुनियां वाले यह हक़ीकत अच्छी तरह समझ लें कि यह चांद वो सूरज की हसीन किरणें, यह आसमानों पर तैरती हुई काली घटायें, यह रात में जलते दीपों की हसीन बारात, यह चट्टानों से गिरते झरनों का मधुर जल तरंग, यह पहाड़ों की उंची उंची चोटियां, यह नदियों का बहता ठंडा पानी, यह समुद्र में उठता ज्वार भाठा का दिलकश मंजर, यह

फूलों की जवानी, गुलशन की रंगीनी यह सब इन्सान के लिये है और इन्सान सिर्फ खुद के लिये– सारा संसार बनाया गया है आदमी की खिदमत के लिये और आदमी बनाया गया है खुदा की इबादत के लिये। सहाब–ए केराम से लेकर मुजद्दिदे आज़म सरकारे आला हज़रत तक और आला हज़रत से लेकर हज़रत मोहसिने मिल्लत तक हर जगह एक ही मकसद है, एक ही उद्देश्य है और एक ही पैग़ाम है।

कुव्वते इश्क से हर पस्त को बाला कर दे।
दहर में इसमे मोहम्मद का उजाला कर दें।।

ताजदारे बगदाद गौस पाक और शहंशाहे हिन्दुस्तान गरीब नवाज़ रदिअल्लाहो तआला अन्हुमा की ज़िन्दगियों पर तवज्जोह करें। सय्यदी हुजूर हाफिजे मिल्लत, हज़रत मुजाहिदे मिल्लत और हज़रत मोहसिने मिल्लत जैसी अज़ीम शख्सियतों की मेहनत वो जांफेशानी और बे मिसाल कुर्बानियां हमें उनकी अज़मत वो बुजुर्गी का राज समझा रही है।

खलीफ ए आला हज़रत, गुले गुलज़ारे फारूकीयत,

छत्तीसगढ़ के अज़ीम मसीहा, हज़रत मोहसिने मिल्लत ने शुध्दि तहरीक से लेकर तकसीमे हिन्द तक क़ौमे मुस्लिम की हिफाज़त वो बका का जो अज़ीमुश्शान कारनामा अन्जाम दिया। वोह तारीख की ऐसी सुनहरी किरणें हैं जिससे आने वालों की राहों में सदा उजाला बिखरता रहेगा। आप की मुजाहिदाना ललकार और मुखलिसाना पुकार नें न सिर्फ मुसलमानों को उजड़ने से बचाया बल्कि हज़ारों गैर मुस्लिमों को इस्लाम के दामन से वाबस्ता करके उनके दिलों में एक तरफ इस्लाम का चिराग, रौशन फरमाया तो दूसरी तरफ उन्हें औलियाए केराम के मेशन का अलमदार भी बनाया।

एक मोहतात अन्दाज़े के मुताबिक आप के मुकद्दस हाथों पर तकरीबन आठ हज़ार गैर मुस्लिमों ने इस्लाम कुबूल किया और बे शुमार मुसलमानों के बहकते कदमों को आप की

मुज़ाहिदाना ललकार और सरफरोशाना पुकार ने ईमानी तवानाई अता की। जिसकी तफसील खज़ान ए नूरे इस्लाम,ताजुल औलिया, शुध्दि आंदोलन और इमाम अहमद रज़ा जैसी किताबों में देखी जा सकती है। जहां सुल्तानुल आरेफीन बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर के वास्ते इस्लाम के दूसरे खलीफा सय्यदना फारूके आज़म रदेअल्लाहो तआला अन्हो से खानदानी तअल्लुक होने की वजह से आप के चेहरे से जलाले फारूकी बरस्ता था वहीं इल्मी फैज़ान का रिश्ता मुजद्दिदे आज़म सय्यदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी से वाबस्ता होने की वजह से दुश्मनाने इस्लाम की साजिशों को दूर से महसूस कर लेना और मुसलमानों की हिफाज़त के लिये अपना सब कुछ कुर्बान कर देने का जज़बा आपके अन्दर कूट–कूट कर भरा हुआ था। आपकी मुजाहिदाना ललकार और फारूकी जलाल ने दुश्मनाने इस्लाम की साज़िशों को जिस तरह बे नकाब किया वोह आज भी मुजाहिदाना किरदार वो अमल के मुसाफिरों के लिये रौशनी का बेहतरीन मीनार है।

आप की इन्ही खिदमत को देखकर शाहज़ादए आला हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा खां साहब ने यह फरमाते हैं कि हामिद अली तुम क़ौम का नगीना और मिल्लत का कीमती सरमाया हो। तुमने कुफरिस्तान में इस्लाम का चिराग जलाया। अपनी भी खिलाफत वो इजाज़त से नवाजा। जब कि इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी आपको पहले ही खिलाफत वो इज़ाज़त नवाज़ चुके थे।

हज़रत मोहसिने मिल्लत ही नहीं बल्कि इस तरह बेशुमार उल्माए केराम, औलिया इस्लाम और बुजुर्गाने दीन की मुकद्दस ज़िन्दगी और उनकी खामोश ज़ुबान इस्लामी शान वो शौकत और इस्लामी पैग़ाम समझा रही है कि सारे संसार वालों के लिये खुदा की तरफ से इस्लाम एक मधुर उपहार है। जिस से हर इन्सान को प्यार होना चाहिये। हर व्यक्ति को इसके शीतल

साया में अपना जीवन बिताना चाहिये और मनुष्य को इसके प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिये।

इस्लाम के आने से पहले दुनियां बुराईयों के दल दल में फंसी थी। आज इतिहास का मामुली विद्यार्थी भी इसे जानता है और समझता है। मगर यह इस्लाम ही था जिसने साइंसी इंकेलाब किया। साइंसी दौरे को जन्म दिया। पहले लोग सिर्फ इसलिये चांद और सूरज पर तहक़ीक (Research) करते हुए घबराते थें कि वह उन्हें खुदा समझ कर उसके सामने सिर झुकाए हुए थे। खुली बात है जिसकी पूजा की जाती हो उसके बारे में इन्सान खोजबीन के चक्कर में कैसे पड़ सकता है। मगर यह इस्लाम ही था जिसने दुनियां को बताया कि यह चांद वो सूरज, यह ज़मीन और आसमान सब तुम्हारी खिदमत के लिये पैदा किए गए हैं और तुम खुदा की इबादत के लिये। यह इस्लाम की देन और तौहिद (Monothsirm) का अक़ीदा था जिसने इन्सान को मजबूर किया कि वो चांद और सूरज को पूजने के बजाए उन पर तहकीक (Research) करे। जिसके नतीजे में आज वह साइंसी इन्केलाब पैदा हुआ जिसने आदमी को चांद की धरती तक पहुंचा दिया। जब इंसान ने वहां भी अल्लाहु अकबर की आवाज सुनी तो पुकार उठा कि सारी दुनियां का खुदा एक ही है। इस्लाम ही सच्चा दीन है और हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलेही व सल्लम उसके सच्चे रसूल हैं।

(जैसा कि चॉद पर जाने वालों में नीलआर्मस्ट्रांग का ब्यान है देखिये नई दुनियां और इन्केलाब ढेली 1983)

यही वह हक़ीकत है जिससे अमरीकी इन्साइक्लो पीडिया का लेखक यह कहने पर मजबूर हो गया।

it`s Adwent change the course of human history (Man and his God) इस्लाम ने इन्सानी तारीख का धारा मोड़ दिया।

पैगम्बरे इस्लाम के बारे में इन्साइक्लो पीडिया बरटानिका

के ग्यारहवें एडिशन का एलान है :The most successful of all religious parsonalities दुनियां की तमाम मज़हबीशख्सियतों में सबसे बढ़कर कामयाब आप की ज़ात हैं

मशहूर अमरीकी साइन्टिस्ट माईकल हार्ट अपनी मशहूर किताब। THE 100 (एक सौ) में आपको पूरी इन्सानी तारीख की सबसे ज़्यादा कामयाब और सबसे बड़ी हस्ती बताते हुए लिखता हैं।

He was the only man in history. who was supremely successful on both the religious and seculer leveis (Dr. michcal H. Hart ''The 100'' Newyork 1978)

आप तारीख में वह अकेले शख्स हैं जो मज़हबी और दुनियावी दोनों जगह सबसे ज़्यादा कामयाब रहे।

जार्ज बरनाड शाह आपकी इन्केलाबी तारीख पढ़ कर पुकार उठा कि आप आज के समय होते तो दुनियां की वह सारी समस्या बड़ी आसानी से हल कर लेते जिनसे आज इन्सानी तहज़ीब खतरा महसूस कर रही है।

फ्रांस का अज़ीम जनरल नैपोलियन बोना पार्ट और हिन्दुस्तान के जंगे आज़ादी के लीडर गांधी जी इस्लाम की इन्केलाब से भरपूर इतिहास पढ़कर एक ऐसे समाज की तमन्ना कर बैठे जिसे चौदह सौ वर्ष पहले इस्लाम ने अरब की धरती पर जन्म दिया था जहॉ काले गोरे का कोई फर्क नहीं था। दोस्त दुश्मन सभी एक घाट से पानी पीते थे।

गांधी जी कहते हैं।

इस्लाम की बुलन्दी का राज़ हक़ीकत में मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम) का खुलूस,वादा निभाने का ख्याल,गुलामोंदोस्तों अज़ीजों से बराबर की मोहब्बत थी।

QUOTED IN THE WINDICATION OF THE PROPHET OF ISLAM P.P. 26.27

कल पैगम्बरे इस्लाम ने अपने खुलुस, अपने वादे की तकमील, दोस्त दुश्मन को एक करने के बेमिसाल मंसूबे, अपने पराय पर मोहब्बत वो खुलूस की बरसात के साथ ही साथ खुदा की दी हुई अथाह शक्ति और मुजेजात वो कमालात के ज़रिये तारीख का धारा मोडा था। ज़ेहनों में इन्केलाब पैदा किया था। रूहों को शक्ति,मानवता को प्रेम,इन्सानियत को जिन्दगी,अमन वो शांती को बढ़ावा देकर उनके सोचने समझने उठने बैठने चलने फिरने गर्ज़ कि पूरी ज़िन्दगी को खुदाई कानून के साचे में ढाल कर एक नया संसार बसाया था।

कल पैगम्बरे इस्लाम के ज़रिये दुनियां ने इतिहास की ध ारा मुढते देखा था। आज नायबे रसूल, औलियाए केराम के जरिये दुनियां उसी इन्केलाब की धमक महसूस कर रही है। उनके मज़ारों के ज़रिये इस्लामी पैग़ाम सुन रही है और उनकी करामतों के माध्यम से खुदाई ताकत, नबियों की अज़मत और रसूलों का वेकार समझ कर इस्लाम के करीब हो रही है।

कभी औलिया केराम अपनी अमली ज़िन्दगी से और कभी कश्फ वो करामात से यह इन्केलाब पैदा करते रहे हैं। मेरी इस बात पर भले ही कुछ लोग चौक पड़ेगें। मगर यह एक हक़ीकत है कि औलियाए केराम का एक–एक लम्हा इन्सानो को दुनियां की गुलामी और गैरूल्लाह की परस्तिश से बचाने और खुदा की बारगाह में झुकाने के लिये होता है वह अमल वो किरदार की हसीन बहार होते हैं। शान वो शौकत के बुलन्द मीनार होते हैं। जिनकी मुकद्दस ज़ात से शरीअत को ताकत वो तवानाई मिलती है। तरीकत ज़िन्दगी पाती है। वह मुकद्दस हस्तियां खुद अपने अन्दर चलता फिरता दीन होती है जिन्हें देखकर नास्तिकता के अंधेरे में भटकने वाला और इस्लाम को मिटाने वाला भी इस हक़ीकत को मानने पर मज़बूर हो जाता है कि इस्लाम आज भी OUT OF DEAT नहीं बल्कि UP TO DEAT और ज़िन्दा मज़हब है। जिसमें आज भी संसार की हर

समस्या के समाधान की क्षमता है। जो आज भी हर दुख और हर बीमारी के लिये रहमत वो नूर का अथाह सागर है।

ज़रा सोचिये। जब कोई आदमी उनको रात दिन देखता है। कश्फो करामत पर नज़र डालता है। निगाहों के बदलने पर इन्केलाब उठते देखता है। तो बेसाखता उस का सिर उनकी बारगाह में झुकने लगता है। मगर दूसरे ही पल जब वोह यह देखता है कि जिसकी बुजुर्गी ने मेरे दिल में इन्केलाब पैदा किया वह खुद किसी हस्ती के सामने सिर झुकाए उसकी बढ़ाई के गीत गा रहे है तो उस वक्त वोह चौंक पड़ता है। यहां पहुंच कर उसकी आत्मा पुकार उठती है कि इबादत के लायक वही है। पूजा और परस्तिश उसी की कीजिए जिसने उन्हें और हमें पैदा किया। न सिर्फ पैदा किया बल्कि सारी दुनियां को हमारे लिये पैदा फरमा कर हम पर बेहिसाब और बेशुमार एहसान फरमाया। इस एहसास के साथ बर जस्ता उनकी ज़बान हरकत में आ जाती है और वह पुकार उठता है।

लाइलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह
अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं मोहम्मद
अल्लाह के रसूल हैं।

मेरा ईमान है दीने हक़ का ज़ामिन बन के निकलेगा।
शरीअत का एक दिन अलमबरदार बन के निकलेगा।।
बेना इस मदरसे की मोहसिने मिल्लत ने रखी है।
यहां ताअलीम जो पाएगा मोहसिन बन के निकलेगा।।

करामात का फलसफा

जब बिजली का पावर हाउस से जुड़ता है तो उसमें करेन्ट दौड़ने लगता है। इस वक्त अगर उसका ठीक ढंग से काम लाया जाए तो छोटे बड़े सैकड़ों बल्ब जलकर रात का अंधेरा दूर कर देते है और अगर कोई उन तारों से गलत ढंग से उलझना चाहे तो खुद उलझने वाले की ज़िन्दगी खतरे में पड़ जाती है।

कुछ यही हाल अल्लाह के बन्दों का है जिन्हें कुर्आन वलीउल्लाह कह कर पुकारता है चूंकि इनका ताल्लुक अल्लाह से और रसुलल्लाह से हुआ करता है। इनका दिल मोहब्बत रसूल का मदीना हुआ करता है। इसलिये इनके अन्दर ऐसी शक्ति और ताकत हुआ करती है जिसका सही इस्तेमाल करने वाले का मुकद्दर खुल जाता है और टकराने वाला चूर चूर हो जाता है।

हम देखते हैं कि सूरज की किरणों से अंधेरा दूर होने लगता है कीमती पत्थर चमकने लगते हैं और इनमें सुनहली रूपहली किरण फूटने लगती है। अल्लाह ताआला के महबूब बन्दों के दिल भी कीमती हुआ करते हैं। इसीलिए जब इन पर मदीना की सूरज की रौशनी फूटने लगती है। जिसे देखकर दुनियां वाले हैरतों में डूब जाते हैं। दिलों के बन्द दरवाज़े खुलने लगते हैं। निगाहों में चमक,दिलों में महक,ज़िदगी में चहक पैदा होने लगती है। धीरे धीरे पूरी जिन्दगी में इन्केलाब पैदा होने लगता है। ऐसे मौके पर इनमें कुछ ऐसी बातें पैदा होने लगती है जिन्हें करामत (चमत्कार) कहा जाता है।

अजाएबात या चमत्कार की चार किस्में है (1) मोजेज़ा (2)इरहास (3) करामत (4) इस्तिदराज।

मोजेज़ा — उस हैरतनाक काम को कहा जाता। जो नबी का दावा करने वाले के हाथ से अपने दावा की सच्चाई बताने के लिये जाहिर हो जैसे खुदा के आखरी रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहिवसल्लम का चॉद को दो टुकड़े कर देना खारे कुऍ को अपने थूक से मीठा कर देना। मेराज का होना यह वोह मोजेज़ात है जिन्हें आज का हर इतिहासकार लिखता है और हर आदमी मानता है।

इरहास — वो चमत्कार जो रसूल या नबी के नबूवत का दावा करने से पहले जाहिर हो। जैसे हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम का बचपन में हज़रत हलीमा के घर सीना का चिरना आपके आने से हज़रत हलीमा का काघा बकर्तों से भर जाना हज़रत इसा अलैहिस्सलाम का मॉ की गोद में बात करना और अपनी मॉ की पाक दामनी की गवाही देना।

करामत — वो चमत्कार जो नबी और रसूल के मानने वालों (उम्मतियों) के हाथ से जाहिर हो चूंकि गौस पाक सरकार गरीब नवाज़ सरकार अपने आका के वफादार उम्मती है। इसलिये हमेशा आप से जाहिर होती रहती है।

इस्तिदराज— हैरतनाक बातें जो काफिर के हाथों जाहिर है। जैसे शैतान के हैरतनाक काम यमजाल जब जाहिर होगा तो बारिश करवाएगा। मुर्दा जिन्दा करेगा पल भर में सैकड़ों मील का चक्कर लगा लेगा जिसे कम पढ़े लिखे और रसूल पाक को तौहीन करने वाले करामत समझकर उस पर ईमान लाते जायेंगे। मगर हकीकत में वह करामत नहीं होगी बल्कि शरारत और धोखा होगा।

कुर्आन शरीफ और हदिस में सैंकड़ों जगह करामतों का

बयान आया है। जिसे वली अल्लाह की निशानी बताई गई है।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का मशहूर वाकिया जिसका यहूदियों की किताब तोरेत (als) में भी और कुर्आन शरीफ के 19 वां पारा में भी बयान आया है।

जब यमन (अरब का एक देश) मलिका बिलकीस हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से मिलने गई और जाते वक्त उसने तख्त को सात महलों में मजबूत और भारी ताला से बन्द करवा दिया। अपने अपने वजीरों से फरमाया कि कौन है जो उसका तख्त उसके यहां पहुंचने से पहले लाये उस वक्त हज़रत आसिफ बिन बरखिया जो अल्लाह के वली थे उन्होंने अर्ज किया कि एक पल में उसका तख्त हाजिर हो जाता है। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की राजधानी की मुल्के शाम में थी और वह तख्त मुल्के यमन में था बीच में हज़ारों मील का फासला था। मगर सभी ने देखा कि दूसरे पल वह तख्त हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने था। जब मल्का बिलकीस वहां पहुंची और उन्होंने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की यह शान देखी तो देखती ही पुकार उठी कि मैं आप पर ईमान लाती हूं। इस तरह सुलैमान अलैहिस्सलाम के एक वजीर की करामत ने शिर्क के दलदल में फंसी हुई मल्का को जन्नत की बहारों का हकदार बना दिया।

(औलिया ए केराम करामतों का समझने के लिये देखिये सूरए आले इमरान आयत 37 सूरए मर्यम आयत 26 26 सूरए नमल आयत 40 सूरए कहफ आयत 1871 सूरए यूसुफ 93।)

जो कमाल दूसरे नबीयों के उम्मती को मिला या उससे कहीं ज्यादा नबीयों के ताजदार खुदा के आखरी रसूल उम्मतियों को मिला है। यही वजह है कि जहां मुफ्ती का फतवा का काम नहीं करता। शोला बयान मुकर्रिर की धन गरज बेकार हो जाती है। वहां इनकी एक निगाहें नाज़ काम करती है। बड़ेबड़े ज्ञानियों और दानिशवरों का कलम जहां कांपने लगता है वहां

सिर्फ एक तवज्जह सब बिगड़ी बना देती है। यह दुनियां है

जहां आदमी काम करते करते बूढ़ा हो जाता है तो रिटायर्ड कर दिया जाता है। मगर वलियों की दुनियां ही अलग होती है जहां उम्र के साथ साथ विलायत चमकती जाती है। फिर वह दिन आता है जिस्म बूढ़ा हो जाता है मगर रूह ज़वान रहती है। यहां तक कि कब्र में पहुंच जाते हैं न वहां मुअत्तल (suspend) किये जातेहैं। जब दोनों जहां में उनकी विलायत बाकी है तो हरजगह फैज भी बाकी रहता है।

कितने कम अकल हैंवोलोग जो इन्हें मर कर मिट्टी में मिलने वाला कहते हैं। क्या कुर्आन और हदीस मेंकोई एक भी ऐसा जुमला या आयत है जो यह बताती हो कि वली जब तक ज़िन्दा है खुदा का वली रहता है। उस पर खुदा की रहमत बरसती रहती है। रहमतो नूर के सागर में वह तैरता है खुदा का करम उसे घेरे रहता है मगर दुनियां छोड़ने के बाद वह मोअत्तल (suspend) कर दिया जाता है या खुदा उससे रूठ जाता है। इसलिये अब वोह न किसी की सुन सकते हैं और न मदद कर सकते। जिस तरह इन्सान मरने वालों को दफन करके चला आता है। इसी तरह खुदा भी उसे भूल जाता है। जिनके मज़हब में खुदा झूठ बोल सकता है। उनके धरम में ऐसा तो हो सकता है मगर वो इस्लाम जिसने मरने के बाद नेकों को जन्नत की खुशखबरी दी दोनों जहां में ईमान वालों को अमन और चैन बशारत दी उसमें कहीं ऐसा नहीं मिलेगा कि खुदा दुनियां में अपने चाहने वालों और इश्के रसूल में जीने वालों को विलायतों और करामतों से नवाजे और मरने के बाद उन्हें बरतरफ (suspend) करके मिट्टी में मिला दें।

उर्स एक चैलेन्ज एक इन्क़ेलाब

अहले सुन्नत व जमाअत के मशहूर वो मारूफ मरसिम और मामूलात में से उर्स नेहायत अहमीयत का हामिल है।

यह हक़ीक़त में अल्लाह वालों की तारीखे विसाल को याद रख कर उनके पैगाम और सन्देश को फैलाने का एक बेहतरीन और शरई ज़रिया है जिसमें अक़ीदत मंदाने औलिया जमा होते हैं। फिर वहां कुर्आन शरीफ पढ़ा जाता है। महफिले मिलाद शरीफ होती है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और उसके महबूबे पाक (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) के ज़िकरे जमील से पूरी महफिले पाक रौशन व मुनव्वर नज़र आती है। साथ ही साथ औलियाए केराम की शान वो शौकत उनके खुलूस वो मोहब्बत , सुन्नतों पर अमल करने का ज़ज़्बा , फर्ज़ों की अदायगी का शौक , लोगो को खुदा और रसूले पाक के क.रीब के लिये लगातार मेहनत वो कुर्बानी का ज़िक्र गर्ज़ कि उनकी सवानेह हयात के मुख्तलिफ पहलुओं पर रौशनी डाली जाती है। जिनसे हौसलों को बुलंदी , ईमान को मज़बूती , अक़्ल को पुख्तगी मिलती है। किरदार वो अमल की दुनिया में इन्क़ेलाब बरपा होता है। ज़हनो फिक्र में वो तबदीली आती है और अक़ीदा वो अमल के गुलशन में तक़्वा वो तहारत के पहलू खिलने लगते हैं। दुनियाए रूहानियत जगमगाने लगती हैं और क़लबो नज़र में कह कशां का जमाल मुस्कुराने लगता हैं। साथ ही साथ मुर्दा सुन्नतों को ज़िन्दा

करने का अहद किया जाता है। इस्लामी पैगाम गैरों तक पहुंचाने की फिक्र की जाती है।

इसके अलावा साहिबे मज़ार के रूहे पाक को कुर्आन शरीफ और मुखतलिफ ज़िक्र वो फिक्र का सवाब बख्श कर खुदा की बारगाह में उनके तरक्की ए दर्जात की दुआऐं मांगी जाती उसी के साथ कभी उनसे और कभी उनके वसीले से तमाम मोमिन व मोमिनात जुम्ला मुस्लेमीन व मुस्लेमात की हिफाजत व बका के लिये दुआ की जाती है। जिसमें दुनियां की कामयाबी आखिरत की भलाई खुदा और रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की

रज़ा के हुसुल की तमन्नायें और इल्तेजाऐं होती हैं।

उर्स बातिलपरस्तों के लिए एक चैलेन्ज

यह है उर्स का एक मुख्तसर सा तआर्रूफ। मगर गहराई में उतरने के बाद दोपहर के धूप की तरह यह हक़ीक़त खुलकर सामने आ जाती है कि ये चन्द बंधे हुए कामों का करना या लफ्ज़ों का दोहराना नहीं है बल्कि हक़ीक़त में यह एक मुकम्मल पैग़ाम है। एक ठोस मिशन है। एक लगातार और मुसलसल कोशिश करने का सच्चा वादा है। जिसके लिए हर तकलीफ वो परेशानी झेलने का अज़्म वो इरादा है और उसके लिये सब कुछ कुर्बान कर देने का हौसला है। यह एक ऐसा (शपथ) है जो मौत के आखरी झटके तक क़ाएम रहता है। यह बातिल के पूरे निज़ामे ज़िन्दगी को चैलेंज करना है। यह झूठ , फरेब , धोखा को हमेशा के लिये खत्म करके उसकी जगह इस्लामी निज़ाम क़ाएम करने का नाम है। जिस में हर इन्सान को जीने का हक़ होगा। हर आदमी चैन और सुकून की ज़िन्दगी बिता सकेगा।

उर्स का मक़सद खाली फातेहा पढ़ना नहीं। सिर्फ चादर वो फूल चढ़ाना नहीं है , बल्कि उस बात का एलान करना कि

जिस तरह से इस मुक़द्दस और बुजुर्ग हस्ती ने इस्लामी गुलशन की रौनक़ वो बहार के लिये अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया और खुदा और उसके रसूले पाक की रज़ा और खुश्नूदी हासिल करने के लिये हर ऐश वो आराम कुर्बान कर के हर जगह अज़मते मुस्तफा का परचम बुलंद करके एक ऐसी तारीख जन्म दिया जिसकी सुनहरी किरणें सदा नूर बरसाती रहेंगी और हमेशा कारवाने मुजाहेदीन की राहें में रौशनी बिखेरती रहेगी। इसी तरह से हम भी दुनिया के माया जाल से निकल कर इस्लाम के लिये सब कुछ कुर्बान करने का अहद (शपथ) करतें हैं।

यह सब अहद और वादा कागज़ में लिख लेना जितना आसान है। ज़िन्दगी में लाना उतना ही कठिन और मुश्किल है। हक़ीक़त में यह आग से गुज़रने और खून में नहाने का वादा है।

तारीख बताती है कि जब भी हक़ परस्तों ने इस तरह का कोई भी वादा किया उसको डसने के लिये पूरी दुनियाए बातिल हरकत में आ गई। दुनियाए कुफ्र के फिरऔनों ने उसका पूरा खानदान की खानदान उजाड़ दिया। घर का घर तबाह कर दिया। गुलशन का गुलशन विरानों में बदल डाला। यह अहद इतना आसान नहीं जितना लोगों ने समझ रखा है और न इतने आसान कामों के ज़बान से कह लेना और किताबों में लिख लेना जितना आसान है उसके लिये कौन अकलमंन्द होगा जो सिर्फ बंधे टके चन्द बातों को रटा देने के लिये इश्को मोहब्बत का इतना बड़ा शहर आबाद करें। हक़ीकत तो यह है कि पूरे बातिल निज़ाम को चैलेन्ज करने का यह प्रोग्राम है उसके साथ खुद अपने नफ्स के साथ मुस्तकित लड़ने का ऐलान भी है।

आग और खून की तारीख

यही वोह एलान और अहद है जिसने आशिकाने रसूल की

तारीख को आग और खून की तारीख बना दिया। उनकी पूरी तारीख कुर्बानी और बर्बादी की दास्तान बन गई। जिसमें अपने लिए कुछ नहीं बल्कि सब कुछ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और रसूले पाक के लिए है। यही वजह है कि शोलों पर नाचने के बाद भी और खून में नहाने के बावजूद ये मुक़द्दस हस्तियां आज भी मीनार नूर बनी कारवाने हक़ वो सदाक़त की राहों में नूर बिखेर रही है और गुलशने किरदार वो अमल को महका रही है। यह क्यूं ज़िन्दा हैं इस पर आज सारी दुनिया हैरान है और ऐसे लोग अभी तक क्यू नहीं खत्म हुए इस पर आज भी बातिल परस्त परेशान हैं।

अहले मोहब्बत और शमए रिसालत के परवानों के चारों तरफ यज़ीद ने जुल्म वो सितम की आग की दीवार खड़ी कर दी ताकि ईमानी दौलत जल कर खाक हो जाए। मगर यह उसे वहां से भी बचा लाये। तातारियों ने उन्हें खून के सैलाब में बहा देना चाहा मगर न सिर्फ येह खुद इस्लाम पर क़ायम रहे बल्कि उनके सामने भी इस्लाम की बुलन्दी का झंडा गाड़ कर रहे। मार्क्स और लेनिन के नज़रियों ने और कम्यूनिज्म की दहशत गर्दी और आतंकवादी ने उन्हें ज़मीन के नीचे दफन करना चाहा मगर वो खुद दफन हो गए। योरोप और अमरीका ने यहूदियों और इसाईयों का सहारा लेकर एक साज़िश के तहत आतंकवाद और फंडामेन्टलिस्ट बताते हुए उन्हें समुद्र में डुबा देना चाहा मगर वहां भी इस्लाम के अमन वो शांति का पैगाम सुनाने लगे।

बर्बादी की दास्तान

उन्हें क़त्ल किया गया। उनकी बस्तियों को उजाड़ा गया। उनके खूने जिगर से सींचे हुये चमन में आग लगा गई। खून की बूंदों से जलाए हुए अश्क वो इर्फान के चिराग को कुफरो शिर्क के तुफानों से बुझाने की कोशिश की गई। उनकी ज़बानें खींची गई। हाथ कांटे गए। सूली पर चढ़ाया गया।

मगर जुल्मो सितम की उस घनघोर घटा में भी उन अल्लाह वालों ने हमेशा ज़ालिमों के सामने इस्लाम का झंडा बुलंद किया। तलवारों के साये में भी रहकर इश्क वो इर्फान का गीत गाया। फांसी के फंदों में भी आशिके रसूल बन कर मुस्कुराते रहे। तीरों की बौछारों में भी मोहब्बत का ताराना बिखेरते रहे। इस्लाम का पैगाम फैलाते रहे। तहज़ीब वो तमद्दुन की जुल्फें संवारते,तक़वा वो तहारत और नेकियों के हीरे निखारते रहे। इन्सानियत का चिराग जलाते रहे। उल्फत वो अक़ीदत का उजाला बिखेरते रहे। उनके हौसलों और कुर्बानियां को आज भी दुनिया हैरतों के समुद्र में डूब कर देख रही है।

वक़्त की पुकार

आज वक़्त की अहम ज़रूरत येह भी है कि उनके कारनामों को बर्बादी से बचाकर दिल वो दिमाग के महलों में सजाया जाए। उनके उसूलों और ख्यालात की तस्वीर से इल्हाद वो बेदीनी और नास्तिकता के अन्धकार को दूर किया जाए। अगर हमने ऐसा किया तो एक ज़िन्दा क़ौम का हक़ अदा किया। उन मुक़द्दस वो मोहतरम हस्तियों की ज़िन्दगी,ज़िन्दगी में बन्दगी, बन्दगी के साथ हज़ारों मसाएल से वाबस्तगी आज भी मुर्दा दिलों में नई जान डाल सकती है। उनके पैग़ाम से ज़िन्दगी में कांटों से भरी पगडंडी से मुस्कुराते हुए गुज़रने की हिम्मत मिलती हैं। मुसीबतों से टकराने का हौसला मिलता है। इरादों को मज़बूती और फिक को रौशनी मिलती है।

मुर्दा है वोह कौम जिनकी तारीख ऐसे रहनुमाओं से खाली है। अंधेरे में भटक रहे हैं वोह लोग जो ऐसे हौसले मंद बुजुर्गो की यादों के चिराग जलाने को शिर्क और बिदअत कहते हैं। बदनसीब है वह दिल, अल्लाह वालों की जिसमें मोहब्बत का नूर नहीं। परेशान ख्याली का शिकार है वो

दिमाग जो ऐसे नेक, बा हौसला पाकिज़ा और मुक़द्दस लोगों को तज़किरों और यादों से खाली है। बेनूर है वाह क़ौम जिनकी तारीख ऐसी शख्सियतों से खाली है।

आज मुसलामान जिन्दा है, इस्लाम ज़िन्दा है, दीन ज़िन्दा है ये सब अल्लाह के वलियों की बदौलत है। इसीलिये हमें भी उनकी यादों का चिराग, जलाकर उनके मिशन को एक ज़िन्दा क़ौम की तरह ज़िन्दा रखना है, ताकि उसकी रौशनी से तारीक महल भी जगमगाये और साथ ही साथ ज़िन्दगी के हर मोड़ पर, समाज के हर मसाएल पर, कौम के हर घर पर,बच्चों के हर दिल पर, जवानी की हर नज़र पर,इस्लाम की मोहर हो, मोहब्बते रसूल की झलक हो, अक़ीदते औलिया की छाप हो।

फिर हर जगह इस्लाम का पैगाम दिखाई दे। रसूले पाक का नाम सुनाई दे। दिन का काम दिखाई दे। यहां तक कि इस्लाम के अमृत भरे संदेश से सिर्फ मस्जिद वो मदरसा और खानक़ाह ही नहीं बल्कि हर बाज़ार चहके, हर कालेज महके, हर युनिवर्सिटी गूंजे और हर रिसर्च सेन्टर झूम उठे।

एक तरफ जहां मिलादुन्नबी, उर्से औलिया और मज़ाराते मुक़द्देसा से मुसलमानों को इल्मी रौशनी, फिकरी पाकीज़गी और रूहानी तवानाई मिलती है वहीं दुश्मनाने इस्लाम की साजिशों को नाकामी, बातिल परस्तों को बर्बादी और इस्लाम दुश्मन ताकतों को रूसवाई का मुंह देखना पड़ता है। इसी लिये दुश्मनाने इस्लाम ने हमेशा उसे खत्म करने और बर्बाद करने का मंसूबा बनाया। क्यूंकि मुसलमान उससे जितने ज़्यादा दूर होंगे। इस्लामी तालीमात और इस्लाम की क़ाबिले फखर शख्सियतों से उतने ही जाहिल और ना वाक़िफ होते जाएंगे। इस तरह वो खुद ही मिट जायेंगे।

इस सिलसिले में इंगलैण्ड के ईसाईयों ने अठ्ठारहवी सदी से पहले ही एक ठोस संसूबा तैयार किया जिसमें यहूदियों ने उनका साथ दिया। कि इस्लाम को दुनिया से कैसे

मिटाया जाए..फिर उस मेशन को पूरा करने के लिए अपने जासूस हेमफेरे को 1710 ई. में इंगलैण्ड शासन की तरफ से मिस्र, ईराक़, ईरान, सऊदी अर्बिया, तुर्की भेजा गया। जिसके जिज़्जमे कई कामों में से एक यह भी था कि मुसलमानों में फूट डाल कर इंगलैण्ड की हुकूमत मज़बूत करें।

उसे इस काम के लिए जो मार्गदर्शन दिया गया था उसमें एकधारा यह भी थी।

हमारी दुश्वारियों (ईसाइय्यत) को फैलाने और मुस्लिम मुल्कों को गुलाम बनाने) में एक बड़ी दुश्वारी बुजुर्गानेदीन के मज़ारात पर मुसलमानों की हाज़री है। ज़रूरी है कि मुख्तलिफ दलाएल से यह साबित किया जाए कि कब्रों को अहमियत देना और उनकी आराईश (बनाओ सिंगार) पर तवज्जह देना बिदअत और खिलाफें शरा है..

आहिसता– आहिसता और धीरे धीरे उन क़ब्रों को मिस्मार करके(तोड़के) लोगों को ज़ेयारत से रोका जाए।

पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) उनके जानशीनों और कुल्ली तौर पर इस्लाम के बर्गोज़ीदा शख्सियतों की ईहानत का सहारा लेकर और इसी तरह शिर्क वो बुत परस्ती के आदाब वो रूसूम को मिटाने के बहाने मक्का और मदीना और दिगर शहरों में जहां तक हो सके मुसलमान ज़ियारत गाहों और मकबरों की ताराजी।

(हेम्फरे के ऐतराफात वाला जाने जान सफा 145.146)

हेम्फरे की उस किताब का नाम है

COLONIZATION IDEAL MR HUMPHREY & MEMORIES THE ENGLISHSPY INISLAMIC COUNTRIES

हेम्फरे की यह डायरी विश्वयुद्ध में जर्मनों के हाथ लगी जिसे एक जर्मन रिसाला स्पेंगल में शाय किया गया। फिर फ्रांसीसी पत्रिका ने उसे छापा। फिर लेबनान के एक लेखक ने अरबी तर्जुमा कर के उसे छपवाया। फिर लाहौर से

उसका उर्दू तर्जुमा शाय हुआ। जिसके मुताबिक हेम्फरे ने पहले नकली इस्लाम कुबूल किया। अपना नाम मोहम्मद रखा और फिर अंग्रज़ो के मिशन को इस तरह फैलाया कि मक्कए मोअज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा तक में उसके षड़यंत्रों ने सारे मज़ारात तोड़वा दिये। गर्ज़ कि उसने ऐसा बीज बोया कि यहूदियों और ईसाइयों के खिलाफ अरब की धरती पर जितनी निशानियां थी धीरे धीरे सब मिटने लगी। बड़े बड़े वो सहाबए केराम जिन्हों ने यहूदियों और ईसाइयों को अरब से निकाल बाहर किया था। उनके मज़ारात को तोड़ने में खास तवज्जह दी गई। खुलेआम उनकी तौहीन की जाने लगी। यहां तक कि गुम्बदे खज़रा को भी तोड़ने की कोशिश की गई मगर खुदाई मस्लेहत गालिब आई। उसके महबूब पाक का मज़ार उनकी साज़िशों से अभी तक महफूज़ वो सलामत है।

हेम्फरें के नौ साथी और भी थे जो मुस्लिम मुल्कों को अंग्रेजों का गुलाम बनाने की कोशिश में दिन वो रात लगे हुए थे। जिनमें जी बल कोड और हेरी फ्रांस काबिले ज़िक्र है वैसे इस्लामी मुमालिक में इंगलैण्ड के पांच हज़ार जासूस इस काम पर लगे थे जिनमें मर्द भी थे और औरतें भी। जिन्होंने मुस्लमानों के दिलों में से इश्क को हराम वो बिदअत बताने में खुसूसी तवज्जह दी।

उर्स पाक हदीस में

उर्स का मुकद्दस लफ्ज़ उस अज़ीमुश्शान हदीस पाक से लिया गया है जिसमें सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लाम) मुन्कर नकीर के सवालात में कामयाब होने वाले शख्स को दी गई बशारतों के सिलसिले में इर्शाद फरमाते हैं कि उस वक्त मुन्कर नकीर उसे यह खुशखबरी सुनाते हैं कि नम कनौ मतिल अरूस।

نم کنومۃ العروس सो जा जैसे दुल्हन सोती है।

जब तक उल्माए मिल्लते इस्लामिया के सीने से अहादीसे मुकद्दसा के नगमें उबलते रहेंगे। मिशकात बाब इस्बाते अजाबिल क़ब्र में फ रिश्तो की ज़बान पर जो अरूस है वहीं क़ब्र के बाहर फरिश्ता सिफत इन्सानों की जबान पर उर्स है। उधर एक खास मौक़े पर फरिश्तों ने उन्हें कामयाबी की बशारत सुनाई और इनामाते खुदावन्दी की खुशखबरी दी। इध ार आशिक़ाने औलिया दीवाना वार उमड़ती हुई मौजों की तरह फ्यूजो बर्कात के उबलते हुए चश्मों से दिलों की तारीकी और गुनाहों की सियाही धोने के लिये दौड़ पड़े। उधर जमाले मुस्तफा देखकर साहेबे क़ब्र ने कामयाबी की सनद हासिल की। इधर आशिक़ाने मुस्तफा मुबारक बादी की सदा बुलन्द करते हुए मज़ार की बर्कतों के हुसूल के लिए टूट पड़े। उधर धरती के नीचे गुम्बदे खज़रा की तजल्ली मुस्कुराई। इधर ध ारती के उपर रसूल के वफादारों के कुलूब झुमने लगे। अब फयूज़ो बर्कात का उबलता हुआ न खत्म होने वाला सिलसिला है और अक़ीदत मन्दाने औलिया की न टूटने वाली कतार है। जो देखों कैफ वो सुरूर में है। जिसे देखो रंगों नूर के सावन में नहा रहा है। जिस तरफ देखो रहमतों नूर की चादर बिछी हुई है। जहां देखो कुर्आन पेश किये जा रहे हैं।

ये रूहानी तावानाई और इमानी मजबूती का वोह मुक़द्दस इंकेलाब और ईमानी दुनिया को इश्के रसूल और खौफे खुदा की रौशनी से जगमगाने वाला एतेहासिक तरीक़ा है जिसे गैरों ने भी तस्लीम करते हुए इसको फैलाने और बढ़ाने में अज़ीमुश्शान किरदार अदा किया।

दुनियाए देवबन्दियत के पीर वो मुर्शिद हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह अलैहिर्रहमा अपनी मशहूर किताब फैसला हफ्त मसला में उर्स के जवाब और सही होने पर ज़ोर देते हुए किस शान वो शौकत के साथ खुद ही अपना य अमल बयान फरमातें हैं फक़ीर का मशरब इस उम्र में यह हैं कि हर साल

अपने पीर वो मुर्शिद की रूहे मुबारक पर इसाले सवाब करता हूं।

हज़रत शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही पत्र नंबर 182 में मौलाना जलालुद्दीन साहब को किस जाह वो जलाल और सख्ती के साथ तहरीर फरमाते हैं पीरों का उर्स पीरों के तरीकों से कव्वाली और सफाई के साथ जारी रखें ।

दुनिया देवबन्दियत के मुसतनद बुजुर्ग हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब जो अहले सुन्नत के नज़दीक भी ज़बरदस्त और मुस्तनद बुजुर्ग है अपनी मशहूर किताब फतावए अज़ीज़िया में उर्स के तअल्लुक़ से किस कैफ व सुरूर के साथ इर्शाद फरमाते हैं। जिसे पढ़कर एक मोमिन की रूहे इमान झूम उठती है। वो लिखते हैं बहुत से लोग जमा हो और खत्म कुर्आन करें और खाने, शिरनी पर फातिहा करके हाज़ेरीन में तक़सीम करें। यह क़िस्म हुजूर अलैहिससलातो वस्सलाम और खोल्फाए राशेदीन के ज़माना में मुरौवज न थी। अगर कोई करें तो हर्ज़ नहीं। बल्कि ज़िन्दों से मुर्दो को फायदा हासिल होता है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब रहमतुल्लाहे तआला अलैह जिनके इल्मी जाह वो जलाल के सामने पूरी दुनियाएं देव बन्दियत का सिर झुका हुआ है। वोह अपने वालिदे गेरामी (शाह अब्दुल रहीम) के साथ उर्स में शिर्कत का अपन वाकिआ तहरीर फरमाते हैं। फरमाया करते थे कि शेखुल इस्लाम अब्दुल्लाह अन्सारी की औलाद में से शेख नेमतुल्लाह अल मारूफ शेखी उर्स किया करते थे जिसमें छै सात साला की उमर में मुझे कई बार शामिल होने का इत्तेफाक़ हुआ।
(अन्फासुल आरेफीन हज़रत शाह वली उल्लाह मतबुआ मुजतबाई देहली सफा19)

यह वही उल्माए केराम हैं जिनकी शहाना शाह वो शौकत और इल्मी रिफअत वो अज़मत का झंडा दुनियाए देवबन्दियत पर भी लहरा रहा है। जिनकी तनवीर से एक तरफ

उनकी ललकार से बातिल परस्तों के कलेजे दहल रहे हैं और उनके महलों पर ज़लज़ला तारी है। उर्स के तअल्लुक़ से उनका पुर जलाल और शौकतों भरा बयान अभी आप पढ़ चुके हैं और गुलशने ईमान को तरो ताज़ा कर देने वाला उनका किरदार भी आप देख चुके हैं।

गर्ज़ कि मिश्कात शरीफ की हदीस से लेकर आज तक फतवों की तमाम मुस्तनद किताबों में हर जगह उर्स की शान वो शौकत, उसका जाह वो जलाल, उसकी रिफअत वो अज़मत, उसके चमन का एक लम्बा सिलसिला नज़र आयेगा। साथ ही साथ इस्लामी पैग़ाम को वुस्अत, दीने हक की तबलीग, गैर मुस्लिमों को इस्लाम से क़रीब करने का हसीन वो खूबसूरत अन्दाज़ भी दिखाई देगा। जिसे देखकर मोमिन की रूहे ईमान झुम उठती है और उसके किरदार वो अमल पर शरीअत वो तरीक़त की रौशनी बिखरने लगती है।

औलिया ए केराम का हर तौर वो चलन ज़िन्दा रखें।
ज़िन्दा रहना है तो हम उनका मिशन ज़िन्दा रखें।।

इस्लाम ज़िन्दाबाद–उर्से औलिया पाइन्दा बाद

यादगार काएम करना

यादगार क़ायम करने और अल्लाह वालों के मिशन को क़ायम रखने को खुद कुर्आन ने हमें बताया और खुदा के आखरी रसूल हज़रत मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह ने उसका सबक़ पढ़ाया। कुर्आन में एक दो जगह नहीं बल्कि दसयों जगह इस बात पर ज़ोर दिया गया है। ताकि लोगों को अय्यामुल्लाह, खुदाई दिन याद दिलाओं। ताकि लोगों में उनकी याद क़ायम रहे और लोग उनके फैज़ान से मुस्तफीज़ होकर खुद को उन्हीं के सांचे में ढालने की कोशिश करें।

कुर्आने अज़ीम की ये आयत भी लोगों को गौरो फिक्र की दावत दे रही है। जिनमें फरमाया गया –

ولقد ارسلنا موسیٰ بایٰتنا ان اخرج قومک من الظلمٰت الی النور
وذکرھم بایٰت اللّٰہ ان فی ذالک لاٰیٰت لکل صبار شکور

और बेशक हमने मुसा को अपनी निशानियां लेकर भेजा ताकि अपनी कौम को अंधेरे से उजाले में लाये और उन्हें अय्यामुल्लाह (खुदा के दिनों की) याद दिलाये। बेशक उन में (खुदाई दिनों में) निशानियां है हर सब्र और शुक्र करने वालों के लिये। (सूरए इब्राहीम आयात 5)

अय्यामुल्लाह क्या है ? ये वही वाक़िआत और खुदाई नेमतें हैं जिनकी याद से ईमान को तवानाई और रूहों को ताज़गी मिलती है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जब खुदा ने भेजा तो जहां निशानिया दीं, रिसालत अता फरमाया, कौम को अंधेरे से निकाल कर रौशनी में लाने का हुक्म दिया। वहीं ये भी फरमाया कि उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ।

कल हज़रत मूसा के ज़रिये खुदाई दिन याद दिलाए गए और आज ईदमिलादुन्नबी के ज़रिये, ग्यारहवीं और बारहवीं के ज़रिये, उर्स और मीलाद के ज़रिये वही काम किया जा रहा है। जब हज़रते मूसा के ज़रिये ये काम करवाया गया तो शिर्क न हुआ, बिदअत नहीं बना, हराम नहीं कहलाया, जब उस वक्त शिर्क, बिदअत, हराम नहीं फरमाया गया तो आज उर्स और मिलाद वगैरा के जरिये वही कामकरने पर हराम,बिदअत, और शिर्क कैसे हो गया।

कामूस में अय्यामुल्लाह को खुदाई नेमत बताया गया है। यानी अल्लाह हुक्म दे रहा है कि उन दिनों को याद दिलाओ जिसमें कौन अपनी नेमतें तुम्हें दी। सहाबिये रसूल हज़रत इब्ने अब्बास रदि अल्लाहो तआला अन्हो ने भी इस से खुदाई नेमते मुराद लिया है। हज़रत उबई इब्ने कअब रदिअल्लाहो तआला अन्हो मुजाहिद और कतादा जैसे मुफस्सेरीन ने भी यह फरमाया है। मक़ातिल का भी कहना है कि अय्यामुल्लाह से

मुराद वह बड़े बड़े वाक़िआत हैं जो खुदा के हुक्म से हुए। कुछ मुफस्सेरीन का कहना है कि उससे मुराद वो दिन है जिसमें अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनाम फरमाया। जैसे बनी इसराईल के लिए (1)' मन्ना व सल्वा का उतरना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दरियाए नील में रास्ते बनना और फिरऔन का डूबना और ज्यादा तफसील चाहिए तो देखिये तफसीरे खाज़िन, तफसीरे तदारीक, मुफदेरते रागिब वगैरा।

कौन मुसलमान है जो इससे इन्कार करे कि रसूले पाक से बढ़कर खुदा की कोई और नेमत हो सकती है। इसलिये अगर उस नेमत के मिलने के दिन को ईदमिलादुन्नबी की शक्ल में मनाया जाए तो वो कैसे शिर्क या बिदअत हो जाएगा।

कितने बदनसीब हैं वो लोग जो इस मुबारक दिन को कन्हैया के जन्म (2) से तशबीह देकर उसका मज़ाक उड़ाते हैं। न सिर्फ मज़ाक उड़ाते है बल्कि उसके करने वालों को

बिदअती मुशरिक़ और पता नहीं एक बदमस्त शराबी की तरह क्या–क्या कह जाते हैं। जबकि ये वो चीजें है जो 1400 सौ साल से बराबर होती चली आ रही है खुद अल्लाह के महबूब पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पीर के दिन रोज़ा रखो क्योंकि उस दिन मैं पैदा हुआ

.....

(1) मन्ना एक किस्म का हलवा और सलवा नमकीन गोश्त था जब यहूदियों को (तीह) के मैदान में रोका गया था उस वक्त रोज़ाना उन पर आसमान से यह नेमतें उतरती थीं।

(2) जैसा कि मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी ने बराहीने कातेआ में लिखा है।

मोहम्मद अली फारूकी

इस खबर से आज कौन न वाकिफ है कि नजदीयों के सबसे बड़ं मुफ्ती अब्दुल अज़ीज बीन बाज ने ये फत्वा दिया जश्ने विलादत मनाना यहूदीयों और ईसाइयों का तरीका है। आज कौन नहीं जानता कि यहूदी मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। मगर आज सऊदी अरब में यहूदीयों से कोई जंग नहीं। लेबनान में फिलिस्तिनियों को जिस बदर्दी के साथ काटा गया वो बीसवीं सदी का इन्तेहाई शर्मनाक वाकिया है। मगर सऊदीयों के काम में जूं तक नहीं रेंगी। इराक़ पर बम्बारी के लिए यहूदीयों को साथ लेकर अमरीका ने जो नंगा नाच नाचा और उसके फौजियों की खतीर दारी में सऊदीयों ने सुवर व शाराब और शबाब का दस्तर खान सजा कर उनके मेज़बानी पर उन्हों ने जिस तरह फख्र किया उसे सारी दुनिया जानती है। मगर मिलादुन्नबी से नफरत का यह आलम की कह दिया गया कि यहूदीयों और नसरानीयों पैरवी है। इन हालात को देख कर यह कहा जाए कि यहूदीयों और सऊदीयों में कोई फर्क नहीं तो गलत न होगा।

अगर यहूदी बौतुल मुक़द्दस का गुम्बद तोड़ना चाहते हैं तो सऊदी उन्हें खुश करने के लिए गुम्बदे खजरा गिराने के लिए बेचैन हैं। आगर वो फिलिस्तिनियों को खतम कर रहा है। तो ये सहाबए केराम के मजारात पर बुलडोजर चला रहे है। इस लिये उनके नाम अलग अलग है। मगर काम दोनों का एक ही है कि किसी तरह रसूले पाक की शान घटाई जाए और इस्लाम की निशानियों को चुन चुन कर मिटाया जाए।

दिन मुक़र्रर करना

मत पूछिये लोगों की फितना परवरीर। इस्लाम जिसने इन्सान को वक्त का पाबन्द बनाया। सैकड़ों कामों के लिए

दिन मुक़र्रर फरमाया। उसी के मानने वाले सवाल कर रहे हैं कि उर्स और मिलादो पातिहा के लिए वक्त वगैरह क्यूं मुकर्ररकिए जाते हैं।

लेहाज़ा इस सिलसिले में भी कुछ बातों पर आपको मुतवज्जह कर देना मुनासिब और बेहतर होगा। अबी मिशकात शरीफ की हदीस आपने पढ़ी कि रसूले पाक (सल्लल्लाहो तआल अलैहि वसल्लम) ने पीर के दिन रोज़ा रखने को फरमाया। अगर दिन मुक़र्रर करना बिदअत था तो आपने ऐसा हुक्म क्यूं दिया। कहीं ऐसा तो नहीं कि नशए तौहीद में ऐसे बदमस्त हो गये हैं कि सुन्नत भी बिदअत दिखने लगी इमामे बुखारी ने शफीक बिन सलमा से रेवायत की है कि सहाबिए रसूल इब्ने मसऊद रदिअल्लाहो तआला अन्हो हर जुमेरात को वाज़ फरमाया करते थे। बुखारी शरीफ में इमामे बुखारी ने इसे दो जगह तहरीर फरमाया है बाबूल इल्म में भी और किताबुद्दावात में भी। इसके अलावा मुस्लिम शरीफ में इमाम मुस्लिम ने बाबे तौबा में और तिर्मिजी शरीफ में बाबुल इस्तीजान में ये हदीस आज भी देखी जा सकती है।

वाकई दिन का मुकर्रर करना अगर बिदअत है तो सहाबिये रसूल ने सहाबए केराम के झुरमुट में ऐसा काम क्यों किया और फिर हजारों सहाबा में एक ने भी उन्हें नहीं रोका।

हकीकत ये है कि उन्हें मालूम था कि न तो ये बिदअत है और न ही शिर्क मगर क्या कहा जाये आज के चिल्ला छाप मुल्ला को। जिस तरह आंखके मरीजों को हमेशा हरा ही हरा दिखाई देता है उसी तरह उन्हें भी दो चार चिल्ला करने के बाद हर जगह बिअत ही बिअत दिखाई देता है। जबकि यह चिल्ला खुद बिदअत है। मगर चिल्ला कर बिदअत कहना और है और कुर्आन वो हदीस से साबित करना और है।

फूल चढ़ाना— ये भी वक्त का उठाया हुआ एक फितना है।

जहां मज़ारते कुक़द्दसा पर फूल चढ़ाया गया वहीं फतवा बरसने लगा और फिर वहीं शिर्क और बिअत की आवाज़ उठने लगी। गोया शिर्क और बिअत नहीं हुआ। सब्जीमंडी हो गई।

जहां हर चीज टके सेर। टके सेर शिर्क और टके सेर बिअत। जिसे जितना चाहिये टोकरों से भर लाए और गरीब मुसलमानों के सर पर लाद दें। आईये इन सबसे हटकर देखें की उसकी हक़ीक़त क्या है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदिअल्लाहो तआला अन्हो फरमात हैं कि एक बार रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम दो कब्रों के पास से गुजरे तो इर्शाद फरमाया कि यक़ीनन ये दोनों अज़ाब में मुबतेला हैं और किसी ऐसे गुनाह में उन्हें अज़ाब नहीं दिया जा रहा है जिनसे बचना बहुत ज्यादा दूश्वार हो। उनमें एक तो पेशाब के छीटों से बचता नहीं था दूसरा चुगल खोरी करता था। फिर आपने खजूर की एक टहनी ली और उसको चीर कर दो टुकड़े किये फिर हर क़ब्र में एक एक टुकड़ा गाड़ दिया। साहबए केराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आपने ऐसा क्यूं किया? आपने फरमाया जब तक ये टहनी सूखेगी नहीं उस वक्त तक उनके अज़ाब में कमी रहेगी। हदीसे पाक के अल्फाज़ यह है।

ثم اخذ جريدة رطبة فشقها نصفين ثم غرز فى كل قبر واحدة قالو يا رسول الله لما صنعت هذا فقال لعله ان يخفف عنهما مالم ييبسا

(مشکوٰۃ باب اداب الخلاء فصل اول)

गुलशन में खिले हुए फूलों से उड़ती हुई खुश्बुओ की तरह इस हदीस पाक से आज भी मोमिन का कल्ब झूम रहा है कि गीली और हरी टहनीयों की तसबीह में भी कितनी बरकत होती

है कि न सिर्फ साहबे क़ब्र की रूह झूम उठती बल्कि उसके अज़ाबे क़ब्र में कमी भी होती है। जिससे साफ मालूम होता है कि क़ब्रों में हरी पत्तियों और ताज़ा फूलों का डालना सुन्नते रसूल है। जो सुन्नत हो वो बिदअत क्यूं कर हो सकती है।

यहि तो वो हदीस थी जिसकी रौशनी में हसाबिये रसूल हज़रत बोरीदा असलमा रदिअल्लाहो तआला उन्हो ने ये वसीयत फरमाई कि मेरी क़ब्र में दो वैसी टहनियां डाल दी जाए। (1)

अल्लाह के रसूल ने जो काम किया और सहाबये रसूल ने जिस पर अमल किया आज वो कैसे बिदअत हो गया? हरी टहनी से अज़ाब की कमी की वजह यह बतायी जाती है कि जब तक ये हरी रहती है खुदा कि तसबीह पढ़ती है जिसकी वजह से अज़ाबे क़ब्र में कमी होती रहती है। इसलिये उसे क़ब्रों पर डाला जाता है ताकि मुर्दो के अज़ाब में कमी हो। उसकी तसबीह से मुर्दो को राहत मिलती है, उन्हे सुकून हासिल होता है। दूसरी तरफ जिन पर अजाब न हो उन्हें भी सुकून तो मिलाता ही है।

अब वो कौन बदनसीब होगा जो अपने बुजुर्गो को सुकून और राहत पहुंचाना न चाहता हो और कौन नाकारा औलाद होगी जो अपने मां बाप की क़ब्र को फूलों की तस्बीह से न महकाए।

---

(1)देखो मिश्कात बाबुल आदाबिल खोला सफा341 और बुखारीशरीफ जिल्द अव्वल बाबूलजरीदे अलल क़ब्र

चादर चढ़ाना

फूल के साथ चादर भी चढ़ाई जाती है जिसका मकसद सिर्फ ये है कि आने वाले की निगाह में साहेबे मजार का एहतराम कायम हो जाए। आज सुन्नियों के घरों ही में नहीं बल्कि उनके यहा भी कुर्आन में जूज़दान चढ़ा दिखाई देगा जो चादर पर फतवा लगाते हैं। क्या रसूले पाक ने कही फरमाया है कि कुर्आन को जूज़दान में लपेट कर रखो यहा कुर्आन में कहीं हुक्म है और नही हदीस का फरमान। ये सिर्फ इसलिए चढ़ाया जाता है ताकि कुर्आन की शान दुसरी किताबों पर क़ायम रहे। लोगों के दिलों में एहतराम काएम रहे। बस कुर्आन पर जूज़दान चढ़ाने के लिए जिस बात ने मजबूर किया उसी बात ने मजाराते मुकद्देसा पर भी चादर चढ़ाने का जज़बा पैदा किया। न वो हराम है और न ये हरा, बल्कि कहने वालों की ज़बान ही बेलगाम है। जो ये समझे बगैर कि हम क्या कह रहे हैं जो दिल में आया कहते चाले गये। चाहे नशेमन से धुआं उठे या गुलशन में खुन बहे।

औरतों की कव्वाली,मर्दो की मजबूरी

जहां औरों ने मज़ारात के तक़द्दुस को पामाल किया और अक़ीदतों को ठेस पहुचाया वहीं अपनों से भी कुछ ऐसे काम हो गये जिसने गैरों को कहने का मौक़ा दिया। उन्होंने पूरा फायदा उठाते हुए तिल का ताड़ और राई का पर्वत बनाकर औलियाए केराम के पूरे मिशन ही को बर्बाद करना शुरू कर दिया।

इस सिलसिने में औरतों की कव्वाली ने दुश्मनों का हर तरह का मौक़ा दिया कि वो उसकी आड़ में पूरी सुन्नियत को बदनाम करें। इस सिलसिले में औरतों की हाज़री ने और

क़यामत ढ़ाया। यहां तक कि कुछ लोग चाहे औरत हो या मर्द, वो उर्स में सिर्फ कव्वाली ही के नाम पर दौड़ने लगते हैं। कहीं कहीं तो यह भी खबर मिली कि दुश्मनों ने रक़म दे दे कर औरतों को भेजा ताकि उर्स को ज़्यादा से ज़्यादा बदनाम किया जा सके। जबकि यह सब सख्त गुनाह के साथ साहबे मज़ार की नाराज़गी का भी बहुत बड़ा सबब है। यही वजह है कि पहले उनसे जितना फैज़ मिला करता था अब दिन ब दिन कम होता जा रहा है। औरतों की वजह से देखने वालों की जो बहार आती है उनके बारे में आला हज़रत फाज़िले बरेलवी इर्शाद फारमाते हैं:–

जो औरतें कव्वाली रेडियो की और कव्वाली मर्दो की सुनने जाती हैं उनको जियारतुल कुबूर को जाना हराम है। (जम्लुन्नूर सफा 12)

एक जगह ऐसी क़व्वाली के बारे में जिसमें उल्टे सीधे खुराफात और औरतें वगैरा की शिर्क़त हों तहरीर फरमाते हैं। ऐसे क़व्वली हराम है। हाज़ेरीन सब गुनाहगार हैं। उन सबका गुनाह ऐसा ही है जैसा उर्स करने वालों और क़व्वालों पर है। और क़व्वलों का भी गुनाह उस उर्स करने वाले पर। बगैर इसके कि उर्स करने वाले के माथे क़व्वालों का गुनाह जाने से क़व्वालों पर से गुनाह की कुछ कमी आए या उसके और क़व्वालों के जिम्मे हाज़ेरीन का बवाल पड़ने से हाज़ेरीन के गुनाह में कुछ तखफीफ हो। नहीं। बल्कि हाज़ेरीन में हर एक पर अपना पूरा गुनाह और कव्वालों पर अपना गुनाह अलग, और सब हाजेरीन के बराबर जुदा। और ऐसा उर्स करने वाले पर अपना गुनाह अलग। और कव्वालों के बराबर जुदा। और सब हाजरीन बराबर अलाहिदा (एहकामे शरीयत पेज–61)

ये आला हज़रत का फतवा है जिन्हें खुदा ने मुजद्विद आजम बनाया। जो खुद भी सारी जिन्दगी इस्लाम की भी

खिदमत करते रहे और औलिया ए केराम का परचम भी बुलन्द करते रहे अब उसकी रौशनी में हमें अपने कामो का जायजा लेकर सोचना चाहिये कि आज कव्वाली में औरतों को बुला कर हम कितना गूनाह अपने सिर ले रहे हैं।

जो उलमाए केराम और बुजुर्गाने दीन महफिले शमा के काएल हैं वो भी औरतों के कव्वाली को शख्त हराम करार देते हैं दूर न जाईये चन्द साल पीछे पलट कर हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का दौर याद कीजिये जब 1962 ई. में मोती बाग रायपुर मध्य प्रदेश में आराम फरमाने वाले बुजुर्ग के आशताने पर पहली बार औरत कव्वाली के लिये आई तो दुनियां ने देखा कि आप ही की वो जात थी जिसने चैलेंच के साथ ऐलान किया कि औरत वहां कव्वाली गा नहीं सकती फिर दुनियां ने देखा कि सैकड़ों लोग मुखालिफत पर कमर बांध कर खड़े होगये अपनों ने साथ छोड़ दिया मगर उनके रब ने उन्हें न छोड़ा ऐसा साथ दिया कि मुसला धार बारिश के साथ तूफान उठा और सारा प्रोग्राम अपना साथ बहा ले गया दुनिया के वहम और गुमान में जो बात न थी वो हो गई।

बात क्या है कि वो अकेले थे मगर सब पर गालिब थे बात सिर्फ इतनी सी है कि उन्होंने सब कुछ अल्लाह और उसके रसूल के लिये किया था इसलिए खुदा ने उन्हें कामयाब फरमाया। मनकाना लिल्लाहि कानल्लाहो लहु

जो खुदा का हो जाता है खुदा उसका हो जाता है

من کان اللہ لہ

ये उर्स औलिया जो खुदा जुई का बाईस है

न होते नक्शे पा तो काफिले जाने कहां जाते

खत्म ख्वाजगान

अतिया– हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रमा

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

नोटः– पहले तीन बार दरूद शरीफ,एक बार सुरए फातिहा,तीन बार कुलहुअल्लाह फिर तीन बार दुरूद शरीफ पढ़ कर तमाम बुजुर्गाने दीन खासकर सुल्तानुल हन्दि हज़रत ग़रीब नवाज़ और शहं शाहे बगदाद सरकारे ग़ौस पाक रदिअल्लाहो तआला अन्हुमा की अरवाहे तय्ये बात को नज़र करें –

1. दरूद शरीफ 11 बार 2. सूरए फातेह 7 बार
3. दरूद शरीफ 100 बार4. सूरए अलम नश्रह 69 बार
5. सूरए एख्लास 100 बार 6. सूरए फतिहा 7 बार
7. सूरए अलम नश्रह 60 बार 8. दरूद शरीफ 100 बार
9. अल्लाहुम्मा या मुफत्ते हल अबवाब 100 बार
10.अल्लाहुम्मा या कादीयल हाजात 100 बार
11. अल्लाहुम्मा या राफेअद्वरजात 100 बार
12. अल्लाहुम्मा या मुजीबद् दअवात 100 बार
13. अल्लाहुम्मा या हल्लल मुश्किलात 100 बार
14. अल्लाहुम्मा या काफीयल मुहिम्मात 100 बार
15. अल्लाहुम्मा या शाफीयल अमराद 100 बार
16. अल्लाहुम्मा या दाफे अल बलिय्यात 100 बार
17. अल्लाहुम्मा या मुसब्बे बल असबाब 100 बार
18. अल्लाहुम्मा या मुकल्ले बल कुलूबे बल अबसार 100 बार
19. अल्लाहुम्मा या दलीलल मुतह हेरीन 100 बार
20. अल्लाहुम्मा या गियासल मुस्तगेसीन 100 बार
21. अल्लाहुम्मा या मुफर्रे हल महजू नीन 100 बार

22. अल्लाहुम्मा या खैरन्नासेरीन 100 बार
23. लाहौला वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम ला मलजा वला मनजा मिनहुम इल्ला इलैह 100 बार
24. अल्लाहुम्मा आमीन बे रहमते का या अरहमर्रा हिमीन
25. दरूद शरीफ 100 बार

दरूद शरीफ पढ़ कर दुआ मांगे और जुमला पीराने उज्जाम बुजुर्गाने दीन खुसूसन मोहसिने मिल्लत हज़रत मौलाना शाह हामिद अली फारूकी और फख्रूल औलिया हज़रत मौलाना फारूक अली साहब फारूक अलैहिर्रहमा की अरवाहे तय्ये बात को इसका सवाब नज़्र करें और उनके वसीले से खुदा की बारगाह में दुआ करें।

दरबार के खास वज़ाएफ

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा हमेशा मज़ारात पर हाज़री देकर पहले मुराकेब्रा करते साहेबे मज़ार से गुफतगू करते और फिर लोगों को वजाएफ वगैरा बताते। यहां पर उनके बताए हुए कुछ वजाएफ दिये जा रहे हैं। ताकि पढ़ने वाले साहेबे मज़ार से ज़्यादा से ज़्यादा फाएदा उठा सके।

वजीफा से पहले एक बार दरूद शरीफ एक बार सूरए फातिहा और 3 बार सूरए एख्लास फिर एक बार दरूद शरीफ पढ़ कर हज़रत मोहसिने मिल्लत मौलाना शाह हामिद अली फारूकी अलैहिर्रहमा की बारगाह में नज़्र करे और फिर वजीफा पढ़ कर उनके वसीले से साहेबे मज़ार से इल्तिज़ा करे फिर उनके वसीले से खुदा की बारगाह में फरियाद करे। खुदा की ज़ात से पूरी उम्मीद है कि वोह पढ़ने वाले की दुआ कुबूल फरमाएगा और उसकी मुराद पूरी होगी।

(1) कार वो बार में बर्कत के लिये –

आस्ताना के पास जहां जगह मिले दो रिकअत नमाज़े नफिल पढ़े बाद नमाज़ 11,11 बार अव्वल आखिर दरूद शरीफ पढ़ कर

101 बार यह दुआ पढ़े

اَللّٰھُمَ اکْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक फेनी बे हलालेका अन हरामेका व अगनेनी बे फदलेका अम मन सिवा का बाद वजीफा साहेबे मज़ार के वसीले से दुआ करें।

(2) मकद्दमे में कामयाबी के लिये–

101, बार दरूद शरीफ पढ़े फिर 41 बार सूरए नसर (इज़ा जआ नस रूल्लाह) (तीसवां पारा) पढ़े फिर 101 बार दरूद शरीफ पढ़ कर साहेबे मज़ार को बख्श दें और दुआ करें।

(3) कर्ज़ की अदाएगी के लिये– 41 बार दरूद शरीफ पढ़ कर 11 बार सूरए मुजम्मिल (उन्तीसवां पारा) पढ़े फिर 41 बार दरूद शरीफ पढ़ कर साहेबे मज़ार को बख्श दे और मकसद अर्ज करें।

(4) बीमारी से नजात :– 11 बार दरूदे ताज़ पढ कर सूरए कौर (इन्ना आतै ना कल कौसर) 101 बार पढे और साहेबे मज़ार की बार गाह में पेश करके दुआ करें फिर उसे पानी में दम करके रख ले। एक हफ्ता तक सुबह शाम पिये। इन्शाअल्लाह शेफा मिलेगी

(5) औलाद के लिये :– अव्वल आखिर 11,11 बार दरूद शरीफ पढ़ कर 141 बार यह दुआ पढ़ें और पानी में दम करके रख लें। एक हफ्ता तक सुबह शाम पीए मकसद में कामयाबी मिलेगी।

रब्बे ला त ज़रनी फर दव व अन ता खैरूल वारे सीन

رَبِّ لَا تَذَرْنِی فَرْدًا وَ اَنْتَ خَیْرُ الْوَارِثِیْنَ

मनक़बते हुज़ूर मोहसिने मिल्लत

एक चिरागे रहबरी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।

मौलाना एजाज़ कामठी

1. एक चिरागे रहबरी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।
   रौशनी ही रौशनी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
2. नाम है हामिद अली, हां नाम है हामिद अली।
   हामिदे आले नबी हैं मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
3. निस्बते ख्वाज़ा की सूरत साफ आती है नज़र।
   गोया आईना बनी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
4. निस्बते ग़ौसुल वरा और निस्बते ख्वाज़ा पिया।
   आज भी दम भर रही है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
5. वारसी फारूकी इरफानी द वसीले की दकसम।
   दामने हुब्बे अली है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
6. ज़ख्म खुदा कौमों मिल्लत को ये देते हैं करार।
   गोया मरहम बन चुकी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
7. रिज़्वी मैखाने की एजाज कैफियत है गवाह।
   मस्त जामे बेखुदी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।

इस किताब की तरतीब में जो किताबे जेरे मुतालेआ रहीं।

बुखारी शरीफ (मोहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहिम बिन मुगीरा जअफी बुखारी (194 ही ता 256 ही.)

मुस्लिम शरीफ– मोहम्मद बिन इस्माईल नीशा पूरी (204 ही.ता 261 ही.)

मिश्कात शरीफ– मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह खतीब अल तबरेजी 741 ही.

तफसीर खजाएनुल इर्फान – सदरूल अफाज़िल मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी

तफसीर इब्ने कसीर – इमादुद्दीन इस्माईल बिन उमर बिन कसीर 701 ही 774 ही.

जियाउल कुर्आन – जस्टिस पीर करम शाह अज़हरी

फतावए रज़विया – मुजद्दीदे आज़म सय्यदना इमाम अहमद रज़ा खां फाजिले बरेलवी (1756 ई.ता 1921 ई)

हिन्दुस्तान में अर्बी हुकूमत फतहुल बुल्दान

तारीख इब्ने खुलदून तोहफतुल मुजाहेदीन

मुस्लमान और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान में इशाअते इस्लाम

इन्डियन हेरी टीच – प्रोफेसर हिमायू कबीर

मुस्लमान और हिन्दुस्तान– बदरूल कादरी हालैण्ड

Develop ment of islamic institution in chhattisgarh डॉ. सबीहा यासमीन खां

Memorios of jahangir by Rodjers and Bererdge

BHOSALE RAGUJI II OF NAGPUR नागपुर भोस्थाचा इतिहास

NAGPUR DIST. GAZETEAR

तारीखे हिन्द – मौलवी जकाउल्लाह

THE “ 100 ” Newyork 1978 - Dr. Micheal. H. Hart

QUOTED IN THE WINDICATION OF THE PROPHET OFISLAM गांधी जी

COLONIZATION IDEAL MR.HUMPHREY.

MEMORIES THE ENGLISH SPY IN ISLAMICE COUNTRIES

मोहसिने मिल्लत एकेडमी की हिन्दी तारीख साज़ किताबे

1. ज़लज़ला – अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
   – हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
2. पंज सूरए रज़विया– मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
3. तबलीगी जमात – अज –अल्लामा अर्शदुल कादरी
   हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
4. आशिके रसूल (इमाम अहमद रज़ा) – अज़ प्रोफेसर मसऊद अहमद सा. (पाकिस्तान)
   हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
5. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश –मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
6. ताजदारे छत्तीसगढ़ – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
7. कुत्बे राजगांगपुर – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
8. ताजुल औलिया – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
9. रायपुर की बहार – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी (बंजारी वाले बाबा)
10. तज़किरए बुर्हाने मिल्लत – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
11. इस्लाम और मोआशिरा – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
12. तबलीगी जमात और इस्लाम – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
13. बाबरी मस्जिद (तारीख के आईने में) – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
14. बारह महीने की मुकद्दस दुआएं – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी
    अ
15. हज की दुआएं – मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी